THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

वर्ष-28 अंक : 138 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) **श्रावण कृ.4 2080 शनिवार, 5 अगस्त 2023**

प्रधान संपादक - **डॉ. गिरीश कुमार संघी** हैदराबाद नगर **पृष्ठ : 16** **मूल्य : 8 रुपये**

राहुल की सजा पर 133 दिन बाद रोक

नई दिल्ली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। राहुल गांधी की सांसदी जाने के 133 दिन बाद सुप्रीम कोर्ट ने उस फैसले को ही पलट दिया, जिसकी वजह से उनकी सांसदी गई थी। सुप्रीम कोर्ट ने मोदी सरनेम से जुड़े मानहानि केस में राहुल गांधी की 2 साल जेल की सजा पर शुक्रवार को रोक लगा दी। इसके साथ ही कोर्ट ने निचली अदालतों के फैसले पर तीन सबसे जरूरी बातें कहीं...

❊ हम जानना चाहते हैं कि जज ने अधिकतम सजा क्यों दी। ट्रायल जज को फैसले में बताना चाहिए था कि उन्होंने अधिकतम सजा क्यों दी। अगर जज ने 1 साल 11 महीने की सजा दी होती तो राहुल गांधी को डिसक्वालिफाई नहीं किया जाता।

❊ अधिकतम सजा के चलते एक लोकसभा सीट बिना सांसद के रह जाएगी। यह सिर्फ एक व्यक्ति के अधिकार का ही मामला नहीं है, ये उस सीट के वोटर्स के अधिकार से भी जुड़ा मसला है।

❊ इस बात में कोई शक नहीं कि भाषण में जो भी कहा गया, वह अच्छा नहीं था। नेताओं को जनता के बीच बोलते वक्त सावधानी बरतनी चाहिए। यह राहुल गांधी का कर्तव्य बनता है कि इसका ध्यान रखें। >14

ज्ञानवापी सर्वे पर रोक नहीं

वाराणसी, 4 अगस्त (एजेंसियां)। ज्ञानवापी का भारतीय पुरातत्व विभाग (एएसआई) की ओर से सर्वे आगे होता रहेगा। मुस्लिम पक्ष की याचिका पर शुक्रवार को सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा, हम हाईकोर्ट के आदेश में दखल क्यों दें? साथ ही मुस्लिम पक्ष से पूछा कि एएसआई सर्वे पर ऐतराज क्यों है? सर्वे से मुस्लिम पक्ष को कोई नुकसान नहीं होने जा रहा है।

कोर्ट ने कहा कि सर्वे गैर आक्रामक तरीकों से होना चाहिए। एएसआई ने स्पष्ट किया है कि पूरा सर्वेक्षण बिना किसी खुदाई और संरचना को बिना कोई नुकसान पहुंचाए पूरा किया जाएगा। सुप्रीम कोर्ट ने सुझाव दिया है कि सर्वे होने दीजिए। रिपोर्ट को बंद लिफाफे में जमा होने दीजिए।

हिंदू पक्ष के वकील विष्णु शंकर जैन ने कहा कि सीजेआई ने आदेश दिया कि सर्वे चलता रहेगा। बिल्डिंग को कोई नुकसान नहीं होगा। सीजेआई ने कहा कि ऐसे सर्वे से किसी की पूर्व धारणा के पक्ष में या फिर मुस्लिम पक्ष के खिलाफ जाएगा, ऐसा विचार नहीं करना चाहिए। ये गलत है। क्योंकि एएसआई ये भी रिपोर्ट दे सकता है कि ये औरंगजेब के समय या उससे पहले बना भवन है। >14

सिख-विरोधी दंगा मामले में कांग्रेस नेता को अग्रिम जमानत मिली

नई दिल्ली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने शुक्रवार को सिख विरोधी दंगों के आरोपी कांग्रेस नेता जगदीश टाइटलर को सशर्त अग्रिम जमानत दे दी। स्पेशल जज विकास ढुले ने कहा कि जगदीश कोर्ट की इजाजत के बिना देश से बाहर नहीं जा सकेंगे। साथ ही वे मामले से जुड़े सबूतों के साथ छेड़छाड़ नहीं करेंगे।

सीबीआई ने कोर्ट में जगदीश को जमानत देने का विरोध किया। एजेंसी की ओर से कोर्ट में पेश हुए वकील एचएस फुल्का ने कहा कि गवाह बहुत हिम्मत दिखाकर आगे आए हैं। अगर आरोपी को जमानत मिली तो गवाहों को प्रभावित करने की संभावनाओं से इनकार नहीं किया जा सकता है। फुल्का ने कहा कि गवाहों के बयानों के मुताबिक, मामले में जगदीश की भूमिका सामने आई है। टाइटलर ने वकीलों को लाइव टीवी पर धमकियां दी हैं। उन्होंने सिर्फ गवाहों को ही नहीं बल्कि मामले से जुड़े वकीलों को भी धमकियां दी हैं। उन्हें जमानत कतई नहीं दी जानी चाहिए।

चंद्रयान आज चंद्रमा की कक्षा में किया जाएगा स्थापित

बेंगलुरू, 4 अगस्त (एजेंसियां)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने शुक्रवार को कहा कि चंद्रयान-3 ने 14 जुलाई को प्रक्षेपण के बाद से चंद्रमा की करीब दो-तिहाई दूरी तय कर ली है। पिछले तीन हफ्तों में इसरो का यह अंतरिक्ष यान को पृथ्वी से और दूरी की कक्षाओं में जा रहा है। अंतरिक्ष एजेंसी ने कहा कि एक अगस्त को एक अहम प्रक्रिया के तहत यान को पृथ्वी की कक्षा से चंद्रमा की ओर सफलतापूर्वक भेजा गया। एजेंसी ने बेंगलुरू स्थित मुख्यालय ने शुक्रवार को बताया कि ट्रांस-लूनर इंजेक्शन के बाद चंद्रयान-3 पृथ्वी की परिक्रम से बच गया और एक ऐसे रास्ते पर आगे बढ़ने लगा जो इसे चंद्रमा के आसपास के क्षेत्र में ले जाएगा। कल एक और महत्वपूर्ण प्रक्रिया में अंतरिक्ष यान को चंद्रमा की कक्षा में स्थापित किया जाएगा। इसरो ने कहा कि लूनर ऑर्बिट इंजेक्शन (एलओआई) पांच अगस्त को शाम करीब सात बजे के लिए तैयार है। यह प्रक्रिया तब पूरी की जाएगी जब चंद्रयान-3 चंद्रमा के सबसे नजदीक स्थित होगा।

मल्टी-सेंस ड्राइव मोड्स

मल्टी स्किन 17.78 cm रिकॉंफ़िगरेबल TFT क्लस्टर

20.32 cm डिस्प्ले लिंक फ़्लोटिंग टचस्क्रीन, वायरलेस स्मार्टफ़ोन रिप्लिकेशन के साथ

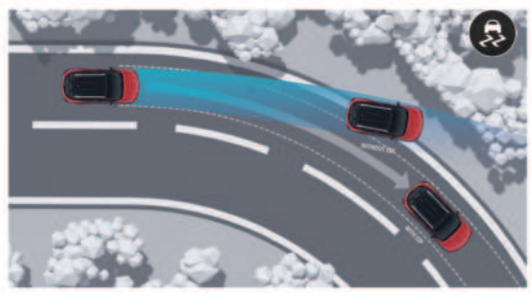
इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी प्रोग्राम (ESP)

for a test drive, call on 1800 315 4444. select variants available in CSD. special offers for defence personnel, government, PSU and corporate employees. for bulk enquiries, contact corpsales@renault.com for further details, connect on renault.co.in

*terms and conditions apply. *advantages up to ₹65 000/- for Kiger includes cash benefits up to ₹25 000/- on select variants, exchange benefits up to ₹20 000/- on select variants & loyalty cash benefits up to ₹20 000/- on select versions. corporate/PSU/defense personnel/government employee/professionals benefits applicable on Kiger model is basis eligibility of the customer and based on submission of required proof by the customer. finance at the sole discretion of Renault Finance. price valid on the date of purchase. for detailed offers, visit www.renault.co.in/offers. Renault India Pvt. Ltd. reserves the right at its absolute discretion to terminate this scheme or vary, delete or add to any of these terms and conditions from time to time without notice including without limitation. offers may vary across variants and cities. model/accessories shown may not be a part of the standard fitment. the color in the image may vary slightly from the actual color of the product. the above mentioned offers & benefits are valid till 31st August 2023 and are through Renault dealership. Renault India Pvt. Ltd. shall not be liable for any loss or damage arising from your failure to comply or understand the offer details. in the event of any dispute, all matters shall be governed by all applicable laws of India and court at Gurugram shall have the exclusive jurisdiction. for detailed terms and conditions, please visit www.renault.co.in

SHOWROOMS: TELANGANA: HYDERABAD: RENAULT Attapur Mob: +91 9311340914, RENAULT AS Rao Nagar Mob: +91 9289208861, RENAULT Banjara Hills Mob: +91 7428892716, RENAULT Begumpet Mob: +91 9311733972, RENAULT Gachibowli Mob: +91 9289220863, RENAULT Himayatnagar Mob: +91 8527234238, RENAULT Hitech City Mob: +91 9311733970, RENAULT Kompally Mob: +91 9667945858, RENAULT Kukatpally Mob: +91 7067322620, RENAULT LB Nagar Mob: +91 9311700671. **ADILABAD:** RENAULT Adilabad Mob: +91 9311733981. **KAMAREDDY:** RENAULT Kamareddy Mob: +91 9311399673. **KARIMNAGAR:** RENAULT Karimnagar Mob: +91 9582305983. **KHAMMAM:** RENAULT Khammam Mob: +91 8527234093. **KOTHAGUDEM:** RENAULT Kothagudem Mob: +91 7428439271. **MAHABUBABAD:** RENAULT Mahabubabad Mob: +91 9311341235. **MAHBUBNAGAR:** RENAULT Mahbubnagar Mob: +91 7799766431. **MANCHERIAL:** RENAULT Mancherial Mob: +91 9582571953. **METPALLY:** RENAULT Metpally Mob: +91 9289125188. **MIRYALGUDA:** RENAULT Miryalguda Mob: +91 7428439406. **NALGONDA:** RENAULT Nalgonda Mob: +91 7428439437. **NIZAMABAD:** RENAULT Nizamabad Mob: +91 9311700672. **SATHUPALLY:** RENAULT Sathupally Mob: +91 8130499615. **SHADNAGAR:** RENAULT Shadnagar Mob: +91 9311700675. **SIDDIPET:** RENAULT Siddipet Mob: +91 8527235114. **SURYAPET:** RENAULT Suryapet Mob: +91 8130311149. **VIKARABAD:** RENAULT Vikarabad Mob: +91 9311733961. **WARANGAL:** RENAULT Warangal Mob: +91 9311700673. **ZAHIRABAD:** RENAULT Zahirabad Mob: +91 9311733977.

भारी बारिश से गौरीकुंड में हुआ भूस्खलन, 13 लोगों के लापता होने की सूचना

रुद्रप्रयाग, 4 अगस्त (एजेंसियां)। उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिला स्थित गौरीकुंड में भारी भूस्खलन से 13 लोगों की लापता होने की सूचना है। इनमें तीन स्थानीय, सात नेपाल मूल के और तीन अन्य राज्य के हैं। मौके पर रेस्क्यू के लिए टीम पहुंची है। देर रात से जारी भारी बारिश आफत बनकर बरसी है। बारिश के कारण चट्टान टूटने की सूचना देर रात मिली थी, जिसके बाद एसडीआरएफ सहित जिला प्रशासन की टीम मौके पर रेस्क्यू के लिए पहुंची थी, लेकिन रात को रेस्क्यू करने में आ रही दिक्कतों के कारण अभियान को रोकना पड़ा। इसके बाद सुबह फिर रेस्क्यू शुरू किया गया, लेकिन लगातार बारिश चुनौती बनी हुई है।

पहले 8 से 10 लोगों के आने के लापता होने की सूचना आ रही थी, अब यह संख्या बढ़ गई है। उत्तराखंड में पहाड़ से लेकर मैदान तक भारी बारिश का सिलसिला जारी है। मौसम विभाग ने देहरादून, हरिद्वार, पौड़ी, नैनीताल, चंपावत, ऊधमसिंह नगर, चमोली और बागेश्वर जिले के लिए भारी बारिश का यलो अलर्ट जारी किया है।

किसने डकारे 1.86 लाख करोड़ ? मनमोहन सिंह पर लगे थे

'कोयला घोटाले' के दाग, 8 साल बाद अब 'सुप्रीम' सुनवाई

नई दिल्ली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। 2014 के लोकसभा चुनाव के दौरान देशभर में कांग्रेस सरकार के दौरान हुए कोयला घोटाले की गूंज सुनाई देती थी, इसके काले दाग पीएम मनमोहन सिंह पर भी लगे थे। जिसके बाद मनमोहन सिंह द्वारा आठ वर्ष पूर्व यानी कि 2015 में इसी मामले में एक याचिका दाखिल की गई थी। लगभग आठ वर्षों के लंबे इंतजार के बाद अब उनकी याचिका पर सुनवाई होने वाली है।

आज शुक्रवार (4 अगस्त) को इस मामले को सूचीबद्ध किया गया है। दरअसल, पूर्व पीएम मनमोहन सिंह ने ट्रायल कोर्ट के मार्च 2015 के आदेश को चुनौती दी गई थी, जिसमें कोयला ब्लॉक के कथित अनियमित आवंटन के मामले में उन्हें भी आरोपी के तौर पर समन किया गया था। हालाँकि, सुप्रीम कोर्ट ने फ़ौरन ही, 1 अप्रैल, 2015 को ट्रायल कोर्ट के समन आर्डर पर रोक लगा दी थी। 8 साल तक यह मामला ठंडे बस्ते में पड़ा रहा और अब जाकर इस पर सुनवाई होने वाली है। देश के प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) डी वाई चंद्रचूड़, जस्टिस जे बी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की पीठ इस मामले पर सुनावई करेगी। इस दौरान, पूर्व केंद्रीय कोयला सचिव पीएस पारख द्वारा दाखिल याचिका पर भी सुनवाई की जाएगी। दरअसल, सीबीआई ने कोयला ब्लॉक आवंटन मामले में एक क्लोजर रिपोर्ट दाखिल की थी, मगर दिल्ली की एक ट्रायल कोर्ट ने उस वक़्त कहा था कि उस समय कोयला मंत्रालय का प्रभार संभालने वाले मनमोहन सिंह , उद्योगपति कुमार मंगलम बिड़ला और अन्य को आरोपी के रूप में समन करने के लिए प्रथम दृष्टया सबूत मौजूद हैं। लेकिन, जस्टिस वी गोपाल गौड़ा के नेतृत्व वाली सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने 1 अप्रैल, 2015 को समन आदेश पर रोक लगा दी थी और कांग्रेस नेता मनमोहन सिंह की याचिका स्वीकार कर ली गई थी। वहीं, जस्टिस मदन लोकुर के नेतृत्व वाली एक अन्य बेंच ने 7 सितंबर, 2015 को पूर्व कोयला राज्य मंत्री संतोष बागरोडिया को तलब करने पर रोक लगाने से इनकार कर दिया था। अदालत ने कहा था कि उनकी याचिका पर कांग्रेस नेता मनमोहन सिंह की याचिका के साथ 21 सितंबर, 2015 को सुनवाई की जाएगी।

क्या है 2004-2009 का कोयला घोटाला

बता दें कि, यह पूरा मामला 2004-2009 के दौरान कोयला खदानों के आवंटन से जुड़ा हुआ है, जिसमे 1.86 लाख करोड़ के महाघोटाले का दावा किया गया था, इसे सभी घोटालों की माँ भी कहा गया था। इस मामले की जांच करने के बाद भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) ने कोल ब्लॉक्स के आवंटन पर अपनी रिपोर्ट संसद में जमा की थी। ध्यान रहे कि, घोटाले से देश को हुए नुकसान का अनुमान 10.6 लाख करोड़ रुपये लगाया गया था, मगर संसद में पेश की गई सीएजी की अंतिम रिपोर्ट में यह आंकड़ा 1.86 लाख करोड़ रुपये बताया गया था। इस रिपोर्ट में सीएजी ने कोयला खदानों में हुए बंदरबांट का खुलासा किया गया था।

मनमोहन सिंह की याचिका पर तेजी से हो रही सुनवाई से चिंतित होकर वरिष्ठ अधिवक्ता और तत्कालीन कांग्रेस नेता कपिल सिब्बल ने तत्कालीन सीजेआई एचएल दत्तू से फ़ौरन स्पष्टीकरण मांगने का आग्रह किया था। उन्होंने अपनी दलील में कहा था कि मनमोहन सिंह की याचिका को कोयला घोटाला मामले के तौर पर वर्गीकृत नहीं किया जाना चाहिए। क्योंकि मनहमोन सिंह ने भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 13(1)(डी)(आईआईआई) की संवैधानिक वैधता की चुनौती पर मुख्य जोर दिया था। कपिल सिब्बल की दलील से सहमत होते हुए सीजेआई दत्तू की बेंच ने जल्द सुनवाई के लिए चुने गए मामलों से मनमोहन सिंह की याचिका को हटाने का आदेश दिया था। अदालत ने कहा था कि मनमोहन सिंह की याचिका उसी समय सुनवाई के लिए सूचीबद्ध की जाएगी,

जब उनके वकील दलीलें पूरी होने पर सीबीआई और केंद्र द्वारा जवाब दाखिल करने और मनमोहन सिंह द्वारा प्रत्युत्तर देने पर बारी से पहले सुनवाई की मांग करेंगे। बता दें कि, मनमोहन सिंह ने अपनी याचिका में कहा था कि, 'मौजूदा याचिका कानून के अहम सवाल उठाती है, जिसमें भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत सरकारी कार्यों और आपराधिक अभियोजन के बीच परस्पर क्रिया के संबंध में सर्वोच्च न्यायालय से आधिकारिक घोषणा की मांग की गई है। खासकर उन मामलों में जहां कोई शिकायत भी नहीं है। आरोप की तो बात ही छोड़ ही दें।'

डीआरडीओ जासूसी मामले में पृथ्वीराज चव्हाण ने एनआईए जांच की मांग की

मुंबई, 4 अगस्त (एजेंसियां)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पृथ्वीराज चव्हाण ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के एक उच्च पदस्थ अधिकारी की संलिप्तता से जुड़े जासूसी मामले को राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) को नहीं सौंपे जाने पर बृहस्पतिवार को हैरानी जताई। महाराष्ट्र विधानसभा में मामले की एनआईए जांच की मांग उठाते हुए चव्हाण ने यह भी सवाल किया कि डीआरडीओ के अधिकारी आरोपी प्रदीप कुरुलकर पर गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम के तहत मामला क्यों नहीं दर्ज किया गया है।राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के नेता जयंत पाटिल ने कुरुलकर पर देशद्रोह का मामला दर्ज करने की मांग की है।

पीएम मोदी से मिले मुख्यमंत्री सुक्खू

प्रदेश में हुए नुकसान के लिए विशेष आर्थिक पैकेज मांगा

शिमला, 4 अगस्त (एजेंसियां)। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने शुक्रवार को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से शिष्टाचार भेंट की। उन्हें हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक आपदा से हुए भारी नुकसान के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने प्रधानमंत्री से हिमाचल को जल्द अंतरिम राहत राशि जारी करवाने का अनुरोध किया। साथ ही बाढ़ से हुए नुकसान का जायजा लेने के लिए केंद्रीय टीम भेजने पर उनका धन्यवाद किया। मुख्यमंत्री सुक्खू ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से हिमाचल के लिए विशेष आर्थिक पैकेज मांगा। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने शुक्रवार को नई दिल्ली में राहुल गांधी से भी मुलाकात की और उन्हें प्राकृतिक आपदा के चलते प्रदेश में हुए नुकसान से अवगत कराया। मुख्यमंत्री सुक्खू ने राहुल गांधी को सरकार और संगठन की गतिविधियों की भी जानकारी दी। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने शुक्रवार को नई दिल्ली में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा से शिष्टाचार भेंट की। उन्होंने नड्डा से प्राकृतिक आपदा से हुए भारी नुकसान के बारे में चर्चा की। साथ ही हिमाचल को अधिक से अधिक आर्थिक मदद दिलाने का अनुरोध किया।

हिंदू देवता पर सोशल मीडिया पर अपमानजनक टिप्पणी करना पड़ा भारी, आरोपी गिरफ्तार

मंगलुरु, 4 अगस्त (एजेंसियां)। हिंदू भगवान के खिलाफ सोशल मीडिया पर पोस्ट करना एक शख्स को भारी पड़ गया है। साइबर, आर्थिक अपराध और नारकोटिक (सीईएन) अपराध पुलिस ने आरोपी शख्स को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी ने इंस्टाग्राम पर हिंदू भगवान पर अपमानजनक टिप्पणी की थी। पुलिस सूत्रों ने बताया कि गिरफ्तार किए गए व्यक्ति की पहचान मंगलुरु के कुलशेखर के रहने वाले मोहम्मद सलमान (22) के रूप में हुई है। सीईएन पुलिस स्टेशन में आरोपी के खिलाफ केस दर्ज किया गया था।

रानी रिजर्व फॉरेस्ट के पास तीन हाथियों की मौत

बिजली के तार की चपेट में आने से हुआ हादसा

गुवहाटी, 4 अगस्त (एजेंसियां)। असम के रानी रिजर्व फॉरेस्ट में बिजली की चपेट में आने से तीन हाथियों की मौत हो गई। अधिकारियों ने बताया कि जांच के दौरान इस बात की पुष्टि हुई है कि तीनों हाथियों की मौत करंट लगने से ही हुई है। गौरतलब है कि पहले भी इस तरह की घटना हो चुकी है।

बिजली के तार की चपेट में आए हाथी

कामरूप ईस्ट डिवीजन की डीएफओ रोहिणी सैकिया ने बताया, रानी रिजर्व फॉरेस्ट से सटे आज तीन हाथियों की बिजली की चपेट में आने से मौत हो गई। मौत का कारण बिजली का झटका है और यह एक दुर्घटना है जैसा कि हम प्रारंभिक जांच में देख सकते हैं। मादा हाथी दो बच्चों के साथ बगीचे में आई थी और एक पेड़ को खींचने की कोशिश की थी, जो पेड़ बिजली के तारों के संपर्क में आ गया, जिससे करंट लगने की घटना हुई।

सुरक्षित तार लगाने की अपील

सैकिया ने बताया फिलहाल, हम पहले से ही इस मामले को देख रहे हैं और हम एपीडीसीएल के संपर्क में भी हैं, क्योंकि इसी तरह की घटनाएं पहले भी हो चुकी हैं। इसलिए, एपीडीसीएल से पहले ही अनुरोध किया गया था कि जहां भी बिजली के तार लटक रहे हैं, वहां सुरक्षित और कवर तार लगाए जाएं।

नशे की तस्कर निकली गायिका, युवाओं को सप्लाई करती थी चिट्टा, ओवरडोज से युवक की मौत से खुला राज

खन्ना, 4 अगस्त (एजेंसियां)। पंजाब की एक गायिका नशे की तस्कर निकली। उससे नशा खरीदकर एक युवक ने ओवरडोज ली, जिससे उसकी मौत हो गई। इसके बाद पुलिस ने जांच की और गायिका परमजीत कौर पम्मी निवासी रहीमाबाद खुर्द और उसके साथी जगदीश सिंह दीशा निवासी लक्खोवाल कलां को गिरफ्तार कर लिया। दरअसल, खन्ना के माछीवाड़ा साहिब में 30 जुलाई को कब्रिस्तान में नशे की ओवरडोज के कारण एक युवक की मौत हो गई थी, जिसकी बाजू पर सिरिंज लगी थी।

भाजपा नेता सुवेंदु अधिकारी को राहत, कलकत्ता हाईकोर्ट के फैसले को एससी ने किया रद्द

नए सिरे से सुनवाई का आदेश

नई दिल्ली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को कलकत्ता उच्च न्यायालय के उस आदेश को रद्द कर दिया है। इसमें कहा गया था कि पश्चिम बंगाल पुलिस भाजपा नेता सुवेंदु अधिकारी के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर सकती है। मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि उच्च न्यायालय के लिए यह उचित होगा कि वह अपने 20 जुलाई के आदेश में अंतरिम निर्देश जारी करने से पहले अधिकारी को मामले में जवाबी हलफनामा दायर करने का अवसर दे।

न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने कहा, हम कलकत्ता उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश से नए सिरे से सुनवाई करने का अनुरोध करते हैं और इसे सुविधाजनक बनाने के लिए 20 जुलाई के आदेश को रद्द कर दिया गया है। सुप्रीम कोर्ट ने उच्च न्यायालय की खंडपीठ द्वारा पारित 20 जुलाई के आदेश को चुनौती देने वाली अधिकारी की अपील पर यह आदेश पारित किया। इससे पहले, उच्च न्यायालय के एकल न्यायाधीश ने सितंबर 2021 और दिसंबर 2022 में पारित अपने आदेशों में कहा था कि अधिकारी, जो पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता हैं, उनके खिलाफ कोई प्राथमिकी दर्ज नहीं की जाएगी और कोई दंडात्मक कदम नहीं उठाया जा सकता है।

इसलिए भारत के मुसलमान औरंगजेब के वंशज नहीं हो सकते

महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम फडणवीस ने विधानपरिषद में क्या कहा

मुंबई, 4 अगस्त (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री और गृहमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने विधानपरिषद में कहा है कि औरंगजेब कभी मुसलमानों का हीरो नहीं हो सकता और कोई भी उसका महिमामंडन न करे। जो भी ऐसा करेगा उसे बक्शा नहीं जाएगा। देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि महाराष्ट्र मे दंगों की संख्या कम हुई है लेकिन महाराष्ट्र को अस्थिर करने का प्रयास हुआ है। डिप्टी सीएम ने कहा कि जुलूस में बड़ी तादाद में औरंगजेब के पोस्टर लहराए गए, स्टेटस लगाए गए और ये अनेक जिलों मे हुआ, ये कोई सयोंग नहीं है। महाराष्ट्र के विधानपरिषद में डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि आज तक भारतीय मुसलमानों का हीरो औरंगजेब कभी नहीं था। वो हमारा हीरो नहीं हो सकता। वो एक आक्रमणकारी था, आक्रांता था। हमारे हीरो छत्रपति शिवाजी महराज और संभाजी महाराज हैं। एपीजे अब्दुल कलाम हमारे हीरो हो सकते हैं। जिस तरह से औरंगजेब ने छत्रपति संभाजी महाराज की निर्मम हत्या की, वो हमारा हीरो नहीं हो सकता।

भारतीय मुसलमान औरंगजेब के वंशज नहीं हो सकते

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने आगे कहा कि औरंगजेब टर्की मंगोल वंश का था। इस वंश के भारत और पाकिस्तान मे कुछ चंद लाख लोग ही हैं। इसलिए यहां के मुसलमान औरंगजेब के वंशज नहीं हो सकते। इसलिए वो हमारा हीरो नहीं हो सकता। लेकिन उसके नाम पर यहां दंगा करने की कोशिश की गई। यह एक साजिश के तहत हुआ। जांच मे सबूत भी मिले हैं। मैं बस इतना ही कहूंगा कि हम महाराष्ट्र में जाति और धर्म के आधार पर कोई दुजाभाव नहीं करेंगे। लेकिन औरंगजेब का महिमा मंडन हम बर्दाश्त नहीं करेंगे और जो करेगा उसे हम छोड़ेंगे नहीं।

उडुपी कॉलेज वॉशरूम वीडियो मामले की पीड़ित ने अदालत में दिए बयान 18 जुलाई का है मामला

मंगलुरु, 4 अगस्त (एजेंसियां)। विवादास्पद उडुपी कॉलेज वॉशरूम वीडियो मामले की पीड़ित लड़की गुरुवार को अपना बयान दर्ज कराने के लिए उडुपी जिला अदालत में पेश हुई। घटना 18 जुलाई की है, जब पीड़िता वॉशरूम गई थी तो तीन मुस्लिम लड़कियों ने कथित तौर पर उसका वीडियो बनाया। इस घटना ने राज्यव्यापी विवाद खड़ा कर दिया, विपक्षी भाजपा ने इस मुद्दे की गहन जांच की मांग करते हुए विरोध प्रदर्शन किया। सूत्रों ने कहा कि अदालत के समक्ष एक विस्तृत बयान में, पीड़ित लड़की ने घटना से संबंधित घटनाओं को याद किया, अदालत ने सावधानीपूर्वक उसका बयान दर्ज किया। लड़की ने पहले तीनों आरोपियों के खिलाफ औपचारिक शिकायत दर्ज करने में अनिच्छा व्यक्त की थी। हालांकि, पुलिस ने घटना में स्वतः संज्ञान लेते हुए मामला दर्ज कर लिया है

'चुप रहें, नहीं तो ईडी का छापा पड़ जाएगा'; जब संसद में बोलीं मीनाक्षी लेखी, विपक्ष भड़का

नई दिल्ली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। दिल्ली सेवा विधेयक लोकसभा में पास हो चुका है। बिल पर चर्चा के दौरान अमित शाह ने विपक्ष पर हमला बोला तो विपक्ष ने सदन से वॉकआउट कर दिया। इस बीच, चर्चा के दौरान केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी का एक बयान खूब चर्चा में रहा। दरअसल, दिल्ली सेवा विधेयक पर जब चर्चा हो रही थी, तो मंत्री लेखी के बिल के पक्ष में बोलते ही हंगामा मच गया। इस पर मीनाक्षी लेखी ने विपक्ष को चेतावनी दी कि वे चुप्पी बनाए रखें, अन्यथा प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) आपके घरों तक पहुंच सकता है। लेखी ने एक विपक्षी सदस्य के जवाब में कहा, एक मिनट, एक मिनट। शांत रहो, तुम्हारे घर ईडी ना आ जाए। आप बहुत ज्यादा ही शोर मचा रहे हैं। लेखी के बयान के बाद विपक्ष ने काफी नाराजगी जाहिर की। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के प्रवक्ता क्लाइड क्रैस्टो ने कहा कि लोकसभा में लेखी की भड़काऊ धमकी ने विपक्ष के आरोपों को साबित कर दिया कि सरकार केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है। उन्होंने ट्वीट किया, लोकसभा में गरमा-गरम माहौल में मीनाक्षी लेखी द्वारा दी गई यह धमकी यह साबित करती है कि कई लोग कहते रहे हैं, केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग। मीनाक्षी लेखी के बयान पर भारतीय युवा कांग्रेस के अध्यक्ष श्रीनिवास बीवी ने सवाल किया कि क्या लोकसभा में लेखी की टिप्पणी एक चेतावनी या धमकी थी। उन्होंने ट्वीट किया, क्या यह चेतावनी है या धमकी? तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के प्रवक्ता साकेत गोखले ने संसद में लेखी की ईडी टिप्पणियों को चौंकाने वाला बताया। उन्होंने कहा कि मंत्री अब विपक्षी नेताओं के खिलाफ ईडी का इस्तेमाल करने की खुलेआम धमकी दे रहे हैं।

अगर विधानसभा सत्र में मेरा नंबर नहीं आया तो मैं तुम्हारे गोत्र को नष्ट कर दूंगा, शिंदे गुट के विधायक का विवादित बयान

मुंबई, 4 अगस्त (एजेंसियां)। कल्याणः एकनाथ शिंदे गुट के विधायक विश्वनाथ भोईर का एक विवादित बयान तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में वह मराठी में कहते दिख रहे हैं कि अग्री कोली समाज के दरवाजे पर लव जिहाद आ गया है। दरवाजे के पास नहीं तो घर में घुस गया। एक-दो लड़कियां लव जिहाद का शिकार हुईं और घर छोड़कर धर्म छोड़ दिया। तीन और साथ में चार लोग हैं। मैं उन्हें सीधे कहने जा रहा था, हम उन्हें समुदाय में नष्ट कर देंगे। बता दें कि यह बयान शिंदे समूह के विधायक विश्वनाथ भोईर ने ठाणे में अग्री सेना की बैठक में दिया था। विधायक विश्वनाथ भोईर का ये वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। अपने बयान के बारे में बात करते हुए विश्वनाथ भोईर ने जवाब दिया कि लव जिहाद एग्री कोली समुदाय तक पहुंच गया है, इसलिए मैंने अपना गुस्सा जाहिर किया। औरंगजेब और लव जिहाद को लेकर इस वक्त राज्य की सियासत गर्म है। हिंदूवादी संगठनों ने आक्रामक रुख अपना लिया है। विधायक भी लव जिहाद, औरंगजेब को लेकर सवाल उठा रहे हैं। नंबर नहीं आया। नहीं तो मैं कहने जा रहा था कि यह सीधा है *** आओ इसे समाज में नष्ट कर दें। लव जिहाद मामले को लेकर शिंदे गुट के विधायक विश्वनाथ भोईर ने विवादित वीडियो में गाली देते हुए कहा, मैं उन विधायकों से कहने वाला था कि अगर विधानसभा सत्र में मेरा नंबर नहीं आया तो मैं तुम्हारे गोत्र को नष्ट कर दूंगा।

मैं उनसे ऐसी ही भाषा में बात करने वाला था

विश्वनाथ भोईर ने कहा कि भिवंडी और कल्याण में दंगा होता तो सबसे पहले गांव वाले खड़े होकर लड़ते थे। मैं उनसे ऐसी ही भाषा में बात करने वाला था कि अगर वे हमारी बेटी को धोखा दे रहे हैं। फिर भले ही मुझे हॉल से निकाल दिया जाए, मैं तैयार हूं, भले ही मुझे पार्टी से निकाल दिया जाए। दुर्भाग्य से मेरा नंबर नहीं आया, मैं चुप रहा और हॉल से बाहर चला गया। उन्होंने कहा कि मैं चला गया लेकिन मैं यह प्रश्न उनके पास ले जाऊंगा।

सड़क दुर्घटना मामले में सुप्रीम कोर्ट का बड़ा फैसला

मुआवजा पाने को अपने क्षेत्र के एमएसीटी में कर सकेंगे दावा

नई दिल्ली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। सड़क दुर्घटना के दौरान मुआवजे का दावा करने के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने बड़ा फैसला सुनाया है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि दावेदारों के लिए मोटर वाहन अधिनियम की धारा 166 के तहत मुआवजे के लिए उस क्षेत्र के एमएसीटी के समक्ष आवेदन दायर करना अनिवार्य नहीं है,

जहां दुर्घटना हुई थी। जस्टिस दीपांकर दत्ता ने ट्रांसफर याचिका पर फैसला करते हुए कहा कि दावेदार उस स्थानीय सीमा के भीतर एमएसीटी से संपर्क कर सकते हैं जिसके अधिकार क्षेत्र में वे रहते हैं या व्यवसाय करते हैं या प्रतिवादी रहते हैं। आपत्तिजनक वाहन के मालिक द्वारा दायर इस स्थानांतरण याचिका में एक आधार यह उठाया गया था कि दुर्घटना दार्जिलिंग जिले के सिलीगुड़ी में हुई थी और इस प्रकार दार्जिलिंग में एमएसीटी के लिए दावा याचिका पर निर्णय लेना समीचीन होगा। कोर्ट ने कहा कि दावेदारों ने यूपी के फतेहगढ़ में एमएसीटी, फर्रुखाबाद से संपर्क करने का विकल्प चुना है, एक मंच जिसे कानून उन्हें चुनने की अनुमति देता है, याचिकाकर्ता द्वारा शिकायत उठाई जा सकती है। विवाद गलत है और इसलिए इसे खारिज कर दिया गया है। याचिकाकर्ता ने दलील दी कि चूंकि उसके सभी गवाह सिलीगुड़ी से हैं, इसलिए भाषा बाधा बन सकती है। इस तर्क को खारिज करते हुए कोर्ट ने कहा कि भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, इसमें कोई संदेह नहीं है कि लोग अलग-अलग भाषाएं बोलते हैं। कम से कम 22 आधिकारिक भाषाएं हैं। हालांकि, हिंदी राष्ट्रीय भाषा है, इसलिए यह अपेक्षित है।

गवाह जिन्हें एमएसीटी, फतेहगढ़, यूपी के समक्ष याचिकाकर्ता द्वारा हिंदी में संवाद करने और अपना पक्ष बताने के लिए पेश किया जाएगा। यदि याचिकाकर्ता के तर्क को स्वीकार किया जाता है, तो दावेदार गंभीर रूप से पूर्वाग्रहग्रस्त होंगे, क्योंकि वे ऐसा करने की स्थिति में नहीं होंगे। बांग्ला में अपना संस्करण संप्रेषित करें और प्रसारित करें।

महाराष्ट्र के सभी सरकारी अस्पतालों में होगा मुफ्त इलाज

मुंबई, 4 अगस्त (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के लोगों के लिए बड़ी खुशखबरी है। यहां अब सभी सरकारी अस्पतालों में इलाज पूरी तरह से मुफ्त होने वाला है। स्वास्थ्य मंत्री तानाजी सावंत ने ऐलान किया कि यह योजना 15 अगस्त से राज्य में लागू होगी, जिसके बाद राज्य के सरकारी अस्पतालों में इलाज और टेस्ट फ्री होंगे। यह निर्णय राज्य कैबिनेट की बैठक में सर्वसम्मति से लिया गया है, जिसमें भारत के संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत नागरिकों के स्वास्थ्य के अधिकार को मंजूरी दी गई है। सरकार के इस फैसले से राज्य के गरीबों, जरूरतमंदों और मरीजों को बड़ी राहत मिलेगी। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, ग्रामीण अस्पताल, महिला अस्पताल, जिला सामान्य अस्पताल, उपजिला अस्पताल, सुपर स्पेशलिटी अस्पतालों और कैंसर अस्पतालों में मुफ्त इलाज उपलब्ध कराया जाएगा। नासिक और अमरावती में स्थित कैंसर अस्पताल भी मुफ्त में इलाज करेंगे। फिलहाल इन सभी अस्पतालों में एक साल में करीब 2 करोड़ 55 लाख नागरिक इलाज के लिए आते हैं। राज्य में जन स्वास्थ्य विभाग के कुल 2418 संस्थान हैं, इन सभी जगहों पर मरीजों को मुफ्त इलाज मिलेगा।

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

मेरा हैदराबाद

सु वि चा र

मन की एकाग्रता ही समग्र ज्ञान है।

राज्य में साइबर अपराध पर कानून जल्द : आईटी मंत्री

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। राज्य के आईटी मंत्री केटी रामाराव ने शुक्रवार को विधानसभा में कहा कि तेलंगाना जल्द ही साइबर अपराध पर एक कानून लेकर आएगा। साइबर अपराध पर, तेलंगाना कानून लाने वाला पहला राज्य बनने जा रहा है। पहले से ही नलसार (हैदराबाद में कानून विश्वविद्यालय) के लोग तैयारी कर रहे हैं। हम निश्चित रूप से वह कानून लाएंगे। आईटी निर्यात में वृद्धि के बारे में सवालों के जवाब में उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव के कुशल नेतृत्व के कारण राज्य तेजी से प्रगति कर रहा है।

1987 से 2014 के बीच आईटी निर्यात 56,000 करोड़ रुपये रहा. हालांकि, पिछले साल अकेले निर्यात 57,707 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। उन्होंने कहा कि आईटी सेक्टर का विस्तार टियर-2 शहरों तक भी हो रहा है। तकनीकी नौकरियों के बारे में बोलते हुए, उन्होंने कहा कि 2021-22 के दौरान देश में इस क्षेत्र में 4.50 लाख नई नौकरियां पैदा हुईं, जबकि हैदराबाद 33 प्रतिशत नौकरियों के साथ बेंगलुरु से आगे शीर्ष पर है।

हैदराबाद के कोकापेट में जमीन की नीलामी में 100 करोड़ रुपये प्रति एकड़ की रिकॉर्ड कीमत का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि यह चंद्रशेखर राव की "स्थिर सरकार और सक्षम नेतृत्व" के कारण हासिल की गई प्रगति का परिणाम है। हरियाणा और मणिपुर में हिंसा का जिक्र करते हुए मंत्री ने बताया कि तेलंगाना में धर्म या जाति को लेकर कोई समस्या नहीं है।

हम भारत के अन्य राज्यों में देख रहे हैं। हरियाणा में क्या हो रहा है, गुड़गांव एक बेहतरीन आईटी केंद्र है। जो लोग वहां हैं वे इसे नष्ट कर रहे हैं। धर्म के नाम पर परेशानी पैदा कर रहे हैं और लोगों को भागने के लिए बहुत बुरे काम कर रहे हैं।

तेलंगाना सीएम केसीआर के नेतृत्व में सुरक्षित : केटीआर

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। यह विश्वास जताते हुए कि बीआरएस लगातार तीसरी बार सरकार बनाएगी, उद्योग मंत्री केटी रामाराव ने कहा कि तेलंगाना मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव के सुरक्षित हाथों में है, जो राज्य में सांप्रदायिक सद्भाव सुनिश्चित कर रहे हैं। जयपुर की घटना की निंदा करते हुए जिसमें एक आरपीएफ अधिकारी ने शहर के बाजारघाट के मूल निवासी सैफुद्दीन सहित चार लोगों की हत्या कर दी, मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार मृतक व्यक्ति के परिवार को पूरा समर्थन देगी। भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के पार्टी फंड से, गोलीबारी पीड़ित के तीन बच्चों में से प्रत्येक के लिए 2 लाख रुपये की सावधि जमा की जाएगी। इसके अलावा, मृतक की पत्नी अंजुम शाहीन को एक डबल बेडरूम का घर भी स्वीकृत किया जाएगा। उन्होंने शुक्रवार को यहां विधानसभा में शून्यकाल के दौरान कहा कि सरकारी नौकरी के संबंध में मामला मुख्यमंत्री के समक्ष उठाया जाएगा।

तेलंगाना समाज सांप्रदायिक मतभेदों को बर्दाश्त नहीं करेगा और जयपुर की घटना की सभी वर्गों द्वारा निंदा की जानी चाहिए। रामाराव ने कहा, हम मिलकर यह सुनिश्चित करेंगे कि राज्य में सांप्रदायिक सद्भाव बना रहे और देश के लिए एक उदाहरण स्थापित किया जाए।

भारी में मात्रा में हशीश ऑयल के साथ एक गिरफ्तार

नशीले पदार्थ की कीमत करीब 42 लाख रुपए

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। राचकोंडा स्पेशल ऑपरेशंस टीम ने आलेर पुलिस के साथ मिलकर शुक्रवार को ग्राहकों को बिक्री के लिए ओडिशा से हैदराबाद और जहीराबाद में अवैध रूप से हशीश तेल की तस्करी करने के आरोप में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया। अधिकारियों ने 42 लाख रुपये मूल्य का 3 लीटर तेल, एक मोटरसाइकिल और 2 मोबाइल फोन जब्त किए। गिरफ्तार व्यक्ति अजमीरा सूर्या (34) वारंगल जिले के नरसंपेट का रहने वाला है। जबकि इस मामले के अन्य आरोपी वारंगल का रामू और ओडिशा का लक्ष्मण फरार है। राचकोंडा पुलिस ऑयुक्त डीएस चौहान ने बताया कि स्नातकोत्तर तक पढ़ाई करने वाला सूर्या महामारी के दौरान एक निजी कंपनी में अपनी नौकरी खो दी और अपने गृह नगर में एक डेयरी फार्म शुरू किया। हालांकि, बिजनेस में घाटा होने के कारण उन्होंने अवैध तरीकों से आसानी से कमाई करने का फैसला किया। उन्होंने कहा कि सूर्या ने अवैध रूप से शराब तैयार करना शुरू कर दिया और पिछले साल गुडुर पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया और जेल भेज दिया। बाद में उन्हें पिछले साल नवंबर तक निवारक निरोध अधिनियम के तहत हिरासत में रखा गया था। जेल में रहने के दौरान, वह रामू के संपर्क में आया, जिसे भी इसी तरह के मामले में गिरफ्तार किया गया था। जेल से रिहा होने के बाद वह मलकानगिरी, ओडिशा गया और लक्ष्मण से मिला और उससे 1 लाख रुपये में 3 लीटर हशीश तेल खरीदा। वे वारंगल लौट आए और इसे बेचने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। कमिश्नर ने कहा, "उन्होंने हशीश ऑयल को 7,000 रुपये से 8,000 रुपये प्रति 5 मिलीलीटर बेचने की योजना बनाई थी।" एक गुप्त सूचना के बाद, सूर्या को पुलिस टीम ने उस समय पकड़ लिया, जब वह वारंगल से आलेर में बाइक पर नशीला पदार्थ लेकर जा रहा था और उसके पास से नशीला पदार्थ जब्त कर लिया गया।

गांजा तस्करी करने वाले धरे गये

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। अब्दुल्लापुरमेट पुलिस ने ओडिशा से हैदराबाद तक गांजा की तस्करी के आरोप में पांच तस्करों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए लोगों में नलगोंडा के नाकरेकल के आईटीए छात्र पी.रजनीकांत, कुर्नूल के मोहम्मद समीर, दिसुखनगर के वी.सात्विक रेड्डी, सरूरनगर के टी.वामशी और दिलसुखनगर के जी.हेमंत शामिल हैं। जबकि ओडिशा का रहने वाला तिरूपति नामक व्यक्ति फरार है। राचकोंडा के पुलिस आयुक्त डीएस चौहान ने कहा कि रजनीकांत नशीले पदार्थों का सेवन करने का आदी है। पहले भी अपने दोस्त समीर के साथ इसी तरह के मामलों में शामिल था, जिससे उसकी मुलाकात सोशल मीडिया पर हुई थी। दोनों ने नशीली दवाओं की तस्करी से आसानी से पैसा कमाने की योजना बनाई। इसके लिए, उन्होंने वनस्थलीपुरम से एक पुलिस कांस्टेबल की बाइक चुराई और ओडिशा के मलकानगिरी जिले में गए और 3,000 रुपये में 5 किलो गांजा खरीदा और हैदराबाद लौट आए, सात्विक रेड्डी, वामशी और हेमंत ने हैदराबाद में छात्रों को गांजा खरीदने और बेचने के लिए धन मुहैया कराया।

जीएचएमसी शहर भर में श्मशान वाटिका विकसित करेगी : मंत्री तलसानी

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। राज्य के पशुपालन, मत्स्य पालन और छायांकन मंत्री तलसानी श्रीनिवास यादव ने कहा है कि जीएचएमसी शहर के निवासियों के लिए पूरे शहर में श्मशान वाटिका विकसित करेगी। शुक्रवार को उन्होंने ग्रेटर हैदराबाद नगर निगम गदवाल विजयलक्ष्मी और खैरताबाद विधायक दाना नागेंद्र के साथ पंजागुट्टा कब्रिस्तान विकास कार्यों का निरीक्षण किया। इस मौके पर मंत्री तलसानी श्रीनिवास यादव ने कहा कि लोगों की भावनाओं को दर्शाते हुए, तेलंगाना राज्य सरकार सभी धर्मों को प्राथमिकता देते हुए श्मशान वाटिका व कब्रिस्तान विकसित कर रही है। 12 एकड़ का पंजागुट्टा कब्रिस्तान रुपये की लागत से बनाया गया था। जीएचएमसी को 1.90 करोड़ की लागत से विकसित किया गया था जबकि पिनिक्स को कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारियों के तहत रुपये खर्च किए गए थे। 3 करोड़ की लागत से एक अत्याधुनिक कब्रगाह का निर्माण किया गया है। उन्होंने कहा कि इस आधुनिक कब्रिस्तान को 25 अगस्त को खोलने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस कब्रिस्तान में पीने का पानी, निर्बाध बिजली, लॉकर रूम, आंतरिक सड़कें, विश्राम कक्ष, शौचालय, स्नानघर और श्मशान जैसी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। इसके अलावा स्थानीय विधायक ने बगल के मुस्लिम कब्रगाह के विकास कार्य को एक सप्ताह के अंदर शुरू करने के लिए कदम उठाने को कहा है। बाद में उन्होंने कहा कि ईएसआई में आधुनिक कब्रगाह बनाने के लिए भी कदम उठाये जायेंगे। उन्होंने कहा कि कब्रगाहों के रख-रखाव के लिए उन्हें स्थानीय स्तर पर रहने वाले परिवारों को उनकी आजीविका के लिए आवंटित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि कब्रगाह में खुशनुमा माहौल बनाने के लिए व्यापक स्तर पर पौधारोपण किया जा रहा है। महापौर विजयालक्ष्मी ने कहा कि कब्रगाह में सभी सुविधाओं के साथ सुखद माहौल उपलब्ध कराया गया है। इस कार्यक्रम में स्थानीय नगरसेवक मन्ने कविता, खैरताबाद जोनल कमिश्नर वेंकटेश डोत्रे, डिप्टी कमिश्नर प्रशांति, एसई रत्नाकर, ईई विजय कुमार और अन्य ने भाग लिया।

राज्यपाल ने आरटीसी मसौदा विधेयक पर अपनी सहमति देने के लिए कुछ और समय मांगा

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। राज्यपाल डॉ. तमिलिसाई सौंदरराजन ने तेलंगाना राज्य सड़क परिवहन निगम (सरकारी सेवा में कर्मचारियों का अवशोषण) विधेयक, 2023 के मसौदे पर अपनी सहमति देने के लिए कुछ और समय मांगा है। शुक्रवार को यहां राजभवन द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में, राज्यपाल ने कहा कि उन्हें राज्य सरकार से 2 अगस्त को तेलंगाना राज्य सड़क परिवहन निगम (सरकारी सेवा में कर्मचारियों का अवशोषण) विधेयक, 2023 का मसौदा विधेयक प्राप्त हुआ था। इसे विधानसभा में पेश करने की अनुमति देने का अनुरोध किया जा रहा है। हालाँकि, राज्यपाल ने कहा कि राज्य सरकार के अनुरोध पर निर्णय लेने के लिए विधेयक के मसौदे की जांच करने और कानूनी राय प्राप्त करने के लिए कुछ और समय की आवश्यकता होगी।

एक व्यक्ति की हत्या कर दी गई

संगारेड्डी, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। शुक्रवार सुबह रायकोड मंडल के नल्लमपल्ली गांव में एक व्यक्ति की हत्या कर दी गई। पीड़ित मोतिके कृष्णा (30) पेशे से ऑटो चालक था। कथित तौर पर कृष्णा का गांव में अपने प्रतिद्वंद्वियों के साथ कुछ विवाद था। पुलिस को हत्या में इनकी भूमिका पर संदेह हो रहा है। मामला दर्ज किया गया है। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए जहीराबाद के सरकारी अस्पताल ले जाया गया।

सरकारी अस्पताल के प्रशासक रूप में नियुक्त होंगे आरडीओ स्तर के अधिकारी : हरीश राव

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। स्वास्थ्य मंत्री टी हरीश राव ने कहा कि सरकारी अस्पतालों में समग्र प्रशासन में सुधार के लिए, राज्य सरकार अस्पताल के मामलों की निगरानी के लिए प्रत्येक जिले में राजस्व मंडल अधिकारी (आरडीओ) रैंक के एक अधिकारी को प्रशासक के रूप में नियुक्त करने पर विचार कर रही है। शुक्रवार को विधान परिषद में प्रश्नकाल के दौरान इसका खुलासा करते हुए, हरीश राव ने कहा कि सरकार सरकारी अस्पतालों के प्रशासन हिस्से पर ध्यान केंद्रित कर रही है और भविष्य में, प्रशासनिक मामलों में अस्पताल अधीक्षक की सहायता के लिए हर जिले में एक आरडीओ स्तर के अधिकारी को नियुक्त करने पर विचार कर रही है। प्रस्ताव सरकार के पास है। इस कदम से सरकारी अस्पतालों में सेवाओं में सुधार और उपलब्ध बुनियादी ढांचे के बेहतर उपयोग में मदद मिलेगी।

यह कहते हुए कि मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव के नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा की गई विभिन्न पहलों के साथ, तेलंगाना देश में एक प्रमुख चिकित्सा केंद्र के रूप में विकसित हुआ है, हरीश राव ने कहा कि पूरा देश तेलंगाना में स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में विकास से प्रभावित है। उन्होंने कहा कि आज तेलंगाना में सरकारी अस्पतालों का स्तर इतना बेहतर हो गया है कि अधिकांश लोग निजी अस्पतालों के बजाय उनमें जाना पसंद कर रहे हैं। मंत्री ने बताया कि केसीआर पोषण किट, हाइजीनिक किट, आरोग्य लक्ष्मी कार्यक्रम और अम्मा वोडी योजना जैसे कार्यक्रमों की शुरुआत से राज्य में गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य में जबरदस्त सुधार हुआ है। पहले केवल 30 प्रतिशत गर्भवती महिलाएं ही सरकारी अस्पतालों में प्रसव के लिए आती थीं। लेकिन अब बेहतर सुविधाओं और सेवाओं के कारण 70 प्रतिशत से अधिक संस्थागत प्रसव सरकारी अस्पतालों में हो रहे हैं। सरकार के अथक प्रयासों और कई कार्यक्रमों की शुरूआत के साथ, राज्य मातृ मृत्यु दर (एमएमआर) को 2014-15 में 96 प्रतिशत से घटाकर 2023 में 43 प्रतिशत पर लाने में सक्षम रहा, जो देश में दूसरा सबसे कम है।

राज्य में मेडिकल कॉलेजों की संख्या पर एक सवाल का जवाब देते हुए, स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि राज्य के गठन से पहले, पांच सरकारी मेडिकल कॉलेज थे और 2014 के बाद, 29 नए सरकारी कॉलेज जोड़े गए, जिससे कुल संख्या 34 हो गई। उन्होंने कहा कि आठ नए मेडिकल कॉलेजों के जुड़ने से, सरकारी मेडिकल कॉलेजों में 2,700 अतिरिक्त सीटें जोड़ी गईं, उन्होंने कहा कि तेलंगाना के छात्रों को 'बी' श्रेणी की मेडिकल सीटें आवंटित किए जाने से, उनके लिए अतिरिक्त 1300 सीटें उपलब्ध हो गई हैं। इसके अलावा, प्रवेश के नियमों में संशोधन के साथ, अन्य राज्यों के छात्रों के लिए आरक्षित इन कॉलेजों में 15 प्रतिशत सीटें स्थानीय छात्रों के लिए विशेष रूप से उपलब्ध कराई गई थीं, जिसमें अतिरिक्त 570 सीटें जोड़कर कुल 8518 सीटें हो गईं, जो सबसे अधिक है। राज्य शैक्षणिक वर्ष 2023-24 में देश भर में नई मेडिकल सीटों में 43 प्रतिशत का योगदान दे रहा है, यह एक बड़ी उपलब्धि है। आज हमारे बच्चों को चिकित्सा की पढ़ाई के लिए दूसरे देशों या राज्यों में जाने की जरूरत नहीं है।

एओसी सेंटर में अमृत सरोवर का शुभारंभ

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। दक्षिणी कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग इन चीफ (जीओसी-इन-सी) लेफ्टिनेंट जनरल अजय कुमार सिंह ने शुक्रवार को एओसी सेंटर में अमृत सरोवर का उद्घाटन किया। मुख्यालय दक्षिण भारत क्षेत्र के निर्देश पर, सेना आयुध कोर (एओसी) केंद्र को मुख्यालय तेलंगाना और आंध्र उप क्षेत्र द्वारा इस उद्देश्य के लिए अमृत सरोवर विकसित करने का काम सौंपा गया था। जीओसी-इन-सी पानी के संरक्षण और स्थानीय सामुदायिक गतिविधियों का केंद्र बनाने के प्रयासों के लिए एओसी केंद्र के प्रयासों के प्रति सक्रिय थे और उन्होंने एओसी केंद्र की सराहना की। अमृत सरोवर के चारों ओर लगभग 11,000 औषधीय और हर्बल पौधे लगाए गए हैं। प्राकृतिक बायो-रिटेनिंग दीवार बनाने के लिए इसके बांधों पर प्राकृतिक झाड़ियाँ लगाई गई हैं। अमृत सरोवर के किनारे पर्याप्त रोशनी और बैठने की बेंच के साथ पैदल चलने के लिए पाथवे बनाया गया है। सभी के स्वास्थ्य लाभ के लिए अमृत सरोवर के बगल में एक खुला व्यायामशाला और फिगर '8' वॉकिंग ट्रैक भी बनाया गया है। सरोवर को 1.2 एकड़ भूमि के क्षेत्र में विकसित किया गया है, जो भूजल स्तर को बढ़ाने में सहायता करेगा और स्थानीय वनस्पतियों और जीवों के लिए उपयुक्त आवास प्रदान करेगा। 'आजादी का अमृत महोत्सव' के हिस्से के रूप में, भारत सरकार ने 15 अगस्त तक देश के हर जिले में कम से कम 75 सरोवर (तालाब) बनाने के समग्र उद्देश्य के साथ मिशन 'अमृत सरोवर' शुरू किया और 50,000 अमृत सरोवर बनाने का लक्ष्य रखा गया था। दक्षिणी भारत के विभिन्न कस्बों और गांवों में सरोवरों के कायाकल्प और विकास की पहल करते हुए, दक्षिणी राज्यों में तैनात भारतीय सेना ने भी राष्ट्रीय हित में योगदान देने का फैसला किया क्योंकि ये अमृत सरोवर जल संचयन और इसके संरक्षण में एक आवश्यक भूमिका निभाएंगे। दक्षिणी कमान की संरचनाओं ने विभिन्न स्थानों पर 75 स्थलों की पहचान की है और विभिन्न सेना प्रतिष्ठानों द्वारा इस पहल की दिशा में जोश और उत्साह के साथ काम किया जा रहा है, जो संबंधित क्षेत्रों में जल संकट को दूर करने में महत्वपूर्ण सहायता करेगा।

यूओएच का रक्षा अनुसंधान के लिए डीआरडीओ के साथ समझौता

प्रभारी कुलपति प्रो. आरएस सर्राजू की उपस्थिति हुआ हस्ताक्षर

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद विश्वविद्यालय (यूओएच) ने डीआरडीओ उद्योग अकादमिक -केंद्र में रक्षा अनुसंधान के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ), रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए।

एमओयू पर कैलाश कुमार पाठक निदेशक, डीएफटीएम, डीआरडीओ मुख्यालय, डीआरडीओ भवन, नई दिल्ली और यूओएच की ओर से रजिस्ट्रार डॉ. देवेश निगम ने प्रभारी कुलपति प्रो. आरएस सर्राजू, डॉ. मनमोहन सिंह की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर वैज्ञानिक 'ई', फ्यूचरिस्टिक टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट के डीआईए, डीआरडीओ मुख्यालय, रक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली, प्रो. एन शिव कुमार, अध्यक्ष, एमओयू समिति और डीन, स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज, डॉ. वी. कामेश्वर राव, निदेशक, एसीआरएचईएम और प्रोफेसर एसएल साबत, निदेशक, आर एंड डी सेल भी उपस्थित रहे।

एमओयू की अवधि 25 वर्षों के लिए है और हर तीन साल के बाद इसकी समीक्षा की जाएगी। इस एमओयू का उद्देश्य डीआईए-सीओई यूओएच उच्च ऊर्जा सामग्री के अनुसंधान कार्यक्षेत्र-डिजाइन और विकास में बहु-विषयक निर्देशित बुनियादी और व्यावहारिक अनुसंधान की सुविधा प्रदान करेगा।

उच्च ऊर्जा सामग्री अनुसंधान उन्नत केंद्र (एसीआरएचईएम) की स्थापना 2005 में हुई थी, तब से यह पूरी तरह से डीआरडीओ द्वारा समर्थित है।

डॉ. वी. कामेश्वर राव, निदेशक, डीआईए-सीओई, यूओएच ने कहा कि केंद्र के पास उच्च ऊर्जा सामग्री (एचईएम) के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास करने के लिए अच्छा बुनियादी ढांचा है। इन सुविधाओं का उपयोग यूओएच और टीआईएफआर जैसे अन्य शैक्षणिक संस्थानों और डीआरडीओ प्रयोगशालाओं द्वारा भी किया गया है। विश्वविद्यालय अपनी अनुसंधान एवं विकास क्षमताओं के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान देने के लिए आश्वस्त है।

जहीराबाद सांसद ने की संसद में बसवेश्वर प्रतिमा स्थापित करने की मांग

संगारेड्डी, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जहीराबाद के सांसद बीबी पाटिल का एक पत्र लोकसभा सचिवालय को भेज दिया है, जिन्होंने प्रधानमंत्री से नए संसद भवन में महात्मा बसवेश्वर की मूर्ति स्थापित करने का अनुरोध किया है। जहीराबाद के सांसद ने 5 जून को प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर प्रतिमा स्थापित करने का अनुरोध किया। पीएमओ ने उचित कार्रवाई की मांग करते हुए पत्र को लोकसभा सचिवालय को भेज दिया है। अपने पत्र में, पाटिल ने कहा कि बसवेश्वर की मूर्ति संसद भवन के गेट नंबर 9 पर स्थित है, जो आगंतुकों के लिए नो-एंट्री ज़ोन है। चूंकि बसवेश्वर लिंगायत समुदाय के बीच एक प्रमुख स्थान रखते हैं, इसलिए उन्होंने कहा कि अगर इसे नए भवन में स्थापित किया जाता है तो समुदाय को मूर्ति देखने की अनुमति मिल जाएगी।

मारवाड़ी युवा मंच पर्ल महिला शाखा सिकंदराबाद ने किया अन्नदान

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। शाखा मंत्री शीतल जैन द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार शाखा अध्यक्षा रक्षा जैन की अध्यक्षता में राष्ट्रीय प्रकल्प जन सेवा के तहत सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन के बाहर राह चलते जरूरतमंद लोगों को इटली और पानी के पैकेट वितरित किए गए, जिसमें 250 लोगों ने भोजन का लाभ लिया। शाखा मंत्री शीतल जैन ने लाभार्थी परिवार शाखा के सदस्या आरती जैन का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संतोष गुजरानी, आरती जैन, लॉर्ड देवी नौलक्खा, डिंपल नौलक्खा का सराहनीय योगदान रहा। शाखा की रक्तदान संयोजिका पूनम बोहरा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

गुरुकुल संस्थाएं अब अन्य राज्यों के लिए आदर्श : मंत्री

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। समाज कल्याण मंत्री कोप्पुला ईश्वर ने कहा कि तेलंगाना में गुरुकुल शैक्षणिक संस्थान अन्य राज्यों के लिए एक आदर्श बन गए हैं और उनकी उपलब्धियां अब देश के लिए गर्व का स्रोत हैं। शुक्रवार को विधानसभा में प्रश्नकाल के दौरान मंत्री ने कहा कि बीआरएस सरकार ने 731 गुरुकुल स्कूल स्थापित किए हैं और उनके रखरखाव के लिए 13,528 करोड़ रुपये से अधिक खर्च किए हैं। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार गरीब छात्रों को ध्यान में रखते हुए हर साल गुरुकुलों को अपग्रेड कर रही है और संस्थानों को डिग्री स्तर तक स्थापित किया गया है। सभी गुरुकुल संस्थानों में छात्रों को कॉर्पोरेट स्कूलों के समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जा रही है। मंत्री ने कहा, कॉलेजों और गुरुकुल संस्थानों में पढ़ने वाले छात्रों को अच्छी नौकरियां मिल रही हैं और अब वे एक सभ्य जीवन जी रहे हैं। मंत्री ने शिक्षा क्षेत्र की उपेक्षा करने और एससी, एसटी, बीसी और अल्पसंख्यक वर्ग के छात्रों को शिक्षा से दूर रखने के लिए पूर्ववर्ती आंध्र प्रदेश की सरकारों की आलोचना की।

रेलवे स्टेशन के पास पेड़ से लटकी मिली युवक की लाश

गाजियाबाद, 4 अगस्त (एजेंसियां)। साहिबाबाद रेलवे स्टेशन के पास गार्डेनिया सोसायटी के पास शुक्रवार सुबह एक युवक की लाश पेड़ से लटकी मिली। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस का कहना है कि प्रारम्भिक जांच पड़ताल में मामला आत्महत्या का लग रहा है। हालांकि मौके से कोई सोसाइड नोट नहीं मिला है। एसीपी साहिबाबाद ने बताया कि मरने वाले युवक की पहचान महेश कुमार पाल के रूप में हुई है। युवक ने आत्महत्या क्योंकि इसकी जांच की जा रही है। किसी सुसाइड नोट के मिलने की बात भी सामने नहीं आई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और आसपास के सीसीटीवी फुटेज की मदद से भी जांच की बात कही जा रही है।

36 महीने पहले मोदी ने देखा था राम मंदिर का सपना

तेजी से हो रहा साकार, पल-पल की ले रहे अपडेट

अयोध्या, 4 अगस्त (एजेंसियां)। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 36 माह पहले यानी 5 अगस्त 2020 में अयोध्या पहुंचे थे इस दौरान देशवासियों को एक बड़ी सौगात देते हुए भव्य राम मंदिर का सपना देखा था आज वह कार्य तेज गति से चल रहा है जिस की पल-पल की रिपोर्ट ले रहे। और अब मंदिर में गर्भगृह व भूतल बनकर तैयार हो गया है। और फिर पीएम मोदी जनवरी 2024 में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा कर भव्य मंदिर का उद्घाटन करेंगे। जिसकी तैयारी ट्रस्ट ने शुरू कर दी है।

1 शिखर 5 गुम्बद वाला बन रहा मंदिर

अयोध्या में भगवान श्री रामलला के भव्य मंदिर का निर्माण हो रहा है। राजस्थान के पत्थरों से मंदिर के भूतल को तैयार कर लिया गया है और 161 फुट ऊंचे 5 गुम्बद वाला अयोध्या का पहला भव्य मंदिर बन रहा है। जिसमें 166 पिलर लगाए गए हैं। इसके साथ ही मंदिर के प्रथम तल का कार्य शुरू हो गया है जिसमें 144 पीलर लगाए जाएंगे और आने वाले 12 माह में इस कार्य को भी पूरा कर लिया जाएगा।

अष्टकोणीय गर्भगृह में विराजमान होंगे रामलला

राम मंदिर के भूतल पर अष्टकोणीय गर्भगृह बनकर तैयार हो गया है। राजस्थान के सफेद संगमरमर से गर्भ ग्रह को सुसज्जित किया गया है जहां पर जनवरी 2024 में रामलला की मूर्ति का प्राण प्रतिष्ठा होगा। तो वही प्रथम तल पर भी अष्टकोणीय गर्भगृह होगा। जहां भगवान राम माता सीता अपने तीनों भाइयों और हनुमान जी के साथ विराजमान हुए और राम दरबार का भव्य दर्शन श्रद्धालु कर सकेंगे।

पीएम मोदी करेंगे राम मंदिर का उद्घाटन

मंदिर की भव्य निर्माण को लेकर श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट हर पल की रिपोर्ट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तक भेज रहे। ट्रस्ट की माने तो जनवरी 2024 में 1 सप्ताह के प्राण प्रतिष्ठा आयोजन के बाद रामलला अपने मूल गर्भगृह पर विराजमान हो जाएंगे। इस दौरान देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी प्राण प्रतिष्ठा के आयोजन में शामिल होंगे और देशवासियों को राम मंदिर का उद्घाटन कर बड़ी सौगात देंगे।

अंसारी रोड बाजार में भीषण आग, चार मंजिला रेस्टोरेंट जलकर खाक

बुलंदशहर, 4 अगस्त (एजेंसियां)। बुलंदशहर में आज सुबह भीषण अग्निकांड हो गया। बुलंदशहर की अंसारी रोड बाजार में भीषण आग लग गई है। इस आग में कई दुकानों के जलकर राख होने की जानकारी है। मौके पर दमकल की कई गाड़ियां पहुंची हैं और आग पर काबू के प्रयास जारी हैं। आग ने देखते ही देखते दर्जनों दुकानों को घेर लिया। आग की सूचना पर पहुंची दमकल को आग को काबू करने में कड़ी मशक्कत करनी पड़ी है। पीड़ितों की मानें तो आग से करीब 50 लाख का सामान जलकर राख हो गया है। अंसारी रोड बाजार में शुक्रवार की तड़के आग एक बैग की दुकान व पड़ोस में स्थित चार मंजिला रेस्टोरेंट में लग गई। आग की चपेट में आकर बैग शो रूम व रेस्टोरेंट स्वाहा हो गए।

किसान की सूझबूझ से प्रयागराज में टला बड़ा रेल हादसा, टूटी पटरी देख लहराया गमछा

प्रयागराज, 4 अगस्त (एजेंसियां)। प्रयागराज में शुक्रवार को एक बड़ा रेल हादसा होने से बच गया। एक किसान की सूझबूझ ने हजारों लोगों की जिंदगी को बचा लिया। प्रयागराज से लखनऊ के बीच चलने वाली गंगा गोमती एक्सप्रेस शुक्रवार को लखनऊ जाते समय हादसे का शिकार होने से बच गई। एक किसान की समझदारी से ट्रेन को टूटी पटरी पर जाने से बचा लिया गया। लाल गोपालगंज के भोला का पूरा के रहने वाले बब्बू किसान हैं। इन्होंने पटरी टूटी देखी तो तुरंत एक्शन लिया। बब्बू के गमछा लहराने से एक बड़ा हादसा होने से बच गया। बब्बू प्रतिदिन की तरह शुक्रवार को धान की फसल देखने के लिए खेत में गए थे। इस दौरान उन्होंने रेल की टूटी पटरी देखी। अचानक प्रयागराज की ओर से गंगा गोमती को आते देखकर वह ट्रेन रोकने के लिए चिल्लाने लगे। सिर में बांधा लाल गमछा खोला और अपने हाथ में थामे डंडे पर उसे बांध कर लहराने लगे। लोको पायलट ने खतरा भांप कर ट्रेन रोकी और जब पटरी का निरीक्षण किया तो पटरी क्रैक मिली। अगर ट्रेन अपनी गति में यहां से गुजरती तो भी एक बड़ा हादसा हो सकता था। बब्बू की समझदारी पर रेलकर्मियों समेत यात्रियों ने उन्हें खूब धन्यवाद दिया। उत्तर रेलवे लखनऊ मंडल के एडीआरएम अश्विनी श्रीवास्तव ने बताया कि लालगोपालगंज और रामचौरा रेलवे स्टेशन के बीच पटरी क्रेक होने की सूचना है।

जहां से सीमा नेपाल से आई भारत

वहां तैनात एसएसबी के दो जवानों को किया गया सस्पेंड

लखनऊ, 4 अगस्त (एजेंसियां)। पाकिस्तान से भारत आई सीमा इन दिनों खूब चर्चा में बनी हुई है। हर रोज उसको लेकर नए खुलासे हो रहे हैं। भारतीय जांच एजेंसियां अभी उसको लेकर जांच कर रहे हैं। जब तक उसे क्लीनचिट नहीं मिल जाती है तब तक उसके भविष्य को लेकर कुछ नहीं कहा जा सकता है। उसे वापस पाकिस्तान भी भेजा जा सकता है और उसे यहां सचिन के साथ रहने की अनुमति भी दी जा सकती है। हालांकि इसी बीच सीमा की वजह से सशस्त्र सीमा बल के दो जवानों को सस्पेंड कर दिया गया है।

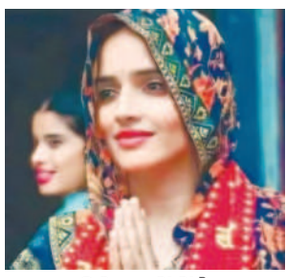

एसएसबी के हाथों में है भारत-नेपाल सीमा की सुरक्षा

भारत-नेपाल सीमा पर एसएसबी के जवानों की तैनाती है। यही जवान नेपाल से भारत आने वाले यात्रियों की सुरक्षा जांच करते हैं। अगर उन्हें कुछ संदिग्ध लगता है तो वह उन्हें भारत में प्रवेश नहीं करने देते हैं। हालांकि इसी बीच सीमा पाकिस्तान से नेपाल के रास्ते अपने 4 बच्चों के साथ भारत आ जाती है लेकिन एसएसबी के जवानों जांच करने के बावजूद उसके बारे में पता नहीं लगा सके थे। अब इसे लेकर ही कार्रवाई की गई है।

इन दो जवानों को किया गया सस्पेंड

जानकारी के अनुसार, सीमा ने जब भारत में प्रवेश किया था, उस समय बस की जांच के लिए जिन 2 जवानों की ड्यूटी सीमा पर लगी हुई थी, उन्हें लापारवाही बरतने के आरोप में निलंबित कर दिया गया है। इसमें एक इंस्पेक्टर और एक हेड कांस्टेबल शामिल है।

मामी के साथ भांजे के अफेयर का खौफनाक अंजाम, पहले महिला को मारी गोली फिर खुद को उड़ाया

मुजफ्फरपुर, 4 अगस्त (एजेंसियां)। बिहार के मुजफ्फरपुर में एक प्रेम कहानी का बुरा अंजाम सामने आया है। यहां एक प्रेमी ने अपनी शादीशुदा प्रेमिका को गोली मार दी। इसके बाद उसने खुद को भी शूट कर लिया। दोनों को स्थानीय लोगों ने अस्पताल में भर्ती कराया जहां उनकी हालत नाजुक बनी हुई है। घटना मुजफ्फरपुर के मुशहरी थाना क्षेत्र का है। महिला लड़के की रिश्ते में मामी है। दोनों को प्रेम प्रसंग 2 साल से चल रहा था। वह मामी के पास पहुंचा था और साथ भागने की जिद करने लगा। मामी नहीं मानी तो उसने सीने में गोली मार दी फिर खुद को भी शूट कर लिया

बिहार: बाहुबली नेता हुलास पांडेय के बेटे ने किया सुसाइड, लाइसेंसी पिस्टल से खुद को मारी गोली

पटना, 4 अगस्त (एजेंसियां)। बिहार के बाहुबली नेता हुलास पांडेय के बेटे ने सुसाइड कर लिया है। पूर्व एमएलसी हुलास पांडेय के बेटे अक्षत पांडेय ने लाइसेंसी पिस्टल से गोली मारकर खुदकुशी कर ली है। ये घटना पटना के शास्त्रीनगर थाना क्षेत्र के राजाबजार का है। लड़के की उम्र 14 साल थी। बाहुबली नेता के बेटे ने आत्महत्या क्यों की इस बात की जानकारी अभी सामने नहीं आई है। परिवार के लोग अभी कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं है। शास्त्रीनगर थाना ने घटना की पुष्टि की है। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। शास्त्री नगर थाने के एसएचओ रमाशंकर सिंह ने कहा कि आत्महत्या की वजह अभी सामने नहीं आई है।

पुलिस मामले की जांच कर रही है। जांच के बाद ही कारणों की जानकारी सामने आएगी। बताया जा रहा है कि खुद को गोली मारने के बाद हुलास पांडेय के बेटे को पटना के पारस अस्पचाल ले जाया गया था। जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। इस घटना के बाद परिजनों में कोहराम मच गया है। परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। हुलास पांडेय को तीन बच्चे हैं। अक्षत पांडेय उनका सबसे बड़ा संतान है। वह अपनी बहन के साथ रहकर बेंगलुरु में पढ़ाई करता था। कुछ दिन पहले ही पटना आया। बताया जा रहा है कि बेंगलुरु से लौटने के बाद वह परेशान रह रहा था। इधर घटना के बाद पटना के एसएसपी राजीव मिश्रा ने कहा है हुलास पांडेय के बेटे ने आत्महत्या क्यों की ये पता नहीं चल पाया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

घुइसरनाथ धाम दर्शन करने जा रहे श्रद्धालुओं की लोडर पलटी, दो युवतियों की मौत

प्रतापगढ़, 4 अगस्त (एजेंसियां)। बाबा घुइसरनाथ धाम दर्शन करने जा रहे श्रद्धालुओं की तीन पहिया लोडर गाड़ी असंतुलित होकर पलट गई। लोडर के नीचे दबने से दो बालिकाओं की मौत हो गई, जबकि दर्जन भर से अधिक श्रद्धालु घायल हो गए। घायलों को स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना लालगंज कोतवाली इलाके के भभौरा गांव के पास हुई। घटना के बाद मौके पर चीख पुकार मची रही। संग्रामगढ़ इलाके से श्रद्धालुओं का एक जत्था तीन पहिया लोडर वाहन पर सवार होकर बाबा घुइसरनाथ धाम दर्शन पूजन के लिए जा रहा था।

बढ़ सकती हैं आजम खान की मुश्किलें

इलाहाबाद एचसी ने जारी किया नोटिस रामपुर कोर्ट से भी रिकॉर्ड तलब

रामपुर, 4 अगस्त (एजेंसियां)। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता आजम खान की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने आजम खान को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। बता दें कि हेट स्पीच मामले में 24 मई 2023 को एडीशनल सेशन जज रामपुर ने आजम खान को बरी कर दिया था। हाईकोर्ट ने एमपी एमएलए स्पेशल कोर्ट रामपुर से रिकॉर्ड तलब किया है।

सपा नेता आजम खान को हाईकोर्ट ने जारी किया नोटिस

उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से दाखिल अपील पर हाईकोर्ट सुनवाई कर रही थी। साल 2022 में मोहम्मद आजम खान के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज हुआ था। आईपीसी की धारा 153 ए, 505 (1) बी और लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 125 के तहत पुलिस ने केस दर्ज किया। एमपी-एमएलए स्पेशल कोर्ट से आजम खान को पहले राहत नहीं दी। पुलिस चार्जशीट पर अदालत ने भड़काऊ भाषण के मामले में आजम खान को 3 साल की सजा सुनाई थी। सजा के खिलाफ आजम खान एमपी-एमएलए स्पेशल कोर्ट में अपील दायर की।

हेट स्पीच केस में रामपुर की स्पेशल कोर्ट से रिकॉर्ड तलब

एडिशनल सेशन जज रामपुर ने आजम खान की अपील को मंजूर करते हुए सजा को रद्द करने का आदेश पारित कर दिया। बरी किए जाने का फैसला आजम खान के लिए राहत भरा था। रामपुर की विशेष अदालत के फैसले को उत्तर प्रदेश सरकार ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में चुनौती दी। राज्य सरकार की अपील पर सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने आजम खान को नोटिस जारी किया। जस्टिस राजवीर सिंह की सिंगल बेंच ने सरकार की अपील पर सुनवाई कर रही थी। हाईकोर्ट ने आजम खान को नोटिस जारी करने के साथ एमपी एमएलए स्पेशल कोर्ट रामपुर से भी रिकॉर्ड तलब किया।

स्कूलों में कोचिंग सेंटर चलाने पर हाईकोर्ट हुआ सख्त, यूपी सरकार व सीबीएसई से पूछे सवाल

प्रयागराज, 4 अगस्त (एजेंसियां)। प्राइवेट स्कूल अपने स्कूलों में कोचिंग सेंटर चला रहे हैं, इसे लेकर एक याचिकाकर्ता ने हाईकोर्ट की ओर रुख किया, जिसके बाद इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सरकार व सीबीएसई से इस पर जवाब मांगा है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने उत्तर प्रदेश सरकार और केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) से पूछा है कि स्कूलों में कोचिंग सेंटर चलाने पर रोक लगाने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं। जानकारी दे दें कि कोर्ट ने पिछले हफ्ते पारित अपने एक आदेश में राज्य सरकार और बोर्ड को 10 दिनों के भीतर अपना जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है और इस मामले में सुनवाई की अगली तारीख 14 अगस्त तय की है।

याचिकाकर्ता ने लगाया गंभीर आरोप

जानकारी दे दें कि जस्टिस एम सी त्रिपाठी और जस्टिस प्रशांत कुमार की बेंच ने मनीष कुमार मिश्रा की ओर दायर याचिका पर यह आदेश पारित किया है। याचिकाकर्ता ने आरोप लगाया है कि राज्य में निजी स्कूलों में कोचिंग सेंटर धड़ल्ले से चलाए जा रहे हैं। याचिकाकर्ता ने उत्तर प्रदेश रेगुलेशन ऑफ कोचिंग एक्ट 2002 का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए अधिकारियों को निर्देश देने की मांग की।

कोचिंग सेंटर चलाने पर रोक

याचिका के मुताबिक, सीबीएसई के 2019 सर्कुलर व राज्य के 2002 एक्ट में स्कूल व कॉलेज भवन परिसर में कोचिंग सेंटर चलाने पर रोक है। सीबीएसई ने संबंधित स्कूलों को अपने परिसर से ऐसी व्यवसायिक गतिविधि चलाने पर विशेष रूप से चेतावनी भी दी थी। सीबीएसई ने स्कूल के समय के दौरान अपने परिसर में समांतर कोचिंग सेंटर चलाने वाले कई स्कूल की शिकायत मिलने के बाद ये सर्कुलर जारी किया था।

यूपी: पाकिस्तान से चित्रकूट पहुंचे दो हिंदू परिवार, सुनाई दर्द भरी दास्तां

बोले- नहीं रुक रहा है दुर्व्यवहार

चित्रकूट, 4 अगस्त (एजेंसियां)। पाकिस्तान में लगातार हिंदुओं का पलायन जारी है। वहां से आकर लोग भारत में शरण ले रहे हैं। ऐसे ही दो परिवार धर्मनगरी चित्रकूट पहुंचे हैं, जो पाकिस्तान से आए हैं। परिवार ने पाकिस्तान में हिंदुओं पर हो रहे जुल्मों की दर्दभरी दास्तां बयां की है। कहा कि वहां हिंदूओं पर अत्याचार नहीं रूक रहा है। जानकारी के अनुसार, दोनों परिवार पाकिस्तान के कराची से चलकर चित्रकूट पहुंचे हैं। पीड़ित परिवारों ने आर्थिक तंगी और अत्याचारों से परेशान होकर पाकिस्तान छोड़ा है। यहां पहुंचकर उन्होंने पाकिस्तान के हालात बताए। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में हिंदुओं के साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा है। दिल्ली के भाटी माइंस से आए परिवारों को चित्रकूट के समाज सेवी ने ही शरण दी है। हालांकि एलआईयू और चित्रकूट पुलिस को पाकिस्तान से आए हिंदू परिवारों की जानकारी नहीं हैं। पाकिस्तानी हिंदू परिवार शिवरामपुर चौकी क्षेत्र के संग्रामपुर में रह रहा है।

मौके पर जानकारी जुटाने पुलिस भी पहुंच गई है। पाकिस्तानी हिंदू परिवार के सदस्यों ने बताचीत में बताया कि पाकिस्तान से आए हिंदू परिवार ने दिल्ली एम्बेसी में वीजा बढ़ाने की एप्लीकेशन दी है। उन्होंने बताया कि बाघा बॉर्डर पार कर हम अमृतसर पहुंचे और वहां से नई दिल्ली आए। वहां से चित्रकूट पहुंचे हैं। पाकिस्तान के हालात बेहद खराब हैं। वहां महंगाई चरम पर है और आम जरूरतें पूरी करना भी मुश्किल है। साथ ही, हिंदूओं पर अत्याचार रुक नहीं रहा है। उन्होंने कहा कि हम भारत सरकार से मांग करते हैं कि हमें जल्द से जल्द नागरिकता दी जाए।

पटना एयरपोर्ट पर इमरजेंसी लैंडिंग

दिल्ली जा रही थी इंडिगो की फ्लाइट, सामने आई वजह

पटना, 4 अगस्त (एजेंसियां)। एयरपोर्ट पर दिल्ली जाने वाली इंडिगो की फ्लाइट 6ई 2433 की शुक्रवार की सुबह इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई। पटना एयरपोर्ट के निदेशक ने इस मामले में पूरी जानकारी देते हुए कहा कि दिल्ली जाने वाली इंडिगो की उड़ान 6ई 2433 ने प्रस्थान के तीन मिनट बाद एक इंजन के निष्क्रिय होने की सूचना दी। यही वजह है कि फ्लाइट के कप्तान ने इमरजेंसी लैंडिंग की सूचना देते हुए अनुमति मांगी।

इसके बाद उड़ान के तुरंत बाद सुरक्षित लैंडिंग कराई गई। बताया जाता है कि दिल्ली जाने वाली इंडिगो की फ्लाइट की सुबह 9 बजकर 11 मिनट पर सुरक्षित लैंडिंग कराई गई है। हवाई अड्डे पर सभी परिचालन सामान्य हैं। इमरजेंसी लैंडिंग सुनकर यात्रियों में थोड़ी बेचैनी बढ़ गई थी। हालांकि सुरक्षित लैंडिंग के बाद सब सामान्य हो गया। दिल्ली जा रही इंडिगो के विमान ने पटना एयरपोर्ट से सुबह 8 बजकर 48 मिनट पर उड़ान भरा था। बताया गया कि इस फ्लाइट में कुल 181 यात्री सवार थे। एयरपोर्ट सूत्रों ने बताया कि जो टेक्निकल प्रॉब्लम था वह सॉल्व हो गया है। हालांकि यह फ्लाइट दिल्ली नहीं जाएगी। यात्रियों को दिल्ली भेजने के लिए लखनऊ से एक फ्लाइट बुलाई जा रही है।

उसी फ्लाइट से सभी यात्रियों को दिल्ली भेजा जाएगा। इसमें कुछ घंटे का वक्त लगेगा। बता दें कि पांच मई को बांग्लादेश की एक फ्लाइट की इमरजेंसी लैंडिंग पटना एयरपोर्ट पर कराई गई थी। लैंडिंग के बाद सभी यात्री फ्लाइट के अंदर ही रहे थे। फ्लाइट बांग्लादेश से काठमांडू जा रही थी, लेकिन किसी पैसेंजर के साथ मेडिकल प्रॉब्लम होने के कारण पटना में फ्लाइट की इमरजेंसी लैंडिंग करानी पड़ी थी।

2024 लोकसभा चुनाव में यूपी में तीसरे मोर्चे के रूप में उभरेगी बीएसपी?

लखनऊ, 4 अगस्त (एजेंसियां)। देश में अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले अब सभी राजनीतिक दलों ने अपनी अपनी बिसात बिछानी शुरू कर दी है। एक तरफ जहां समाजवादी पार्टी के चीफ अखिलेश यादव गैर बीजेपी महागठबंधन बनाने की कवायद में जुटे हैं वहीं दूसरी ओर बसपा की मुखिया मायावती ने यूपी में तीसरे मोर्चे के रूप में अपनी रणनीति बनानी शुरू कर दी है। मायावती के भतीजे आकाश आनंद ने अपने एक ट्वीट में मीडिया के कुछ वर्ग में आई उन खबरों को खारिज किया जिसमें कहा गया था कि लोकसभा चुनाव के लिए बसपा,भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) या अन्य राजनीतिक गठबंधन के साथ गठबंधन कर सकती है। बहुजन समाज पार्टी के राष्ट्रीय समन्वयक आकाश आनंद ने कहा है कि पार्टी 2024 के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में तीसरे मोर्चे के रूप में उभरने के लिए काम कर रही है।

तीसरे मोर्चे के रूप में बसपा को मिल रहा समर्थन

आकाश ने कहा है कि बसपा एक ऐसी पार्टी है जो कांशीराम के आदर्शों पर चल रही है जिनकी एकमात्र सोच समतामूलक समाज की स्थापना करना था। पार्टी प्रमुख मायावती के मार्गदर्शन में बसपा को राज्य की राजनीति में तीसरे मोर्चे के रूप में आम जनता का जबरदस्त समर्थन मिल रहा है। हमारे प्रतिद्वंद्वी निराश हैं। वे भ्रामक खबरें फैलाने के लिए हर हथकंडा अपना रहे हैं। हमें इस मुद्दे पर सावधान रहना चाहिए। गठबंधन को लेकर बसपा का रुख बिल्कुल स्पष्ट है।"

हालांकि यूपी की राजनीति को करीब से जानने और समझने वाले वरिष्ठ पत्रकार कुमार पंकज कहते हैं कि,

बसपा यूपी में अपने लिए रास्ता बनाने में जुटी है। महागठबंधन जैसे जैसे आकार ले रहा है वैसे वैसे बसपा के भीतर बेचैनी बढ़ रही है। अभी हालांकि बसपा यूपी में तीसरे मोर्चे की बात कर रही है लेकिन जैसे जैसे समय आएगा वह देश में तीसरे मोर्चे की संभावनाओं को तलाशने से गुरेज नहीं करेगी।

2024 में अकेले चुनाव लड़ने का दावा

हालांकि बसपा की मुखिया मायावती ने पहले ही दावा किया है कि उनकी पार्टी 2024 का लोकसभा चुनाव अकेले लड़ेगी लेकिन बसपा के सूत्रों ने कहा कि पार्टी विपक्षी दलों की चाल पर भी नजर रख रही है। चुनाव के करीब किसी भी गठबंधन पर अंतिम निर्णय ले सकती है। दरअसल, कांग्रेस समेत 15 विपक्षी दलों की पटना में हुई बैठक के बाद से ही बसपा ने 2024 के चुनाव के लिए कार्ययोजना बनाने की कवायद शुरू कर दी है।

निकाय चुनाव में फेल हुई रणनीति

हाल ही में यूपी शहरी स्थानीय निकाय चुनावों में बसपा ने मुसलमानों और दलितों में पैठ बनाने के लिए सोशल इंजीनियरिंग का प्रयोग किया था। वह प्रयास विफल हो गया था क्योंकि उसके सभी 11 मुस्लिम मेयर उम्मीदवार हार गए थे।

मायावती के पास वोट ट्रांसफर करने की ताकत

बसपा के एक नेता दावे के साथ कहते हैं कि, मायावती एकमात्र नेता हैं जो वोट ट्रांसफर कर सकती हैं और अन्य पार्टियों में चले गए वोटों को वापस भी जीत सकती हैं। उनके नेतृत्व में, बसपा यूपी में एक मजबूत राजनीतिक ताकत है और इसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

यूपी में बसपा चला रही गांव चलो अभियान

इस बीच, बीएसपी यूपी में ग्रामीण मतदाताओं तक पहुंचने के लिए अपना 'गांव चलो अभियान' चला रही है। इसके जरिए पार्टी अपने बूथ और सेक्टर कमेटियों की ताकत का भी आकलन कर रही है। पार्टी के अंदरूनी सूत्रों के मुताबिक, यह पहली बार है जब बसपा विशेष रूप से ग्रामीण मतदाताओं पर ध्यान केंद्रित करते

आसमान से जमीन पर आई हरी मिर्च: 60 रुपये में पाव भर थी, अब किलो भर

गोरखपुर, 4 अगस्त (एजेंसियां)। हरी मिर्च के दाम आसमान से जमीन पर आ गए हैं। एक सप्ताह पहले जो हरी मिर्च 60 रुपये पाव बिक रही थी, वह अब 60 रुपये किलो बिकने लगी है। दाम कम होने से हरी मिर्च ने लोगों को राहत दी है। आठ से 10 दिन पहले दक्षिण भारत से आने वाली हरी मिर्च के बोरे बारिश के कारण भीगे हुए आ रहे थे। मिर्च के भीगने से बोरे में 40 से 50 फीसदी माल खराब निकल रहा था। इतनी बड़ी मात्रा में मिर्च खराब निकलने से व्यापारियों को काफी नुकसान तो हो ही रहा था, उपर से इसके दाम भी बहुत ज्यादा थे। 10 दिनों पूर्व मंडी में हरी मिर्च 160 से 180 रुपये किलो के बीच बिक रही थी। वहीं खुदरा बजार में हरी मिर्च की कीमत 50 से 60 रुपये पाव तक पहुंच गए थे। लेकिन, पिछले एक सप्ताह से दक्षिण भारत के हरी मिर्च उत्पादक राज्य आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में बारिश बंद है। ऐसे में मिर्च की आवक मंडी में इन दिनों बढ़ गई है। वहीं बोरे सूखे होने के कारण माल भी खराब नहीं निकल रहा है।

अमृतसर एयरपोर्ट पर रोकने से भड़के ढेसी

यूके के सांसद बोले-मैं किसानों की आवाज उठाता हूं, इसलिए मुझे रोका गया

अमृतसर, 4 अगस्त (एजेंसियां)। (पंजाब)यूके के सांसद तनमनजीत सिंह ढेसी अमृतसर एयरपोर्ट पर रोके जाने से नाराज हैं। ढेसी ने कहा कि मैंने किसानों के आंदोलन को समर्थन दिया था और हमेशा मानवीय अधिकारों के लिए आवाज उठाता रहा हूं। पंजाबियों के हकों के लिए मैंने हमेशा आवाज बुलंद की है। इस लिए मुझे अमृतसर एयरपोर्ट पर दो घंटे तक रोककर पूछताछ की गई। मेरे समर्थकों, परिवार के लोगों और निकटवर्तियों के सहयोग के कारण मुझे जाने दिया गया। ढेसी ने खुद को एयरपोर्ट पर रोके जाने को लेकर सोशल मीडिया पर संदेश जारी किया है। उन्होंने कहा कि जब पिछली बार मैं भारत आया था तो सभी ने मुझे बहुत प्यार और सत्कार दिया। मेरा काफी मान सम्मान भी किया था। उल्लेखनीय है कि यूके सांसद ढेसी को इमीग्रेशन अधिकारियों ने गुरुवार सुबह श्री गुरु रामदास जी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर रोक लिया था।

वे एयर इंडिया की फ्लाइट संख्या एआई-118 से अमृतसर एयरपोर्ट पहुंचे थे। इमिग्रेशन धिकारियों ने तकरीबन दो घंटे की पूछताछ के बाद उन्हें जाने दिया। इमिग्रेशन अधिकारियों ने सांसद के दस्तावेजों की जांच के दौरान पाया कि उनके पास ओवरसीज सिटीजन आफ इंडिया का कार्ड नहीं था। इसी के चलते इमीग्रेशन अधिकारियों ने उन्हें रोक लिया। ढेसी ने इमीग्रेशन अधिकारियों को बताया कि वह यूके में सांसद हैं। करीब दो घंटों के बाद ढेसी के दस्तावेज पूरे होने के बाद उन्हें एयरपोर्ट से बाहर जाने दिया गया था।

बंगाल: सांसद नुसरत जहां के बाद अब लॉकेट चटर्जी भी फंसी, रोजवैली केस में ईडी से शिकायत

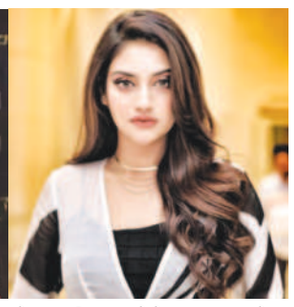

कोलकाता, 4 अगस्त (एजेंसियां)। भाजपा नेता शंकुदेव पांडा ने तृणमूल अभिनेत्री-सांसद नुसरत जहां के खिलाफ करीब 24 करोड़ की धोखाधड़ी के आरोप में ईडी का दरवाजा खटखटाया था। इस बार सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस भाजपा की एक अभिनेत्री-सांसद लॉकेट चटर्जी पर वित्तीय भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए ईडी में शिकायत दर्ज कराई है। बिधाननगर के पार्षद और मेयर पार्षद तुलसी सिंह रॉय ने शुक्रवार सुबह कोलकाता के सीजीओ कॉम्प्लेक्स स्थित ईडी कार्यालय पहुंची। उन्होंने हुगली से भाजपा सांसद लॉकेट चट्टोपाध्याय पर चिटफंड मामले में शामिल होने का आरोप लगाया और निष्पक्ष जांच की मांग की। हालांकि बीजेपी इस मामले में बदले की राजनीति देखती है। पार्टी नेता शंकुदेव पांडा ने दावा किया कि नुसरत जहां पर लगे आरोपों के बाद ध्यान भटकाने के लिए तृणमूल कांग्रेस ने ऐसा किया। उधर, सांसद लॉकेट चटर्जी ने कहा कि वह किसी भी जांच के लिए तैयार हैं। तृणमूल नेता तुलसी ने आरोप लगाया कि लॉकेट चटर्जी को चिटफंड से फायदा हुआ। इसलिए, तुलसी ने लॉकेट चटर्जी के खिलाफ निष्पक्ष जांच करने और उन संपत्तियों की जांच करने की मांग की है जो उनकी आय के अनुरूप नहीं हैं।

लॉकेट चटर्जी के खिलाफ अब ईडी से शिकायत

उन्होंने कहा, "मैं वकीलों और सामाजिक कार्यकर्ताओं की ओर से जांच करने का अनुरोध लेकर ईडी कार्यालय आई थी। ईडी हाल के दिनों में विभिन्न जांचों में शामिल रही है। हमने निष्पक्ष जांच की भी मांग की है। उन्होंने कहा कि बीजेपी सांसद लॉकेट चटर्जी को रोजवैली चिटफंड से फायदा हुआ है। उनकी अघोषित संपत्ति की निष्पक्ष जांच के लिए ईडी से संपर्क किया है। हमारे पास जानकारी है। मैं चाहती हूं कि ईडी जांच करे। जरूरत पड़ने पर हम भी मदद करेंगे बिधाननगर पार्षद का आगे सवाल, "जब ईडी रोज वैली मामले में इतनी जांच कर रही है तो लॉकेट का नाम जांच से बाहर क्यों है?" शंकुदेव देव ने नुसरत जहां के खिलाफ ईडी का दरवाजा खटखटाया था। इस बार शंकुदेव देव ने लॉकेट चटर्जी के खिलाफ शिकायत पर कहा, "नुसरत जहां के बारे में कोई जवाब दिए बिना मुख्यमंत्री ने पिछले दिन संकेत दिया था कि बीजेपी सांसद को निशाना बनाया जाएगा।"

नुसरत जहां के बचाव में उतरीं सीएम ममता बनर्जी

बता दें कि नुसरत जहां ने अपने ऊपर लगे आरोपों को लेकर बुधवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी। उन्होंने सभी आरोपों से इनकार किया। इसके बाद नबन्ना में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में जब नुसरत का मुद्दा उठा तो मुख्यमंत्री ममता बीजेपी पर हमलावर हो गईं और कहा, "सबूत से पहले दोषी करार दिया जा रहा है।" उन्होंने कहा था कि कई डायरेक्टर हैं नुसरत अगर किसी जगह की डायरेक्टर हैं तो ऐसे कई डायरेक्टर हैं। उनका एक सांसद भी है जिसके खिलाफ ईडी में शिकायत है। जो चिटफंड मालिक के साथ विदेश भी गया था। "मैं नाम नहीं बताऊंगी।" बता दें कि शंकुदेव पांडा पिछले सोमवार की शाम कई वरिष्ठ नागरिकों के साथ ईडी के संयुक्त निदेशक के पास गये थे। कथित तौर पर नुसरत की कंपनी ने वरिष्ठ नागरिकों को फ्लैट देने के नाम पर धोखा दिया। पैसा हड़प लिया गया और फ्लैट नहीं दिया गया था।

'बुर्का पहनकर कैंपस में आ जाएं फिर वॉशरूम में बदल लें', विवाद बढ़ा तो कॉलेज ने दिया बयान

मुंबई, 4 अगस्त (एजेंसियां)। मुंबई के चेंबुर और डीके मराठा कॉलेज में शुरु हुआ हिजाब विवाद कॉलेज प्रशासन के बीच के रास्ते के बाद थम गया है। कॉलेज प्रशासन ने हिजाब या बुर्का पहनकर आने वाली छात्राओं को कॉलेज में प्रवेश नहीं देने का फैसला यह कहकर वापस ले लिया है कि छात्राएं बुर्का पहनकर कॉलेज आएं लेकिन फिर उसे वॉशरुम में बदल लें। कॉलेज प्रशासन का कहना है कि 8 अगस्त से वह अपने संस्थान में यूनिफॉर्म पॉलिसी पूरी कड़ाई के साथ लागू कर देगा। कॉलेज प्रशासन ने कहा कि कोई भी छात्र-छात्रा कैंपस में बिना ड्रेस के प्रवेश नहीं कर सकेगा। कॉलेज प्रशासन ने एक नॉटिफिकेशन जारी किया था। इस नॉटिफिकेशन में उन्होंने कहा था कि सभी छात्रों को कैंपस में निर्धारित यूनिफार्म पहन कर ही आना होगा। जिस पर मुस्लिम समुदाय की छात्राओं ने अपनी मजबूरियां गिनाईं थी इन छात्राओं ने कहा कि हम यूनिफॉर्म पहनने के विरोध में नहीं हैं। उन्होंने कहा, कॉलेज प्रशासन को हमारी स्थिति समझते हुए हमें बुर्का कॉलेज तक पहन कर आने दें जिसको हम कॉलेज आने के बाद वॉशरूम में बदल लेंगे।

छात्राओं की इस बात को पहले कॉलेज ने मानने से इंकार कर दिया लेकिन विरोध बढ़ने के बाद वह इस बात पर सहमत हो गया। बुर्का पहने लड़कियों ने बताया कि उनकी नई पोशाक अब क्रीम कलर का कुर्ता होगी साथ ही उनके सलवार का रंग नीले रंग का होगा। 11वीं कक्षा के छात्रों ने अभी तक कॉलेज शुरू नहीं किया है लेकिन 12वीं कक्षा के छात्रों ने इस ड्रेस को पहनना शुरू कर दिया है। हालांकि अभी भी छात्राओं का एक वर्ग इस बात की मांग कर रहा है कि उनको स्कूल में भी बुर्का पहनने की इजाजत दी जाए।

बेहाला में ट्रक की टक्कर में पिता-बेटे की मौत, भीड़ ने फूंके वाहन

कोलकाता, 4 अगस्त (एजेंसियां)। पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में शुक्रवार सुबह एक सड़क हादसे के बाद बवाल हो गया है। हादसे से गुस्साए लोगों ने पुलिस के वाहन को फूंक दिया है। भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पुलिस ने आंसू गैस के गोले छोड़े और लाठीचार्ज किया। बताया जा रहा है कि बेहाला में स्कूल जाते समय छात्र और उसके पिता को एक ट्रक ने टक्कर मार दी। हादसा तब हुआ जब छात्र स्कूल में प्रवेश कर रहा था। ट्रक की टक्कर में छात्र और उसके पिता की मौत हो गई। वहीं, हादसे के बाद इकट्ठा हुए लोगों में आक्रोश फैल गया। गुस्साई भीड़ ने सड़क जाम कर दिया। लोग डायमंड हार्बर रोड पर जाम लगाकर प्रदर्शन करने लगे।

35 शव और सड़कों पर हुजूम, मणिपुर में फिर क्यों भड़क गई हिंसा

इंफाल, 4 अगस्त (एजेंसियां)। मणिपुर में एक बार फिर माहौल तनावपूर्ण हुआ है और गुरुवार को चुराचांदपुर में 35 लोगों के शव को सामूहिक रूप से दफन करने की कोशिश के बीच हिंसा भड़क गई। चुराचांदपुर और विष्णुपुर के बॉर्डर पर बीते दिन सुरक्षाबलों और लोगों के बीच हिंसा हुई, इस दौरान पत्थरबाजी हुई और आंसू गैस के गोले भी छोड़े गए।

आखिर यह क्यों हुआ और हाईकोर्ट ने इस मामले में क्या दखल दिया, समझिए

आईटीएलएफ ने कुकी-जोमी समुदाय के कुल 35 शवों को एक साथ दफनाने की बात की थी। इस संगठन ने चुराचांदपुर जिले के एस. बोलजांग गांव के एक मैदान में शव दफनाने की बात कही गई थी, लेकिन पुलिस की ओर से ऐसा ना करने की अपील की गई थी। गुरुवार सुबह से लोगों का इस मैदान में जाने का सिलसिला शुरू हुआ और हालात बिगड़ना भी शुरू हो गए। फोर्स ने लोगों को इस इलाके की ओर आने से रोका था, जिसके बाद भीड़ ने बड़ी संख्या में विरोध किया और पत्थरबाजी की। बाद में सुरक्षाबलों ने हवाई फायरिंग की और आंसू गैस के गोले भी छोड़े गए। इस नए बवाल ने राज्य में फिर से माहौल को गर्म कर दिया है।

केंद्र सरकार ने दिया आश्वासन

35 शव को दफनाने की खबर ने जब माहौल गर्म किया, तब मणिपुर हाईकोर्ट ने इस मामले में दखल दिया। हाईकोर्ट ने प्रस्तावित अंत्येष्टि स्थल पर यथास्थिति बनाने के निर्देश दिए थे। सिर्फ हाईकोर्ट ही नहीं बल्कि केंद्रीय गृह मंत्रालय ने भी हालात को काबू करने की कोशिश की, गृह मंत्रालय की अपील के बाद आईटीएलएफ ग्रुप ने सात दिन के लिए अंत्येष्टि के कार्यक्रम को आगे बढ़ा दिया। केंद्र ने आश्वासन दिया है कि 35 शवों को दफनाने की मांग पर जल्द ही फैसला लिया जाएगा। संगठन ने जब कुकी-जोमी समुदाय के 35 शवों को दफनाने की बात कही थी, तभी इसको लेकर चेतावनी दी गई थी कि ऐसा होने से हिंसा भड़क सकती है।

जब गुरुवार को यहां लोगों का पहुंचना शुरू हुआ, तभी पत्थरबाजी और पुलिस से हथियार लूट लिए गए थे। गौरतलब है कि मणिपुर में पिछले करीब तीन महीने से हिंसा हो रही है। मैतई और कुकी समुदाय के बीच जारी जातीय संघर्ष ने 3 मई को हिंसा का रूप ले लिया। 3 मई को एक मार्च निकला जिसके बाद हिंसा शुरू हो गई थी और अबतक इस हिंसा में 160 से अधिक लोगों की मौत हो गई। मणिपुर के मसले पर सड़क से लेकर संसद और कोर्ट तक बहस चल रही है।

लगातार हो रही बारिश से कई गांव डूबे, एसडीआरएफ ने शुरू किया रेस्क्यू

कलेक्टर ने स्कूलों की छुट्टी घोषित की

दमोह, 4 अगस्त (एजेंसियां)। दमोह जिले में 24 घंटे से लगातार हो रही बारिश के कारण चारों ओर जनजीवन प्रभावित हो रहा है। नदियों के उफान पर होने के कारण गांव डूब क्षेत्र में आ रहे हैं। पुलिस के साथ मिलकर एसडीआरएफ के जवान बोट के सहारे ग्रामीणों को सुरक्षित स्थानों पर ले जा रहे हैं। वहीं 24 घंटे से लगातार हो रही बारिश के चलते कलेक्टर ने स्कूलों की एक दिन की छुट्टी कर दी है। हिंडोरिया थाना अंतर्गत व्यारमा नदी के किनारे बसे ग्राम घाट पिपरिया के बंगला मोहल्ला में पुल के नीचे जाकर केवट समाज के 50-60 लोगों को पुलिस के द्वारा सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया और गांव- गांव में भ्रमण करके सभी ग्रामीणों को सतर्क रहने की सलाह दी गई। बांदकपुर के अंतर्गत आने वाले ग्राम खरेड़ा के नाले में भराव होने के कारण पुलिस बल तैनात है।

दमोह के कुम्हारी थाना के गांव चीलघाट में नदी में तेज बहाव के कारण खेत में बने घरों में पानी भर गया। पानी में फंसे दंपति उज्यार सिंह एवं मीरा बाई लोधी, बहादुर लोधी को कुम्हारी पुलिस व एसडीआरएफ टीम ने सुरक्षित बाहर निकाला। सिंगरामपुर चौकी के अंतर्गत ग्राम सहसना में कटाव नदी के बीच तेज बहाव में फंसी महिला को रेस्क्यू कर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया है।

बीजेपी विधायक के बेटे ने आदिवासी युवक पर चलाई गोली, जाँच में जुटी पुलिस

सिंगरौली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश में आदिवासियों पर अत्याचार की घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं। सीधी पेशाबकांड के पश्चात अब सिंगरौली में बीजेपी एमएलए रामलल्लू वैश्य के बेटे की दबंगई का एक नया मामला सामने आया है। सिंगरौली में बीजेपी एमएलए के बेटे विवेक वैश्य ने एक आदिवासी युवक को गोली मारकर चोटिल कर दिया। घटना के पश्चात आरोपी मौके से फरार हो गया। पुलिस ने आरोपी पर मुकदमा दर्ज कर अपराधी की तलाश आरम्भ कर दी है। मामला सिंगरौली जिले के मोरवा थाना इलाके का है, जहां पर मामूली विवाद को लेकर सिंगरौली के एमएलए रामलल्लू वैश्य के बेटे विवेक वैश्य ने क आदिवासी युवक को गोली मार दी। घटना बूढ़ी माई मंदिर के पास बृहस्पतिवार शाम साढ़े 6 बजे घटित हुई। विधायक के बेटे का पीड़ित सूर्य प्रकाश खैरवार के भाई से विवाद हुआ था तथा वो बीच-बचाव करने गया था तभी विधायक के बेटे ने उस पर गोलीबारी कर दी, जिससे हाथ में गोली लगने से वह घायल हो गया। गोली चलने की आवाज सुनकर आसपास के ग्रामीण भी मौके पर पहुंच गए, तब तक अपराधी विवेक वैश्य मौके से फरार हो गया। वही इस घटना के बाद चोटिल युवक सूर्य प्रकाश खैरवार को तुरंत पास के चिकित्सालय में भर्ती कराया गया, जहां उसका उपचार जारी है। घटना की खबर प्राप्त होते ही पुलिस तुरंत चिकित्सालय पहुंची, लेकिन वारदात के 4 घंटे बाद भी एफआईआर लिखे जाने में पुलिस द्वारा हीला-हवाली की जाती रही।

कैमरों की नजर से नहीं बच पाए ट्रैफिक नियम तोड़ने वाले वीआईपी, केरल में 19 विधायकों और 10 सांसदों का कटा चालान

तिरुवनन्तपुरम, 4 अगस्त (एजेंसियां)। जैसे-जैसे सड़कों पर गाड़ियों की संख्या में इजाफा हो रहा है, वैसे ही ट्रैफिक नियम भी सख्त और आधुनिक होते जा रहे हैं। केरल में इसका उदाहरण देखने को मिला है, जहां आम आदमी के अलावा कई विधायकों और सांसदों के भी चालान कट गए। दरअसल ये चालान पुलिस ने नहीं, बल्कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लैस कैमरों ने किए हैं। कैमरों की नजरों से आम आदमी तो क्या वीआईपी भी नहीं बच पाए। केरल की एलडीएफ सरकार की तरफ से ये जानकारी दी गई। दरअसल केरल में 'सुरक्षित केरल' परियोजना के तहत सड़कों पर यातायात उल्लंघन की निगरानी के लिए जगह-जगह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस वाले कैमरे लगाए गए हैं। जो ट्रैफिक

नियमों का उल्लंघन करने वालों के घरों तक भारी भरकम चालान पहुंचाने का काम कर रहे हैं। सरकार ने इसे अपनी एक बड़ी कामयाबी के तौर पर पेश किया है।

सभी वाहनों पर लगाया जुर्माना

राज्य सरकार ने कहा कि इन कैमरा की मदद से राज्य में सड़क दुर्घटनाओं और उसमें जान गंवाने वाले लोगों की संख्या में कमी आई है। केरल के परिवहन मंत्री एंटनी राजू ने बताया कि लोगों में ऐसी आमधारण रही है कि वीआईपी वाहनों को ट्रैफिक नियमों के उल्लंघन के लिए जुर्माना भरने से छूट दी जाती है, लेकिन केरल में ऐसा नहीं है। उन्होंने बताया कि ये कैमरा सभी वाहनों को दर्ज करते हैं और इससे फर्क नहीं पड़ता कि वे किस राज्य में रजिस्टर्ड हैं या किस वीआईपी शख्स के हैं। कैमरे की पैनी नजरों में आने वाले सभी वाहनों पर जुर्माना लगाया गया है।

इतने विधायकों और सांसदों का कटा चालान

राज्य के परिवहन मंत्री ने बताया कि इस साल जुलाई में विधायकों की गाड़ियों ने 19 बार और सांसदों के वाहनों ने 10 बार यातायात का उल्लंघन किया, जिन्हें कैमरों ने कैप्चर कर लिया। जिसके बाद सभी के खिलाफ चालान जारी कर दिए गए हैं। उन्होंने बताया कि एक सांसद के वाहन को छह बार यातायात का उल्लंघन करते हुए पकड़ा गया जबकि एक विधायक के चार पहिया वाहन ने सात बार यातायात का उल्लंघन किया। हालांकि इन विधायकों और सांसदों के नाम सार्वजनिक नहीं किए गए।

एचसी के फैसले पर एससी ने मुख्य सचिव के निलंबन पर रोक लगाया

अंडमान के एलजी पर भी जुर्माना लगाने का दिया था आदेश

नई दिल्ली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को कलकत्ता हाई कोर्ट की पोर्ट ब्लेयर बेंच के एक आदेश पर अंतरिम रोक लगा दी है। दरअसल, हाई कोर्ट ने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के मुख्य सचिव केशव चंद्रा को निलंबित करने और श्रमिकों को लाभ जारी करने पर पहले के आदेश का पालन नहीं करने के लिए उपराज्यपाल डीके जोशी पर 5 लाख रुपये का जुर्माना लगाने के कलकत्ता उच्च न्यायालय के आदेश पर रोक लगा दी। मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने मुख्य सचिव और उपराज्यपाल की ओर से पेश अटॉर्नी जनरल आर वेंकटरमणी की दलीलों पर ध्यान दिया और उच्च न्यायालय की पोर्ट ब्लेयर पीठ के आदेश पर रोक लगा दी। पीठ ने कहा, हम इन दिशा-निर्देशों पर कायम रहेंगे। आप (याचिकाकर्ता) इसे पाने के लिए न्यायाधीशों को वास्तव में नाराज कर चुके होंगे। हम इसे अगले शुक्रवार को रख रहे हैं। पिछले साल 19 दिसंबर को पारित एक आदेश ने द्वीप प्रशासन द्वारा नियोजित लगभग 4,000 दैनिक रेटेड मजदूरों (डीआरएम) को उच्च वेतन और डीए प्रदान किया था। भारत के अटॉर्नी जनरल, आर वेंकटरमणी ने कलकत्ता उच्च न्यायालय की पोर्ट ब्लेयर पीठ के आदेश के खिलाफ एक अपील का उल्लेख किया।

लापता सेना का जवान जावेद अहमद वानी को जम्मू-कश्मीर पूलिस ने ढूँढ़ निकाला

जम्मू, 4 अगस्त (एजेंसियां)। कश्मीर के कुलगाम जिले से पिछले हफ्ते लापता हुआ सेना का एक जवान जावेद अहमद वानी मिल गया है। इस खबर को सुनकर वानी के घर में खुशी का माहौल है। दूसरी तरफ वानी की मेडिकल जांच कराये जाने के बाद उससे पूछताछ की जा रही है। हम आपको बता दें कि लद्दाख में तैनात जावेद अहमद वानी गत शनिवार को अपने पैतृक स्थान कुलगाम जिले से उस समय लापता हो गए, जब वह छुट्टी पर आए थे। उनकी तलाश में सेना और पुलिस की ओर से लगातार अभियान चलाया जा रहा था। इस अभियान की सफलता की खबर तब सामने आयी जब गुरुवार को कश्मीर के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (एडीजीपी) विजय कुमार ने एक ट्वीट में कहा, "सेना के लापता जवान को कुलगाम पुलिस ने ढूंढ़ लिया है। मेडिकल जांच के तुरंत बाद संयुक्त रूप से पूछताछ शुरू होगी। आगे की जानकारी दी जाएगी।" हम आपको बता दें कि पुलिस ने जावेद अहमद वानी के लापता होने के संदर्भ में पूर्व में कोई विवरण नहीं दिया था, लेकिन आशंका थी कि आतंकवादियों ने उनका अपहरण कर लिया है। वानी की कार गत शनिवार शाम को पारनहॉल में मिली थी जिसके बाद उनका पता लगाने के लिए सुरक्षा बलों ने बड़े पैमाने पर तलाश अभियान शुरू किया था। इस बारे में जम्मू-कश्मीर के पुलिस महानिदेशक दिलबाग सिंह ने अभी दो दिन पहले ही कहा था कि पुलिस और सुरक्षा बलों को कुलगाम जिले से लापता सेना के जवान के सुराग मिले हैं और उन्हें विश्वास है कि जल्द ही जवान का पता लगा लिया जाएगा। बताया जा रहा है कि जांच दलों ने इस मामले के संबंध में कुछ संदिग्धों से पूछताछ भी की थी।

हम आपको यह भी बता दें कि जावेद अहमद वानी को लद्दाख क्षेत्र में तैनात किया गया था और उसे रविवार से अपनी ड्यूटी पर लौटना था लेकिन वह शनिवार शाम से लापता हो गया था। उसके लापता होने के बाद उसके पिता ने अपहरणकर्ताओं से उसे छोड़ने की अपील की थी क्योंकि वह परिवार में अकेला कमाने वाला है। वानी के पिता मोहम्मद अयूब वानी ने संवाददाताओं से कहा था कि मैं सभी भाइयों से उसे (बेटे को) जीवित छोड़ने की अपील करता हूं। अगर उसने किसी को परेशान किया है तो मैं माफी मांगता हूं। अगर वो चाहते हैं तो मैं उसकी नौकरी छुड़वा दूंगा।' हम आपको यह भी बता दें कि छुट्टी के दौरान कश्मीर में लापता होने वाला वानी चौथा जवान था। इससे पहले आतंकवादियों ने मई 2017 में लेफ्टिनेंट उमर फैयाज का शोपियां जिले में उनके चाचा के घर से अपहरण कर लिया था, जहां वे एक शादी में शामिल होने गए थे। फैयाज की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इसी तरह, आतंकवादियों ने सेना के जवान औरंगजेब को अगवा कर लिया था जब वह जून 2018 में पुलवामा जिले से अपने घर पूंछ जा रहा था। आतंकवादियों ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी थी और इसका वीडियो जारी किया था। एक अन्य जवान समीर मल्ला का भी आतंकवादियों ने मार्च 2022 में अपहरण कर लिया था

'बॉर्डर क्रॉस करने की कोशिश में पाकिस्तानी घुसपैठिया ढेर, सर्च ऑपरेशन जारी

जम्मू, 4 अगस्त (एजेंसियां)। बीएसएफ ने भारत-पाकिस्तान सीमा पर एक घुसपैठिए पर तब 5 राउंड फायरिंग की जब वह भारतीय सीमा पर फेंसिंग काट कर घुसने की कोशिश कर रहा था। बीएसएफ ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि इस घटना के बाद उनकी एक टुकड़ी इस इलाके में सर्च ऑपरेशन चलाएगी। बीएसएफ ने अपनी विज्ञप्ति में कहा कि आज सुबह 4 अगस्त को 3 बजकर 50 मिनट पर बीएसएफ कर्मचारी ने बार्डर आउट पोस्ट खारला बैरियर पर कुछ संदिग्ध गतिविधी देखी। जब गौर से देखा गया तो पता चला कि एक व्यक्ति फेंसिंग काट कर हमारी (भारत) सीमा में दाखिल होने की कोशिश कर रहा है। ऐसा होता देखकर सुरक्षा में तैनात संतरी ने इस घुसपैठिए को लक्ष्य करके 5 राउंड फायरिंग की। इस घटना के बाद हमने इस इलाके में शुक्रवार (4 अगस्त) की सुबह 8 बजे से सर्च ऑपरेशन चला दिया है।

भारत से बातचीत करना चाहता है पाकिस्तान

एक तरफ जहां रोजाना भारत-पाकिस्तान सीमा पर आतंकी रोज घुसपैठ की कोशिश करते हैं तो वहीं पाकिस्तान अब भारत के साथ दोस्ती करना चाहता है। मंगलवार (1 अगस्त) को पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने कहा था गंभीर और लंबित मुद्दों के समाधान के लिए वह भारत के साथ बातचीत करना चाहते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि दोनों देशों के लिए युद्ध कोई विकल्प नहीं है।

पाकिस्तान के बातचीत की पेशकेश के प्रस्ताव पर पाकिस्तान ने कहा कि सामान्य संबंधों के लिए आतंक और शत्रुता से मुक्त वातावरण बहुत जरूरी है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा कि भारत, पाकिस्तान सहित सभी पड़ोसी मुल्कों के साथ सामान्य संबंध चाहता है और इसके लिए माहौल तैयार करना इस्लामाबाद पर निर्भर करेगा। भारत और पाकिस्तान के बीच पीओके और सीपीईसी को लेकर गहरे मतभेद हैं और इसी को लेकर दोनों देशों में तनाव बना रहता है। आजादी के बाद से दोनों देश एक दूसरे के साथ तीन युद्ध लड़ चुके हैं। वहीं, पाकिस्तान ने कई आतंकी गतिविधियों को भारत की सरजमीं पर अंजाम दिलवाया है। इस लिए एक भौगोलिक सीमा से जुड़े होने के बावजूद दोनों देशों के संबंध सामान्य नहीं हो सके हैं।

डिग्रियां बांटने वाले फर्जी संस्थान

देश में बेलगाम आबादी के अनुपात में सरकारी विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों की कितनी कमी है, यह किसी से छिपा नहीं है। इसी का लाभ उठा कर लगभग बीस फर्जी विश्वविद्यालयों ने छात्रों से ठगी कर जम कर फर्जी डिग्रियां बांट कर अकूत धन कमाया है। हाल ही में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने ऐसे बीस फर्जी विश्वविद्यालयों की सूची जारी करते हुए कहा कि इनकी डिग्रियां पूरे देश में कहीं भी मान्य नहीं होंगी। बता दें कि इसके पहले भी कई बार इस तरह से चल रहे फर्जी विश्वविद्यालयों का भंडाफोड कर उन्हें फर्जी घोषित किया जा चुका है। इसके बाद भी उन पर कोई कार्रवाई नहीं की जा सकी। नतीजतन होनहाल छात्र इनकी ठगी का शिकार होते रहे। एक समय था, जब छत्तीसगढ़ में विश्वविद्यालयों की बाढ़-सी आ गई थी। एक-एक कमरे से विश्वविद्यालय का संचालन होता था। तब सौ से ऊपर विश्वविद्यालयों को फर्जी करार दिया गया था। इसके अलावा भी कई मौकों पर विश्वविद्यालय और मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय यानी डीम्ड यूनीवर्सिटी की तख्ती टांग कर डिग्रियां बांटने वाले संस्थान खुलेआम अपनी कारगुजारी करते रहे। इस बार जिन बीस विश्वविद्यालयों को फर्जी बताया गया है, उनमें से सबसे अधिक आठ तो सिर्फ देश की राजधानी दिल्ली में चल ही रहे हैं। इसी तरह उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल में भी फर्जी विश्वविद्यालयों की पहचान की गई है। अब यूजीसी के फैसले के बाद इनकी डिग्रियां बेकार हो गई हैं। इन विश्वविद्यालयों के डिग्रीधारी कहीं दाखिला भी नहीं पा सकेंगे और न ही किसी नौकरी के काबिल रह गए हैं। न जाने कितने युवाओं का भविष्य इन विश्वविद्यालयों ने अंधकारमय बना दिया है। उनके धन और समय की बर्बादी हुई अलग से। सबको मालूम है कि फर्जी विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थान गली-गली इसलिए उग आते हैं आबादी के अनुपात में शैक्षणिक संस्थान बहुत कम हैं। निजी पूंजी से चल रहे पांच सितारा विश्वविद्यालयों और संस्थानों में फीस इतनी तगडी होती है कि उसे वहन कर पाना सामान्य आयवर्ग के बूते की बात नहीं है। जाहिर है ऐसे में हर साल लाखों विद्यार्थियों के सामने संकट साल बर्बाद होने का संकट खडा हो जाता है। छात्रों की परेशानी को देखते हुए विश्वविद्यालयों ने पत्राचार के माध्यम से पढ़ाई की सुविधा भी उपलब्ध करा रखी है, देश में कई जगह मुक्त विश्वविद्यालय भी खोले गए हैं। फिर भी बहुत सारे विद्यार्थियों को लगता है कि संस्थानों में नियमित पढ़ाई के बगैर भविष्य में तरक्की असंभव है। मुक्त विश्वविद्यालयों और पत्राचार से हासिल डिग्री को नौकरियों में हिकारत भरी नजरों से देखा जाता है। आजकल आम धारणा बन चुकी है कि बगैर तकनीकी शिक्षा की डिग्री के रोजगार हासिल करना मुश्किल ही रहेगा। ऐसे में परिवार वाले भी चाहते हैं कि उनके बच्चे किसी न किसी विश्वविद्यालय या संस्थान से तकनीकी शिक्षा की डिग्री हासिल कर रोजगार पा लें। अभिभावकों और विद्यार्थियों की इन्हीं चिंताओं का लाभ ये फर्जी विश्वविद्यालय के कर्ता-धर्ता उठाते हैं। विश्वविद्यालय खोलने के लिए कुछ नियम-कायदे तय हैं। सरकारी विश्वविद्यालय खोलने के लिए संसद या विधानसभा में प्रस्ताव पारित कराना पड़ता है। निजी विश्वविद्यालयों को परिसर, कक्षाओं, सभागारों, प्रयोगशालाओं आदि का नक्शा पास कराना पड़ता है। उनके लिए कम से कम आकार आदि तय हैं। सबकुछ ठीक रहा तो पाठ्यक्रमों को मान्यता प्रदान की जाती है, उसके लिए भी अध्यापकों आदि की योग्यता देखी जाती है। मगर इतनी तकनीकी बारीकियां सामान्य लोगों को कहां पता होती है। इसलिए आमतौर पर फर्जी विश्वविद्यालय निम्न आयवर्ग और कम पढ़े-लिखे परिवारों के बच्चों को आकर्षित करने का प्रयास करते हैं। इसके अलावा ऐसे बच्चे भी उनके झांसे में आ जाते हैं, जिन्हें कहीं और दाखिला नहीं मिल पाता। ऐसे में यक्षप्रश्न तो यही है कि ऐसे विश्वविद्यालय बरसों तक फर्जीवाड़ा कर उसे कैसे चलाते रहते हैं और प्रशासन की उन पर नजर भी नहीं जा पाती। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग जब तक उन पर नकेल कसता है, तब तक वे बहुत सारे युवाओं का भविष्य चौपट कर चुके होते हैं।

खराब जीवन शैली के कारण लोगों में बढ़ रही हैं डायबिटीज

अमरपाल सिंह वर्मा

भिन्न बीमारियां समूचे विश्व में चिंता का विषय बनी हुई हैं। विभिन्न स्तरों पर बीमारियों की चुनौतियों से जूझने के प्रयास हो रहे हैं लेकिन बीमारियों के रूप में नित=नए खतरे सामने आ रहे हैं। दुनिया में संक्रामक रोग तो चिंता की वजह बने ही हैं, इसके साथ-साथ अब नॉन कम्युनिकेबल डिजीज (एनसीडी) अर्थात गैर-संचारी रोग भी चुनौती बनते जा रहे हैं। मानव स्वास्थ्य को जितना खतरा जीवन शैली से जुड़े गैर संचारी रोगों से है, उससे ज्यादा खतरा इस बात से है कि समुदाय में गैर संचारी रोगों को उतनी गंभीरता से नहीं लिया जा रहा है, जितनी गंभीरता से लिया जाना चाहिए। गैर संचारी रोगों के कारण आम लोगों की जिंदगी दांव पर लगी हुई है। यह स्थिति तब है, जब विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ)अपनी एक रिपोर्ट में बता चुका है कि दुनिया में कुल होने वाली मौतों में से प्रति वर्ष 75 प्रतिशत मौतें गैर-संचारी रोगों के कारण होती हैं। गैर संचारी रोग जिस तेजी से बढ़ रहे हैं और जितनी बड़ी तादाद में मौतों की वजह बन रहे हैं, वह निश्चय ही चिंता का विषय होना चाहिए। इस बारे में आम लोगों को जागरुक किया जाना चाहिए ताकि वह इससे बच सकें। डब्ल्यूएचओ ने वर्ष 2022 तक विश्व के जो स्वास्थ्य आंकड़े हासिल किए हैं, उनसे यह पता चलता है कि गैर संचारी रोगों का कितना बड़ा खतरा मंडरा रहा है यानी यह रोग जिंदगियों, स्वास्थ्य प्रणालियों, समुदायों, अर्थ व्यवस्थाओं और समाज को लगातार और बहुत बड़ा नुकसान पहुचा रहे हैं। डब्ल्यूएचओ ने चेताया है कि कुल स्वास्थ्य प्रगति के बावजूद गैर संचारी रोगों की वजह से हो रहे भारी नुकसान के बड़े खतरे हैं। अगर यही चलन जारी रहा तो वर्ष 2050 तक हृदय संबंधी बीमारियों, कैंसर, डायबिटीज और सांस संबंधी बीमारियां हर साल होने वाली लगभग नौ करोड़ मौतों में से 86 प्रतिशत के लिए जिम्मेदार होंगी। डब्ल्यूएचओ मानव स्वास्थ्य पर मंडराते खतरों से आगाह करते हुए समय-समय पर विश्लेषणात्मक रिपोर्ट जारी करता है। ऐसी रिपोर्ट जारी करने के पीछे उद्देश्य यही होता है कि लोग इस बारे में ज्यादा से ज्यादा जानें और जागरुक हो कर बीमारी से बचने के कदम उठाएं लेकिन अफसोस का विषय है कि स्वास्थ्य से जुड़ी ऐसी महत्वपूर्ण रिपोर्टें अखबारों के किसी कोने में दबकर रह जाती हैं। इनकी ओर जितना ध्यान जाना चाहिए, वह नहीं जाता है। गैर संचारी रोगों के मामले में भारत की स्थिति भी चिंताजनक है। यहां लोगों में डायबिटीज, हार्ट डिजीज, कैंसर, फेफड़ों से संबंधित बीमारियां बढ़ रही हैं। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक भारत में 2019 में हुई कुल मौतों में से 66 प्रतिशत मौतों के लिए गैर संचारी रोग ही जिम्मेदार रहे। डायबिटीज, हार्ट डिजिज, कैंसर, फेफड़ों से संबंधित ये रोग संक्रामक नहीं हैं, फिर भी बढ़ रहे हैं और मौत का कारण बन रहे हैं। तम्बाकू एवं शराब पीने, शारीरिक गतिविधियों का अभाव और अच्छे आहार की कमी ऐसे मुख्य कारण हैं, जिनकी वजह से लोगों का जीवन जोखिम में पड़ रहा है। डॉक्टर देश में फैल रहे गैर संचारी रोगों की मुख्य वजह खराब जीवन शैली को मानते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि बच्चों एवं बड़ों में बढ़ते मोटापे के कारण उन बीमारियों का जोखिम बढ़ रहा है, जो जीवन शैली से जुड़ी हुई हैं। लोग पैदल चलना ही छोड़ गए हैं। आरामतलब जीवन उन्हें एक स्थान पर पड़े रहने का आदी बना रहा है। समय-समय पर जांच के अभाव में लोगों को इन बीमारियों की भनक भी नहीं पड़ पाती।

सेमीकंडक्टर प्रोडक्शन में भारत बनेगा ग्लोबल सेंटर !

सुनिल महला

भारत सेमीकंडक्टर (अर्धचालक) प्रोडक्शन (उत्पादन) में अपने कदम आगे बढ़ा रहा है। यह वाकई अत्यंत ही काबिलेतारिफ है कि भारत सरकार हमारे देश को सेमीकंडक्टर प्रोडक्शन में ग्लोबल सेंटर बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। सर्वप्रथम हमें यह जानने की जरूरत है कि आखिर सेमीकंडक्टर होते क्या हैं और उनका उपयोग क्या है ? तो इस संबंध में जानकारी देना चाहूंगा कि अर्धचालक (सेमीकंडक्टर) या एडवांस्ड माइक्रोचिप उन पदार्थों को कहते हैं जिनकी विद्युत चालकता चालकों (जैसे ताँबा) से कम किन्तु अचालकों (जैसे कांच) से अधिक होती है। सिलिकॉन, जर्मेनियम, कैडमियम सल्फाइड और गैलियम आर्सेनाइड आदि कुछ सेमीकंडक्टर पदार्थों के उदाहरण हैं। जानकारी मिलती है कि आधुनिक युग में प्रयुक्त तरह-तरह की युक्तियों (डिवाइसेज) के मूल में ये अर्धचालक या सेमीकंडक्टर पदार्थ ही हैं। जानकारी देना चाहूंगा कि सेमीकंडक्टर पदार्थों की सहायता से ही पहले डायोड बनाया गया और फिर ट्रांजिस्टर। वास्तव में सच तो यह है कि इन्हीं के कारण एलेक्ट्रॉनिक युग की असली शुरूआत हुई। विद्युत और एलेक्ट्रानिकी में इनकी बहुत बड़ी भूमिका रही है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि अर्धचालक प्रकाश एवं अन्य विद्युत संकेतों को आवर्धित (एम्पलिफाई) करने वाली युक्तियाँ बनाने, विद्युत संकेतों से नियंत्रित स्विच बनाने, तथा ऊर्जा परिवर्तक के रूप में काम करते हैं और आज के इस आधुनिक युग में सेमीकंडक्टरों का बहुत बड़ा उपयोग व महत्व है। पाठकों को शायद ही इस बात की जानकारी होगी कि मिसाइल गाइडेंस प्रणाली, विमानन और नौसैनिक नौवहन के साथ कई अन्य रक्षा प्रणालियों के लिए सेमीकंडक्टर बहुत जरूरी हैं। ऐसे में सेमीकंडक्टर चिप की कमी दूर करने के लिए, भारत को अपने इस उद्योग को बढ़ावा देना आवश्यक हो गया है और जानकारी देना चाहूंगा कि इसी क्रम में हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के गांधीनगर में इंडिया सेमिकॉन सम्मेलन का उद्घाटन किया है। इस दौरान उन्होंने प्रौद्योगिकी फर्मों को भारत में सेमीकंडक्टर उद्योग लगाने के लिए 50 प्रतिशत वित्तीय सहायता देने की बात भी कही है। वास्तव में आज का युग सूचना क्रांति का युग है, कम्प्यूटर, एंड्रॉयड मोबाइल, इंटरनेट, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का युग है और इस युग में सेमीकंडक्टरों का जितना महत्व है उतना शायद किसी अन्य चीजों का नहीं। अब तक जापान, चीन, ताइवान, दक्षिणी कोरिया और अमेरिका जैसे देश ही सेमीकंडक्टर उत्पादन में आगे रहे हैं और भारत सेमीकंडक्टरों के लिए विदेशों पर ही निर्भर रहा है लेकिन अब भारत इस क्षेत्र में नये प्रतिमान स्थापित करने के लिए निरंतर आगे बढ़ता दिख रहा है। यहां यह उल्लेखनीय है कि 80 प्रतिशत सेमीकंडक्टरों का निर्माण एशिया में ही होता है और दुनिया के सर्वाधिक उन्नत किस्म के सेमीकंडक्टर के 92 प्रतिशत का निर्माण ताइवान में होता है। ताइवान इस क्षेत्र में अग्रणी है। एक जानकारी के अनुसार सेमीकंडक्टर का मार्केट दुनियाभर में करीब 500 अरब डॉलर का है । बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप की एक रिपोर्ट के अनुसार, सेमीकंडक्टर दुनिया में चौथा सबसे ज्यादा ट्रेड होने वाला प्रोडक्ट है। इसमें दुनिया के 120 देश भागीदार हैं। सेमीकंडक्टर से ज्यादा ट्रेड सिर्फ क्रूड ऑयल, मोटर व्हीकल व उनके कल-पुर्जों और खाने वाले तेल का ही होता है। जानकारी मिलती है कि कोरोना से पहले साल 2019 में टोटल ग्लोबल सेमीकंडक्टर ट्रेड की वैल्यू 1.7 ट्रिलियन डॉलर पर पहुंच गई थी। जानकारी देना चाहूंगा कि सेमीकंडक्टर और डिस्प्ले मैन्युफैक्चरिंग एक बहुत ही जटिल एवं प्रौद्योगिकी-गहन क्षेत्र है जिसमें भारी पूंजी निवेश, उच्च जोखिम, लंबी अवधि तथा पेबैक अवधि तथा प्रौद्योगिकी में तीव्र बदलाव शामिल हैं, जिसके लिये महत्त्वपूर्ण और निरंतर निवेश की आवश्यकता होती है। भारत में फेब्रिकेशन क्षमताओं की भी विदेशों की तुलना में अब तक कमी थी, सेमीकंडक्टर निर्माण का सेट अप भी काफी महंगा पड़ता है। यहां तक कि एक जानकारी के अनुसार एक सेमीकंडक्टर निर्माण इकाई (या फैब) की लागत अपेक्षाकृत छोटे पैमाने पर भी स्थापित करने में इसकी लागत अरबों डॉलर की हो सकती है और यह तकनीक के संदर्भ में एक या दो पीढ़ी पीछे की भी हो सकती है। जानकारी देना चाहूंगा कि वर्ष 2021 में भारत ने देश में सेमीकंडक्टर और डिस्प्ले विनिर्माण को प्रोत्साहित करने के लिये लगभग 10 बिलियन डॉलर की उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना की घोषणा की थी और वर्तमान में भारत की तरफ से दुनियाभर की चिप मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों को निवेश के लिए आमंत्रित किया गया है। भारत की ओर से इस आमंत्रण पर चीन खिसियानी बिल्ली की तरह खम्भा नोंच रहा है क्यों कि चीन को भारत का सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री में आगे बढ़ना रास नहीं आ रहा है। यह ठीक है कि चीन स्वयं सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में किंग की भूमिका में रहा है लेकिन भारत अब चीन समेत दुनिया के सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री में महारथ हासिल देशों को टक्कर देने जा रहा है। चीन ने भारत के सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री में प्रगति को लेकर भारत को 'विदेशी निवेश की कब्रगाह' तक करार दे दिया है।

चीन की मीडिया का कहना है कि अमेरिका के समर्थन के बावजूद भारत का रास्ता कठिन है। बहरहाल, चीन जो भी सोचे और समझें लेकिन वर्ष

2014 में राष्ट्रों की वैश्विक लीग में 10 वें स्थान पर रहने वाला भारत आज दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और भारत आज हरेक क्षेत्र में लगातार प्रगति के नये सोपानों को छू रहा है। आज कोई भी क्षेत्र हो, हर क्षेत्र को सेमीकंडक्टर की जरूरत है। भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री को बढ़ावा देना, प्रोत्साहन देना बहुत जरूरी है, क्यों कि आज हम कम्प्यूटर, संचार क्रांति व आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के हसीन युग में सांस ले रहे हैं जो कि मानवता को बहुत सी सहूलियतें प्रदान करने जा रहा है। यहां यह उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका की राजकीय यात्रा के दौरान तीन प्रमुख सेमीकंडक्टर समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए हैं। पहला माइक्रोन प्रौद्योगिकी, दूसरा अनुप्रयुक्त सामग्री, सबसे जटिल उपकरण जो सेमीकंडक्टर निर्माण में प्रयोग किया जाता है, उसका निर्माण भी भारत में करने से सबंधित है। तीसरा लैम रिसर्च से हुआ समझौता है, यह अपने सेमीवर्स प्लेटफॉर्म पर 60,000 इंजीनियरों को प्रशिक्षित करेगा। आज लैपटॉप से लेकर फिटनेस बैंड तक और महीन कंप्यूटिंग मशीन से लेकर मिसाइल तक में आज एक ही चीज धड़क रही है और यह सेमीकंडक्टर या माइक्रोचिप ही है। आज डेटा का युग है और डेटा बिना सबकुछ अधूरा ही है। जिसके पास आज डेटा वह दुनिया का सबसे ताकतवर देश है और डेटा, कम्प्यूटर, लैपटॉप, इंटरनेट, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, एंड्रॉयड स्मार्टफोन (मोबाइल) कहीं न कहीं सेमीकंडक्टर पर ही आधारित हैं। जानकारी देना चाहूंगा कि कोविड महामारी के उफान के दिनों में जब इन सेमीकंडक्टर्स या माइक्रोचिप्स की सप्लाई धीमी हो गई थी तो दुनिया भर के लगभग सैकड़ों बड़े उद्योगों में हड़कंप मच गया था। यहां तक कि बहुत सी दिग्गज और बड़ी कंपनियों को भी अरबों डॉलरों का नुकसान उठाना पड़ा था। पाठकों को जानकारी प्राप्त करके हैरानी होगी कि चीन, अमेरिका और ताइवान जैसे माइक्रोचिप्स के सबसे बड़े निर्यातक देशों की कंपनियों को भी प्रोडक्शन रोकना पड़ा था। बहरहाल, भारत के लिए सेमीकंडक्टर अब एक हसीन पल है। यह हम सभी को गौरवान्वित करता है कि हमारे देश के प्रधानमंत्री मोदी ने सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री के निवेशकों को आमंत्रित करते हुए यह बात कही है कि, 'भारत में 2026 तक 80 अरब डॉलर के सेमीकंडक्टर की खपत होने लगेगी और 2030 तक ये आंकड़ा 110 अरब डॉलर तक पहुंच जाएगा।' उम्मीद करते हैं जल्द ही भारत भी चीन, अमेरिका, ताइवान, जापान और दक्षिणी कोरिया जैसे देशों,जो कि सेमीकंडक्टर प्रोडक्शन में बहुत आगे हैं,को पछाड़कर सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री में सिरमौर बन जाएगा।

तो क्या अब डोटासरा अपना कद बढाने में लगे हैं?

रामस्वरूप रावतसरे

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा बर्खास्त किए गए मंत्री विधायक राजेंद्र गुढ़ा ने बुधवार को लाल डायरी के 3 पन्ने सार्वजनिक किये। राजेंद्र गुढ़ा ने मीडिया से बातचीत करते हुए डायरी के पन्नों पर क्या लिखा है, उसके बारे में बताते हुए कहा कि राजस्थान पर्यटक विकास निगम के अध्यक्ष धर्मेंद्र राठौर ने इन डायरी के पन्नों में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के पुत्र वैभव गहलोत और राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन के सचिव भवानी समोसा सहित अन्य लोगों के लेन-देन का हिसाब किताब लिखा हुआ है। कांग्रेस विधायक राजेंद्र गुढ़ा ने कहा कि सरकार को मैं ब्लैकमेल नहीं कर रहा. सरकार मुझे ब्लैकमेल कर रही है। उन्होंने कहा कि मेरे पास जो लाल डायरी है, उसमें धर्मेंद्र राठौड़ की हैंडराइटिंग है. उसके 3 पन्ने ही मैंने उजागर किए हैं। उन्होंने कहा कि आरसीए के सचिव भवानी समोता विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी के करीब भी है। डायरी के पन्नों पर कोडवर्ड में भाषा लिखी हुई है जिसमें आरसीए के लेन-देन का हिसाब किताब है।उन्होंने कहा कि मैं इस डायरी के पन्नों को धीरे-धीरे खुलासा करता रहूंगा. अभी 3 पन्ने जारी की है और आने वाले समय में बाकी पन्ने भी जारी करने की भी बात की है जिससे कि यह पता चल सके कि क्या कुछ कारनामे किए जाते रहे हैं। राजेंद्र गुढ़ा ने कहा कि कांग्रेस है कहां, यहां तो गहलोत कांग्रेस है। सीएम की एक जेब में प्रभारी रंधावा हैं तो एक जेब में डोटासरा हैं, हाईकमान भी कमजोर है। अगर मुझे सरकार ने जेल में डाला तो सरकार के समाचार समाप्त हो जाएंगे, लोग कहेंगे वन्स अपोन ए टाइम, देयर वॉज ए अशोक गहलोत (एक समय था जब अशोक गहलोत थे)। गुढ़ा ने रंधावा का नाम लेकर कहा कि बहन-बेटियों की सुरक्षा की बात करके क्या गलत किया? किस बात की माफी मांगू मैं? राजेंद्र गुढ़ा ने कहा कि मेरे खिलाफ रोजाना नए मुकदमे हो रहे हैं। एक मुकदमा आज हो रहा है, एक मुकदमा 2 दिन बाद हो रहा है। जिस तरह से मेरे खिलाफ यह केस कर रहे हैं, मैं भी रणनीति के तहत स्टेप बाय स्टेप डायरी के पन्ने जारी करूंगा।सरकार को ब्लैकमेल करने के सवाल पर गुढ़ा ने कहा- अगर 15 साल से मैं इनको ब्लैकमेल कर रहा हूं तो मैंने उनसे क्या-क्या ले लिया, यह बताते क्यों नहीं? खैर जो भी है जनता के सामने आयेगा ही कौन कितना सही है। जुलाई 2020 में जब सचिन पायलट को बर्खास्त कर गोविंद सिंह डोटासरा को राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष बनाया, तब डोटासरा पूरी तरह मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर निर्भर थे लेकिन इन तीन वर्षों में कांग्रेस के हालात बहुत बदल गए हैं। जानकार सूत्रों के अनुसार राजेंद्र गुढ़ा को मंत्री पद से हटाने पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत सहमत नहीं थे, लेकिन डोटासरा ने प्रदेश प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा के साथ मिलकर दिल्ली से ऐसा दबाव बनाया कि गहलोत को गुढ़ा की बर्खास्तगी करवानी ही पड़ी। गुढ़ा को 21 जुलाई को विधानसभा में मणिपुर के मुद्दे पर प्रतिकूल बयान देने के आरोप में हटाया गया, जबकि गुढ़ा तो पहले भी सरकार और सीएम गहलोत के विरुद्ध बहुत कुछ बोल चुके हैं। गुढ़ा ने कुछ दिन पहले कहा था कि यदि अशोक गहलोत ही मुख्यमंत्री रहते हैं तो विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को 11 सीटें भी नहीं मिलेंगी। कांग्रेस के विधायक एक फाच्यूनर गाड़ी में बैठ जाएंगे। यह बयान सीधा सीएम गहलोत पर हमला था। राजेन्द्र गुढ़ा को बर्खास्त करने के लिए यह बयान पर्याप्त था, लेकिन तब भी गहलोत ने गुढ़ा को नहीं हटाया। 21 जुलाई वाला बयान तो राजनीतिक बयान था। जब फाच्यूनर कार वाले ब्यान पर ही गुढ़ा को नहीं हटाया तो अब इस राजनीतिक बयान पर आखिर क्यों हटाया गया ? जानकार सुत्रों का कहना है कि अशोक गहलोत को पता था कि राजेंद्र गुढ़ा को छेड़ते ही आरटीडीसी के अध्यक्ष धर्मेन्द्र राठौड़ पर इनकम टैक्स और ईडी के छापे वाला मामला उछलेगा। उसके बाद राजनीतिक तौर पर गुढा को अपने पक्ष में रखना मुश्किल होगा। मंत्रीमंण्डल से बखास्त किये जाने के बाद गुढा ने भी वही किया। जिससे गहलोत की मुश्किले बढी है। अब भाजपा लाल डायरी को मुद्दा बना रही है। राजेन्द्र गुढ़ा ही बसपा के विधायकों को कांग्रेस में लाए थे और पिछले पांच वर्षों में गहलोत के कहने से ही राज्यसभा चुनाव में दो बार कांग्रेस उम्मीदवारों को वोट दिया। खुद मुख्यमंत्री ने भी सार्वजनिक तौर पर स्वीकार किया कि राजेंद्र गुढ़ा की वजह से ही वे आज मुख्यमंत्री हैं। हालांकि हाईकमान के दबाव में सीएम गहलोत ने गुढ़ा को बर्खास्त तो कर दिया, लेकिन अभी तक गुढ़ा के खिलाफ सीधे तौर पर कोई टिप्पणी नहीं की है। गहलोत लाल डायरी के मुद्दे पर भाजपा को ही कोस रहे हैं। सूत्रों के अनुसार गुढ़ा की बर्खास्तगी के पीछे शेखावाटी क्षेत्र की जाट, राजपूत राजनीति भी रही है। डोटासरा ने गुढ़ा की बर्खास्तगी करवाकर शेखावाटी में एक तीर से कई निशाने लगाए हैं। डोटासरा और गुढ़ा दोनों ही शेखावाटी के हैं। राजनीतिक तौर पर कहा जा रहा है कि डोटासरा को प्रदेश प्रभारी रंधावा के जाट सिख होने का भी लाभ मिला है। बदली हुई परिस्थितियों में डोटासरा सीएम गहलोत को ओवरटेक करने का सोची समझी रणनीति के तहत काम कर रहे हैं। यह बात राखी गौतम की प्रदेश महिला कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर नियुक्ति से भी साबित होती है। मंत्रिमंडल में गहलोत के बाद दूसरे नंबर पर माने जाने वाले संसदीय और नगरीय विकास मंत्री शांति धारीवाल ने राखी गौतम को प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने का विरोध किया था। राखी गौतम और धारीवाल दोनों ही कोटा के हैं और राखी गौतम को धारीवाल महिला प्रदेशाध्यक्ष बनाने के पक्ष में नहीं थे। जानकार सूत्रों की माने तो मुख्यमंत्री गहलोत ने भी डोटासरा को धारीवाल की राय को तवज्जो देने का इशारा किया था, लेकिन डोटासरा ने सीएम के इशारे को अनदेखा कर दिया। राखी गौतम को महिला कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने से शांति धारीवाल बेहद खफा बताए जा रहे है। सब को पता है इससे पहले भी डोटासरा और धारीवाल आमने सामने होते रहे हैं। संगठन को लेकर भी दोनों में छतीस का आंकड़ा रहा है।

वैसे भी धारीवाल नहीं चाहेंगे कि कोटा में उनके समानान्तर कोई ओर राजनीति का केन्द्र बने। डोटासरा का आरोप है कि कोटा में धारीवाल की भाजपा नेताओं से सांठगांठ है, इसलिए भाजपा विचारधारा वाले सरकारी कार्मिकों के तबादले हो जाते हैं और कांग्रेस के कार्यकर्ताओं की सुनवाई ही नहीं होती। अब जब विधानसभा चुनाव में चार माह शेष रह गए हैं, तब देखना होगा कि डोटासरा का तना सीना अशोक गहलोत को कितना असहज करता है। यह तब है जब सचिन पायलट वाला विवाद दिलों में गहरी दूरियां बनाए हुए है और राजेन्द्र गुढा की लाल डायरी राजनीतिक गलियारों में चहलकदमी कर रही है।

ज्ञान से ही वात्सल्य, स्नेह, संघर्ष और संकल्प परिभाषित होतें है

संजीव ठाकुर

मनुष्य के जीवन में प्रेम तथा ज्ञान दोनों ही अत्यंत आवश्यक एवं उत्प्रेरक अंग है। प्रेम भावनात्मक तत्व है, जो मनुष्य को इंसान बनाता है, संवेदना और मानवता को जागृत करता है। ज्ञान की उत्कंठा या तार्किक क्षमता मनुष्य को निरंतर प्रगति की ओर ले जाती है। मनुष्य के जीवन में ज्ञान ही उसे मानवता के उत्कृष्ट शिखर पर ले जाता है, वह मनुष्य को पशुत्व से अलग रखता है। मनुष्य ज्ञान की अनुभूति के कारण ही मुस्कुराता हंसता है, जबकि जानवर इसके अभाव में मूक बना रहता है, हंसता,मुस्कुराता नहीं है, इसलिए मुस्कुराइए, हंसीये, प्रेम करिए और ज्ञान प्राप्ति की ओर उन्मुख होते रहिए, तब ही जीवन सार्थक हो सकता है।

प्रेम के बिना ज्ञान और अध्ययन मनुष्य को मशीन बना देता है। प्रेम और ज्ञान की अलग-अलग मीमांसा की गई है। प्रेम, ज्ञान की अपेक्षा अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि प्रकृति में अधिक घुल मिलकर आधारभूत तत्व तो बनाता है ही,बल्कि प्रेम प्रत्येक जीव में विद्यमान होता है। परस्पर एक दूसरे की भाषा नासमझ पाने वाले जीव भी एक दूसरे से प्रेम की भाषा द्वारा मधुर संवाद कर सकते हैं। प्रेम सभी प्रकार के माननीय बंधनों से परे है।

जबकि ज्ञान प्राप्ति को मानवता में परम स्थान दिया गया है। प्राचीन भारतीय दर्शन एवं संस्कृति ने ज्ञान की महत्ता को महिमामंडित किया है और ज्ञान की प्राप्ति को सभी प्रकार के बंधनों से मुक्ति के लिए एक आधारभूत कारण भी बताया है। किसी मशीन अथवा कंप्यूटर को किसी भी प्रेरणा की आवश्यकता नहीं होती वह मनुष्य द्वारा दिए गए निर्देशों का केवल पालन करता है। मनुष्य को प्रेरणा की आवश्यकता होती है ताकि वह ज्ञान प्राप्ति का साधन बन सके और यह प्रेरणा प्रेम द्वारा ही मिलती है,जिससे वह प्रेम करता है। उसके लिए निरंतर सहायता व लाभ देने का प्रयास ज्ञान द्वारा ही करता है। ज्ञान बिना प्रेम के निरंकुश भी हो सकता है और समाज को हानि भी पहुंचा सकता है, किंतु प्रेम से युक्त ज्ञान का उपयोग वैश्विक मानव कल्याण के लिए किया जाता रहा है।

इतिहास में अनेक महापुरुषों ने अपने प्रेम, करुणा, ज्ञान से लोगों के जीवन क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं, और इतिहास की धारा को भी सकारात्मक रूप से आगे बढ़ाया है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के जननायक महात्मा गांधी जी का जीवन भी प्रेम रोग ज्ञान का अद्भुत संयोजन था,उनका अहिंसा और सत्याग्रह मानव मात्र वह विश्व के प्रत्येक जीव के प्रति प्रेम का उत्कृष्ट उदाहरण है, इसके द्वारा उन्होंने संपूर्ण मानवता को प्रेम पूर्वक जीने का महान संदेश दिया है। गांधीजी के सिद्धांतों में हिंसा का कोई स्थान नहीं था। वह अन्यायी व्यक्ति का प्रेम द्वारा हृदय परिवर्तन में विश्वास रखते थे, उनका कहना था कि 'पाप से घृणा करो पापी से नहीं' फल स्वरुप उन्होंने अपने प्रेम से भारतीय जनमानस के हृदय जीत लिया और अपने ज्ञान को तर्कशक्ति से अंग्रेजों को भारतीय जनमानस के सामने झुकने पर मजबूर कर दिया और हमने स्वतंत्रता प्राप्त की। महात्मा बुद्ध ने अपने जीवन में अंगुलिमाल डाकू का हृदय परिवर्तन कर उसे महात्मा बना दिया था,उन्होंने ज्ञान व प्रेम के द्वारा उसका हृदय परिवर्तन कर दिया था। इसी तरह जब ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाया गया तब उन्होंने स्वयं को सूली पर चढ़ाने वालों के लिए ईश्वर से यही प्रार्थना कि' ईश्वर इन्हें माफ कर देना इनको नहीं पता कि यह क्या करने जा रहे हैं'।

इस तरह उन्होंने मानवता के सामने अपने प्रेम को ज्ञान का जो उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया हुआ अत्यंत दुर्लभ है आज संपूर्ण विश्व में प्रभु यीशु के अनुयायियों की संख्या सर्वाधिक है। भगवान श्रीराम ने प्रेम में वशीभूत होकर ही शबरी के जूठे बेर भी खा लिए थे, जबकि श्री राम सर्वाधिक ज्ञान में आदर्श मनुष्य थे।

एक अच्छे और सार्थक जीवन के लिए प्रेम तथा ज्ञान दोनों का संबंध एवं समन्वय अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू हैं। अकेला ज्ञान तथा अकेला प्रेम सदैव सार्थक नहीं हो सकता है। रावण ज्ञानी पुरुष था किंतु विध्वंस कारी भी था उसने प्रेम के अभाव में सिर्फ ज्ञान के चलते अपने कुल को नष्ट करवा दिया था।

प्रेम तथा ज्ञान के सदुपयोग से अच्छे जीवन का पथ प्रदर्शन भी किया जा सकता है। इससे हम केवल परिवार व्यक्ति या समाज ही नहीं बल्कि राष्ट्र के स्तर पर भी आत्मसात कर राष्ट्र को वैश्विक महानता की ओर ले जा सकते हैं। वर्तमान में हम संवैधानिक प्रावधानों के अनुरूप सामाजिक जीवन को सफलतापूर्वक संचालित करने में सक्षम है।

आज हमारे सामने पर्यावरण संतुलन वैश्विक अपन गरीबी जैसी अनेक समस्याएं मौजूद हैं। हम सभी मूक प्राणियों वनस्पति आदि के प्रति ज्ञान का उपयोग दिखाकर उनके साथ प्रेम पूर्वक व्यवहार कर समस्या का समाधान कर सकते हैं। आधुनिक तकनीक से अर्जित ज्ञान के उपयोग इनके संरक्षण में करने में हम सक्षम भी हैं।

कब से नहीं देख रहे हैं?

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

डाक्टर साहब देखिये ना, इनकी आवाज चली गयी है । काफी दिनों से इन्होनें देखना बिलकुल बंद कर दिया है । अब तो किसी की ओर देखते भी नहीं हैं ! " बेटा साथ लाये पेशेंट पिता को आगे करते हुए बोला । डाक्टर ने पहले नब्ज देखी, आले से धड़कन, टार्च से मुंह के अन्दर गले तक झाँका । आँखें ऊपर-नीचे करवायीं, बाहर से आँख के आसपास और उसे टटोला, बोले – "हूँ ... कब से नहीं देख रहे हैं?" "तीन महीने हो गए हैं । पहले तो बहुत देखा करते थे, इतना कि इनको न देखने लिए बार-बार कहना पड़ता था।" पिता ने बताया। "कुछ अच्छा-बुरा तो न देख लिया?" "देखने में तो नहीं आया हाँ टी.वी बहुत ज्यादा देखा जरुर करते थे।""करते क्या हैं ... मतलब काम-वाम ?" "वाम ही इनका काम है? वाम ही ओढ़ना बिछाना । मतलब लेखक हैं, लिखते पढ़ते और सोचते हैं । ""यही तो गलत करते हैं। पंचतंत्र की कहानी सुनी है न । चार मूर्खों को समझदार बनाने के चक्कर में तंत्र का पंचनामा हो जाता है। ज्यादा सोचना एक मानसिक रोग है। आम आदमी को कुछ नहीं करना है, बस पिये-खाये और पड़ा रहे । ""पीते-खाते तो हैं, रात-दिन सोचते भी हैं पर देखते नहीं हैं ।" "देखिये मामला पेंचीदा है । कुछ जांच-वांच करवानी पड़ेगी।" "क्या हुआ इनको? ... कैसी बीमारी है डाक्साब ?" "यही तो देखना है कि बीमारी है या तंत्र का पंच।""तंत्र का पंच! इसमें क्या देखना बंद हो जाता है !?" "खरा-खतरा देखना बंद हो जाता है। आदमी देख सकता है पर देखता नहीं, लिख सकता है पर लिखेगा नहीं, जी नहीं सकता पर जियेगा ।" डाक्टर ने बताया । "हे भगवान, अकेले इन्हीं को होना था ये रोग!!" बेटे ने पिता के सर पर हाथ फेरते हुए कहा । "ये अकेले नहीं हैं । आजकल इसके बहुत पेशेंट आ रहे हैं । तंत्र का पंच के चलते सबकी आवाज़ बंद होती जा रही है।" "तो इलाज इनका करना चाहिए या तंत्र के पंच का?" "तंत्र के पंच का इलाज पांच साल में एक बार ही हो सकता है । फ़िलहाल इन्हें धृतराष्ट्र ही रहने दें।" "ऐसा कैसे हो सकता है ! जहाँ जरुरी हो देखना तो चाहिए ।" "यही तो मजे वाली बात है । जब लगे कि देखना जरुरी है तब पेशेंट देखना बंद कर देता है । " "लेकिन जिम्मेदार नागरिक तो देखते रहे हैं !" "देखते थे कभी । अब टीवी दिखाता है, रेडियो बातों की जुगाली करके दिखाता है, राजा दिखाते हैं, सत्ता दिखाती है । जो सहमत हैं वे उछलें-कूदें नाचें-गाएं और जो असहमत हैं चुप रहें, समझदार बनें । देश को आगे बढ़ने दें ।"

गले में धारण कर लें रुद्राक्ष की माला चुंबक की तरह खींची चली आएगी दौलत

रुद्राक्ष की माला पहनने से सुख-समृद्धि का वास होता है गले में रुद्राक्ष की माला पहनने से नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है

रुद्राक्ष को धारण करते समय हमेशा उत्तर दिशा में बैठकर ॐ हरेम नमः का जाप जरूर करें।

हिंदू

धर्म में भगवान महादेव की पूजा का बहुत महत्व है। शास्त्रों में भगवान भोलेनाथ को बहुत भोला बताया गया है। मान्यता है कि जो भी भक्त शिव जी की विधि-विधान से पूजा अर्चना करता है उसकी सभी मनोकामनाएं महादेव पूरी कर देते हैं। मान्यता है कि भगवान शिव की पसंदीदा चीजों का सही उपाय करने से कई फायदे होते हैं। उसी तरह रुद्राक्ष का उपाय भी है। रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव से मानी जाती है। रुद्राक्ष एक मुखी, दो मुखी, पंच मुखी समेत कई तरह के होते हैं। रुद्राक्ष धारण करने के कई फायदे होते हैं। सामान्यतः लोग पंच मुखी रुद्राक्ष धारण करते हैं। आइए आज हम आपको पंडित इंद्रमणि घनस्याल के मुताबिक बताते हैं रुद्राक्ष धारण करने के फायदे बताते हैं।

1. सुख समृद्धि का वासः मान्यता है कि रुद्राक्ष की माला पहनने से व्यक्ति की एकग्रता बढ़ती है। इससे धन-धान्य का लाभ होता है। घर में सुख-समृद्धि का वास होता है। अगर आप रुद्राक्ष की माला नहीं पहनते हैं तो आप भी इसे पहन सकते हैं।

2.स्वास्थ्य लाभः हिंदू धर्म की मान्यताओं के मुताबिक रुद्राक्ष धारण करने से स्वास्थ्य लाभ होता है। इससे बीमारियां दूर होती हैं।मान्यता है कि उत्तम स्वास्थ्य के लिए रुद्राक्ष की माला को धारण करना चाहिए।

3. ग्रहों के चक्कर से मिलती है मुक्तिः रुद्राक्ष धारण करने से ग्रहों के चक्कर से मुक्ति मिलती है। मान्यता है कि पंचमुखी रुद्राक्ष बृहस्पति ग्रह के अशुभ प्रभाव को समाप्त करता है। भगवान शिव की कृपा पाने के लिए पंचमुखी रुद्राक्ष धारण करना बहुत शुभ माना जाता है।

4.सकारात्मकता आती हैः रुद्राक्ष की माला पहनने से नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है। इससे सकारात्मकता का प्रसार होता है। मान्यता है कि इससे मन शुद्ध रहता है।

5.तनाव मुक्त करेः रुद्राक्ष की माला पहनने से इंसान मानसिक तौर पर मजबूत बनाता है। पंचमुखी रुद्राक्ष तनावमुक्त और सुखी जीवन प्रदान करता है साथ ही यह आलस को दूर भगाता है।

इस तरह धारण करें पंचमुखी रुद्राक्ष

ज्योतिषियों के मुताबिक, पंचमुखी रुद्राक्ष को सोमवार या गुरुवार के दिन पहनना चाहिए है। इसे पहनने के लिए सुबह जल्दी उठकर स्नान कर एक चौकी पर लाल वस्त्र बिछा लें और उसमें भगवान शिव की प्रतिमा को स्थापित करें। इसके बाद भगवान महादेव की पूजा-अर्चना करें। उनको प्रसाद का भोग लगाएं। रुद्राक्ष को धारण करते समय हमेशा उत्तर दिशा में बैठकर ॐ हरेम नमः का जाप जरूर करें। इस वक्त भगवान महादेव का ध्यान करना चाहिए।

कैलाशनाथ मंदिर : जहां न कोई पुजारी, न होती है पूजा-पाठ

सुरेश गांधी

महाराष्ट्र के औरंगाबाद की एलोरा की गुफाओं में, जो अपनी खूबसूरती के पीछे कई सारे रहस्यों को दफन किए हुए है। ये मंदिर भारत के 8वें अजूबे से कम नहीं है। भगवान शिव का निवास माने जाने वाले कैलाश पर्वत के आकार की तरह ही इस मंदिर का निर्माण कराया गया है। कहते हैं 276 फुट लंबे और 154 फुट चौड़े इस मंदिर को एक चट्टान को काटकर और तराशकर किया बनाया गया है। ऊं के आकार में इस चट्टान को काटने मे 18 साल का समय लगा। इस चट्टान का वजन लगभग 40,000 टन बताया जाता है। आमतौर पर पत्थर से बनने वाले मंदिरों को सामने की ओर से तराशा जाता है, लेकिन 90 फुट ऊंचे कैलाश मंदिर की विशेषता है कि इसे ऊपर से नीचे की तरफ तराशा गया है। दो मंजिल में बनाए गए इस मंदिर को भीतर तथा बाहर दोनों ओर मूर्तियों से सजाया गया है। मंदिर में सामने की ओर खुले मंडप में नंदी है और उसके दोनों ओर विशालकाय हाथी तथा स्तंभ बने हुए हैं। कैलाश मंदिर के नीचे कई हाथियों का निर्माण किया गया है और यह मंदिर उन्हीं हाथियों के ऊपर ही टिका है। मंदिर से जुड़ी एक और विचित्र बात यह है कि यह भगवान शिव को समर्पित है, लेकिन मंदिर में न तो कोई पुजारी है। दावा है कि कैलाश मंदिर एक ही पत्थर से निर्मित विश्व की सबसे बड़ी संरचना है। सबसे खास बात यह है कि यह मंदिर हिमालय के कैलास मंदिर की तरह दिखता है।

कैलाश पर्वत के आकार की तरह ही इस मंदिर का निर्माण कराया गया है। कहते हैं 276 फुट लंबे और 154 फुट चौड़े इस मंदिर को एक चट्टान को काटकर और तराशकर किया बनाया गया है।

इस मंदिर को बनाने में लगभग 150 वर्षों या इससे भी अधिक लगने चाहिए।

राजा कृष्ण प्रथम ने कराया मंदिर निर्माण

मंदिर की देखभाल करने वालों की मानें तो एलोरा के का निर्माण राष्ट्रकूट वंश के राजा कृष्ण प्रथम के द्वारा 756 से सन 773 के दौरान कराया गया। मंदिर के निर्माण को लेकर यह मान्यता है कि एक बार राजा गंभीर रूप से बीमार हुए तब रानी ने उनके स्वास्थ्य के लिए भगवान शिव से प्रार्थना की और यह प्रण लिया कि राजा के स्वस्थ होने पर वह मंदिर का निर्माण करवाएंगी और मंदिर के शिखर को देखने तक व्रत धारण करेंगी। राजा जब स्वस्थ हुए तो मंदिर के निर्माण के प्रारंभ होने की बारी आई, लेकिन रानी को यह बताया गया कि मंदिर के निर्माण में बहुत समय लगेगा। ऐसे में व्रत रख पाना मुश्किल है। तब रानी ने भगवान शिव से सहायता मांगी। कहा जाता है कि इसके बाद उन्हें भूमिअस्त्र प्राप्त हुआ जो पत्थर को भी भाप बना सकता है। इसी अस्त्र से मंदिर का निर्माण इतने कम समय में संभव हो सका। बाद में इस अस्त्र को भूमि के नीचे छुपा दिया गया। मंदिर की दीवारों पर अलग प्रकार की लिपियों का प्रयोग किया गया है जिनके बारे में आजतक कोई कुछ भी नही समझ पाया। ऐसा कहा जाता है कि अंग्रेजों के शासनकाल में मंदिर के नीचे स्थित गुफाओं पर शोधकार्य शुरू कराया गया, लेकिन वहां हाई रेडियोएक्टिविटी के चलते शोध को बंद करना पड़ा। इसके अलावा गुफाओं को भी बंद कर दिया गया जो आज भी बंद ही हैं। ऐसी मान्यता है कि इस रेडियोएक्टिविटी का कारण वही भूमिअस्त्र और मंदिर के निर्माण में उपयोग किए गए अन्य उपकरण हैं जो मंदिर के नीचे छुपा दिए गए थे।

औरंगजेब भी नहीं तोड़ पाया इस मंदिर को

इस्लामिक आक्रांता औरंगजेब ने इस मंदिर को नुकसान पहुंचाने का बहुत प्रयास किया। लेकिन छोटे-मोटे नुकसान के अलावा वह इसे किसी भी प्रकार की क्षति पहुंचाने में असफल रहा। इतिहासकारों के मुताबिक औरंगजेब के हजारों सैनिकों ने 1862 में इस मंदिर को तोड़ने के लिए 3 साल तक प्रयास किया। इसके बावजूद भी वो मंदिर को तोडने में असमर्थ रहे। क्योंकि औरंगजेब को इस बात की जानकारी हो चुकी थी कि वह इस मंदिर को नुकसान नहीं पहुंचा सकता और उसने तुरंत उन सिपाहियों को दूर हट जाने का आदेश दे दिया था। इस भव्य मंदिर को बनाने के लिए चट्टानों से 4 लाख टन पत्थर को काट कर हटाया गया होगा। एक अनुमान के मुताबिक अगर 7000 मजदूरों ने 12-12 घंटे भी काम किया होगा तो 18 साल में 4 लाख टन पत्थरों को निकालने के लिए हर वर्ष कम से कम 22 हजार टन पत्थरों को निकाला गया होगा। यानी 60 टन पत्थरों को हर दिन निकाला गया है। या यूं कहे 5 टन पत्थरों को हर घंटे निकाला गया होगा।

एलोरा में कुल 100 गुफाएं हैं, जिसमे 34 गुफाएं ही लोगों के लिए खुली है। बाकी गुफाओं में लोगों का जाना वर्जित है। मंदिर गुफा नंबर 16 में है। इस मंदिर को 1983 में यूनेस्कों द्वारा 'विश्व विरासत स्थल' का दर्जा मिला है। मंदिर की अद्भुत नक्काशी व वस्तुकला में पल्लव और चालुक्य शैली नजर आती है। पुरातनविदों के अनुसार इस मंदिर को बनाने में लगभग 150 वर्षों या इससे भी अधिक लगने चाहिए। कई अधिकारी और खोजकर्ताओं का दावा किया है कि इस दिव्य मंदिर के नीचे एक पूरा शहर है। परन्तु वहां तक पहुंचने का रास्ता किसी को भी ज्ञात नहीं है। इस मंदिर की बारीकी से कि गई जांच के पश्चात पता चला कि शिल्पकारों ने इस पूरे मंदिर को सफेद रंग से ढक दिया था। ताकि ये कैलाश पर्वत की भांति नजर आए। जांच के बाद सबसे बड़ा रहस्य यह निकल कर आया है कि जिन्होंने निर्माण करवाया उनके बारे में कोई भी पुख्ता सबूत नहीं है। जिस कारण से इसकी कार्बन डेटिंग तकनीक द्वारा इसकी सही उम्र पता लगा पाना संभव नहीं है। यहां पूरा का पूरा एक ड्रेनिंग सिस्टम बना हुआ है बारिश के पानी को स्टोर करना, अतिरिक्त पानी को नालियों द्वारा निकालना। यहां छोटी से छोटी चीज को सुनियोजित तरीके से बनाया गया है।

कटरीना और अपनी फैमिली के बीच अंतर पर बोले विक्की : शादी में साफ दिख रहा था... लड़के और लड़की वाले कौन हैं

एक्टर विक्की कौशल ने हाल ही में कटरीना कैफ के साथ अपनी शादी के दिनों को याद किया। इस दौरान उन्होंने अपनी शादी का एक दिलचस्प किस्सा भी सुनाया।अपनी पिछली फिल्म 'जरा हटके और जरा बचके' के प्रमोशन के दौरान विक्की ने अपनी शादी से जुड़ा यह मजेदार किस्सा साझा किया। विक्की ने बताया कि कैसे शादी में कटरीना और उनका परिवार अलग-अलग ठहरा था, क्योंकि दोनों की फैमिली के बीच बहुत अंतर था।

खाने में पंजाबियों को भला कौन मात दे सकता है?- विक्की

बातचीत के दौरान विक्की ने कहा- 'हमारी शादी में साफ पता था कि लड़के वाले कौन हैं और लड़की वाले कौन हैं। साफ था कि दूल्हे की तरफ से कौन था और दुल्हन की तरफ से कौन था। एक परिवार पूरा पंजाबी पिंड था, तो दूसरा यूके रिटर्न। ऐसे में यह तय था कि दोनों परिवारों के बीच बहुत अंतर था। बार में तो हर कोई साथ होता था, लेकिन खाने में पंजाबियों को भला कौन मात दे सकता है?

विक्की ने आगे कहा- 'शादी में कई लोग तो बस शिकायत करने आते हैं। कभी-कभी फूफा जी खामियां बताने आते हैं कि गोलगप्पे खत्म हो गए। विक्की की यह बात सुनकर वहां पर मौजूद सभी लोग हंसने लगे। बीते दिनों फिल्म कंपेनियन को दिए इंटरव्यू में विक्की ने कटरीना और अपने रिश्ते के बारे में बात की। इस दौरान उन्होंने कहा कि जब काम की बात आती है तो एक्ट्रेस एक व्यावहारिक व्यक्ति हैं। हालांकि, पर्सनल लाइफ में वह बेहद भावुक हैं। वक्की ने कहा कि जब भी वो और कटरीना एक्टिंग के बारे में बात करते हैं, तो एक्ट्रेस हमेशा उन्हें सच ही बताती हैं।

अक्सर कटरीना की तारीफ करते हैं विक्की

विक्की ने कहा था कि कटरीना की राशि कर्क है, इसलिए वो बहुत अट्रैक्टिव और इमोशनल इंसान हैं। लेकिन जब काम की बात आती है, तो उन्हें अपनी जमीनी हकीकत सही लहती है। सच कहूं तो इससे मेरी बहुत मदद होती है। सबसे बड़ा सपोर्ट जो मुझे मिला है वो ये है कि वो फैक्ट्स को फैक्ट्स की तरह रखती हैं। 'कभी-कभी जब काम और फैसला लेने की बात आती है तो वो सच में ऐसी बातें बताती हैं जो गलतियों और अनुभवों से ही सीखी जा सकती है। वो मुझे किसी चीज पर सलाह देती हैं या राय देती हैं तो मुझे पता है मुझे उसे सीरियसली लेना होगा, क्योंकि वो उसे बहुत सोच-समझकर बोल रही होती हैं। जिसकी कभी-कभी आपको जरूरत होती है। विक्की ने कैटरीना की तारीफ करते हुए बताया कि उन्होंने बहुत मेहनत की है तभी आज उनके पास इतना नॉलेज है।

66 साल का एक्टर 'जेलर साहब' के लिए 'जग्गू दादा' बना आफत

साउथ की दुनिया में अपनी अलग पहचान रखने वाले रजनीकांत की फिल्म 'जेलर' का ट्रेलर धूम मचा रहा है. थलाइवर का एक्शन अवतार देखकर उनके फैंस रोमांचित हो गए हैं. फिल्म के ट्रेलर में रजनी का स्टाइल छाया हुआ है लेकिन एक शख्स और है, जिसने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई है. हालांकि ट्रेलर में सिर्फ इस एक्टर की झलक मात्र है लेकिन इतने में ही इस एक्टर ने सोशल मीडिया पर बवाल काट दिया है. हिंदी बेल्ट में रजनीकांत से ज्यादा इस एक्टर की चर्चा हो रही है.

बॉलीवुड के कई एक्टर्स हैं, जिन्होंने हीरो के किरदार छोड़कर साउथ की फिल्मों में विलेन का किरदार निभाया है. इनमें विवेक आबेरॉय, नील नितिन मुकेश, सोनू सूद जैसे नाम गिने जा सकते हैं. इसके अलावा बीते दिनों संजय दत्त ने भी फिल्म 'केजीएफ' के जरिए वहां गर्दा उड़ा दिया था. प्रशांत नील की फिल्म में उन्होंने 'अधीरा' का किरदार निभाकर यश को कड़ी टक्कर दी थी. अब बॉलीवुड के जग्गू दादा अपनी उपस्थिति से सबको हैरान करने के लिए तैयार हैं.

36 साल बाद रजनी के साथ

'जेलर' के जिस खास एक्टर की हम बात कर रहे हैं वे हैं जैकी श्रॉफ. बॉलीवुड में 'जग्गू दादा' के नाम से फेमस जैकी फिल्म 'जेलर' में रजनीकांत के सामने होंगे. जैकी का जन्म मुंबई में 1 फरवरी 1957 को हुआ था. जैकी ने बॉलीवुड में अपने किरदारों से खूब नाम कमाया है. अब 66 साल के जैकी करियर की दूसरी पारी में कुछ अलग तरह के किरदार निभा रहे हैं. इस कड़ी में 'जेलर' के जरिए वे साउथ में धमाका करने के लिए तैयार हैं. बता दें कि रजनीकांत और जैकी 36 साल पहले फिल्म 'उत्तर दक्षिण' में नजर आए थे.

सोशल मीडिया पर हो रहे चर्चे

जैकी श्रॉफ फिल्म 'जेलर' में नकारात्मक भूमिका निभा रहे हैं और उनके पार्ट की शूटिंग राजस्थान में हुई है. जब से फिल्म का ट्रेलर सामने आया है जैकी के फैंस उनके लुक से काफी इम्प्रेस हैं. जैकी के लुक के फोटोज सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं. साथ ही फैंस का कहना है 'छा गए भिड़ू'. बता दें कि इससे पहले थालापति विजय की फिल्म 'बिगिल' में जैकी नजर आए थे.

राजकुमार राव ने बताई 90 के दशक की खास याद : शाहरुख खान की तारीफ की

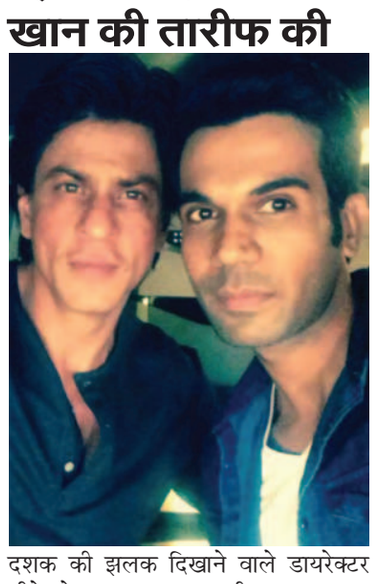

वेब सीरीज गन्स एंड गुलाब का ट्रेलर बुधवार को रिलीज हो चुका है। राज और डीके के डायरेक्शन में बनी इस सीरीज में 90 के दशक का दौर दिखाया है, जिसमें राजकुमार राव, दुलकर सलमान, गुलशन देवैया और आदर्श गौरव लीड रोल निभाते नजर आ रहे हैं। 90 के दशक का जिक्र करे हुए राजकुमार राव ने हाल ही में शाहरुख खान को लेकर अपना प्यार जाहिर किया। उन्होंने कहा कि शाहरुख खान ही एक मात्र ऐसे एक्टर हैं, जो 90 के दशक की पहचान हैं।

दरअसल, ट्रेलर लॉन्च के दौरान राजकुमार राव से पूछा गया कि ऐसा क्या था जिस कारण उनके लिए 90 के दशक को बेहद खास रहा? इसपर राजकुमार राव ने कहा- 'केवल और केवल शाहरुख खान हैं। वह हमारे समय के सबसे जवान एक्टर हैं। बता दें कि शाहरुख की अपकमिंग फिल्म का नाम जवान है, जो अगले महीने थिएटर्स में रिलीज होगी।

गन्स और गुलाब से पहले भी राजकुमार राव फिल्म स्त्री में राज और डीके की फिल्म स्त्री में काम कर चुके हैं। एक्टर ने ट्रेलर लॉन्च में कहा कि वो डायरेक्टर्स के साथ बार-बार काम करना चाहेंगे। उन्होंने कहा- मैं राज और डीके के सभी प्रोजेक्ट्स में शामिल होना चाहता हूं।

चाहे वह द फैमिली मैन हो या फिर फर्जी । मुझे उनकी बनाई गई फिल्में बेहद पसंद है। जब उन्होंने पहली बार मुझे स्त्री की सक्रिप्ट सुनाई तो मैंने सोचा कि उनके मन में ऐसे ख्याल कैसे आते हैं? वो अपने इसी अंदाज के लिए जाने जाते हैं। जो कोई नहीं सोचता वो राज और डीके सोचते हैं।

अपनी फिल्मों और वेब सीरीज में 90 के दशक की झलक दिखाने वाले डायरेक्टर डीके ने कहा- आज का जीवन अब बहुत आसान हो गया है, 90 के दशक में बहुत ज्यादा प्रयास करना पड़ता था। आपको हर चीज के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। मुझे लगता है कि जिस समय में हम थे, उस समय को पीछे मुड़कर देखना हमारा स्वभाव है। पुरानी यादें हमारा एक हिस्सा हैं। हम हमेशा इन यादों से जुड़े रहते हैं। उनमें एक अलग आकर्षण होता है। यह आपके चेहरे पर मुस्कान लाता है।"

गन्स एंड गुलाब्स में राजकुमार राव 'पाना टीपू' का किरदार निभा रहे हैं, जो एक प्यार में पागल आदमी है। यह आदमी बिना पलक झपकाए 'पाना'(औजार) से हत्या कर देता है। राज और डीके के डायरेक्शन में बनी यह सीरीज क्राइम, एक्शन और कॉमेडी की मिली जुली कहानी है। ट्रेलर में दुलकर सलमान, राजकुमार राव, आदर्श और गुलशन देवैया बेहद इंटेंस रोल में नजर आए हैं।

जब रजनीकांत की मूवी ने कमाए 701 करोड़, 20 करोड में बना 1 गाना, एसआरके के 15 करोड़ी जिन्दा बंदा को पछाड़ा

जब से बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान की आने वाली फिल्म 'जवान' का नया गाना रिलीज हुआ है, देश भर के म्यूजिक लवर्स इसका भरपूर आनंद ले रहे हैं. 'जिंदा बंदा' नामक नया ट्रैक बॉलीवुड में 15 करोड़ रुपए की लागत से बनाया गया अब तक का सबसे महंगा गाना कहा जाता है. हालांकि, इतने भारी-भरकम बजट के बावजूद यह गाना भारत का सबसे महंगा गाना होने का रिकॉर्ड बनाने में नाकाम रहा है, क्योंकि अब साउथ सिनेमा इससे भी महंगा सॉन्ग लेकर आया है.

जी हां, आपने उसे सही पढ़ा है. 'जिंदा बंदा' का बजट निर्देशक एस शंकर की फिल्म 'जीन्स' के गाने 'अजूबा' और फिल्म 'पुष्पा' के 'ऊ अंतवा' की कीमत से भी ज्यादा है, फिर भी यह दूसरा सबसे महंगा भारतीय गाना है क्योंकि पहला स्थान साउथ के सुपरस्टार रजनीकांत ने हासिल किया है. इन दिनों रजनीकांत अपनी अपकमिंग फिल्म जेलर को लेकर चर्चा में हैं और पिछले दिनों ही इसका गाना भी रिलीज हुआ था. हालांकि, यहां हम उनके जेलर फिल्म के गाने के बारे में बात नहीं कर रहे हैं बल्कि उनकी 2018 में आई सुपरहिट मूवी के गाने को लेकर चर्चा कर रहे हैं.

श्रीवल्ली फेम सिड श्रीराम और शाशा तिरूपति द्वारा गाए गए 'यंथरा लोकापु सुंदरिव' को 10 दिनों में 4 भव्य सेटों पर शूट किया गया था. अनंत श्रीराम ने गाने के बोल लिखे और इसे ऑस्कर विजेता संगीतकार एआर रहमान ने इसे म्यूजिक दिया था. इस गाने में सुपरस्टार रजनीकांत और एमी जैक्सन थे और इसे बॉस्को मार्टिस ने कोरियोग्राफ किया था. बाद में गाने के हिंदी बोल अब्बास टायरवाला और अमिताभ भट्टाचार्य ने लिखे थे. नवंबर 2018 में रिलीज़ हुई इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर बड़ी सफलता हासिल की और दुनिया भर में 701 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया था.

शाहरुख खान के गाने 'जिंदा बंदा' की बात करें तो इस गाने को चेन्नई में 4 दिनों के अंतराल में अलग-अलग भव्य स्थानों पर शूट किया गया है. इसमें देश भर से 1000 डांसर शामिल हैं लेकिन रजनीकांत की फिल्म के गाने ने बजट के मामले ने किंग खान की आने वाली जवान के सॉन्ग को बीट किया है. एटली द्वारा निर्देशित 'जवान' 7 सितंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी.

जब 3 फिल्में मिलकर नहीं कमा सकीं 10 करोड़, मेकर्स ने लगाए थे 137 करोड़, इन 3 एक्ट्रेस को लगा था बड़ा झटका

साल 2022 में मेकर्स ने बॉलीवुड की 3 मशहूर अदाकारों को लेकर 3 अलग-अलग फिल्में बनाईं, जिनमें कंगना रनौत, तापसी पन्नू और शिल्पा शेट्टी के नाम शामिल थे. इन तीनों की फिल्में बॉक्स ऑफिस पर ऐसी गिरीं कि मेकर्स को भारी नुकसान का सामना करना पड़ा था. इन तीनों अभिनेत्रियों की फिल्में बॉक्स ऑफिस पर डिजास्टर साबित हुई थीं.

अक्सर हम उन फिल्मों की बात करते हैं, जो बॉक्स ऑफिस पर सफल रही हो... लेकिन आज कल उन फिल्मों की भी खूब चर्चाएं होती हैं, जो बड़े बजट की होती हैं और कमाई के नाम पर मेकर्स को कुछ भी हाथ नहीं लगता है. आज हम साल 2022 की 3 उन्हीं फिल्मों के बारे में बात करने जा रहे हैं, जिससे मकेर्स को काफी नुकसान का सामना करना पड़ा था.

ये तीनों ही फिल्में बॉलीवुड की 3 मशहूर एक्ट्रेस को लेकर बनाई गई थीं, जिनमें कंगना रनौत , तापसी पन्नू और शिल्पा शेट्टी के नाम शामिल थे. इन तीनों की फिल्मों को बनाने में मेकर्स के कुल 137 करोड़ रुपये खर्च हुए थे और कमाई के नाम इन तीनों फिल्मों के हाथ 10 करोड़ भी नहीं लगे थे और इनमें से एक थी फिल्म 'धाकड़'.

धाकड़: साल 2022 में आई कंगना रौनत की यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर डिजास्टर साबित हुई थी. यह एक एक्शन फिल्म थी, जो रजनीश घई द्वारा निर्देशित थी और इसमें कंगना रनौत के अलावा अर्जुन रामपाल, दिव्या दत्ता और सास्वता चटर्जी भी लीड रोल में नजर आए थे. इस फिल्म को बनाने में मेकर्स के 85 करोड़ रुपये खर्च हुए थे और इस फिल्म की वर्ल्डवाइड कमाई सिर्फ 3.77 करोड़ रुपये ही थी.

दोबारा: साल 2022 में तापसी पन्नू की इस फिल्म को भी दर्शकों ने सिरे से नकार दिया था और रिलीज के साथ यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर डिजास्टर साबित हुई थी. अनुराग कश्यप के निर्देशन में बनी यह एक साइंस-फिक्शन रहस्य ड्रामा फिल्म थी, जिसमें तापसी पन्नू के अलावा पावेल गुलाटी और राहुल भट्ट भी लीड रोल में थे. बता दें, इस फिल्म को बनाने में मेकर्स के 30 करोड़ रुपये खर्च हुए थे और इसका टोटल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन सिर्फ 3.77 करोड़ रुपये ही था.

निकम्मा: साल 2022 में आई शिल्पा शेट्टी की इस फिल्म का भी बॉक्स ऑफिस पर बहुत बुरा हाल हुआ था. रिलीज के साथ यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर डिजास्टर साबित हुई थी. इस फिल्म को बनाने में मेकर्स ने 22 करोड़ रुपये खर्च किए थे और इसका टोटल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन महज 1.77 करोड़ रुपये ही था. यह 2017 की तेलुगू फिल्म मिडिल क्लास अब्बाई की रीमेक थी, जिसमें शिल्पा के अलावा फिल्म में अभिमन्यु दासानी और शर्ली सेतिया भी लीड रोल में थें.

कभी फिल्म इंडस्ट्री छोड़ना चाहते थे सुनील : कपिल शर्मा के बारे में कहा था-वो जानवरों की तरह ट्रीट करते थे

एक्टर और कॉमेडियन सुनील ग्रोवर आज 46वां बर्थडे है। लगभग 16 फिल्मों का हिस्सा रहे सुनील को बड़ी पहचान कॉमेडी नाइट्स विद कपिल शर्मा शो से मिली थी।

हरियाणा में जन्में सुनील थिएटर की पढ़ाई कर किस्मत आजमाने मुंबई आ गए। शुरुआत में उन्हें लगा कि यहां काम आसानी से मिल जाएगा। इसी नासमझी की वजह से उन्हें बहुत स्ट्रगल करना पड़ा। रिजेक्शन की वजह से उन्होंने इंडस्ट्री छोड़ने का प्लान भी बना लिया था। हालांकि जैसे-तैसे कड़ी मेहनत के दम पर उन्होंने इंडस्ट्री में अपनी जगह बनाई।

कॉमेडी नाइट्स विद कपिल शर्मा शो से उन्हें बहुत पॉपुलैरिटी मिली। शो से ज्यादा वो कपिल के संग अपनी लड़ाई की वजह से चर्चा में रहे। उनका कहना था कि कपिल शो के बाकी लोगों से जानवरों जैसे बर्ताव करते हैं। कपिल ने एक पोस्ट के जरिए उनसे माफी भी मांगी थी।

आज सुनील के बर्थडे पर उनकी लाइफ से जुड़े दिलचस्प फैक्ट्स ..... फेमस कॉमेडियन जसपाल भट्टी थे सुनील के कॉमेडी के मुरीद

सुनील ग्रोवर का जन्म 3 अगस्त 1977 को हरियाणा के मंडी डबवाली शहर में हुआ था। उनके पिता स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में मैनेजर थे। सुनील की स्कूलिंग हरियाणा के शिक्षा आर्य विद्या मंदिर डबवाली से हुई। एक्टिंग में रुझान होने की वजह से सुनील ने पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ से थिएटर में मास्टर की डिग्री ली।

जब सुनील कॉलेज में थे, तभी एक नाटक के दौरान फेमस कॉमेडियन जसपाल भट्टी की नजर उनपर पड़ी। वो उनके कॉमिक टाइम और फेस एक्सप्रेशन के मुरीद हो गए। उन्होंने सुनील को अपने शो फुल टेंशन में काम करने का मौका दिया।

शुरुआत में खुद की लापरवाही पड़ी भारी

कॉलेज की पढ़ाई पूरी सुनील करियर बनाने की उम्मीद में मुंबई का गए थे, जहां उन्हें घर चलाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा। इन दिनों के बारे में उन्होंने एक इंटरव्यू में बताया था, मुंबई एक खूबसूरत शहर है। जब मैं यहां आया तो मुझे लगा कि यहां पर जल्द ही काम मिल जाएगा। शुरुआत में मैंने सिर्फ मस्ती की। जानबूझ कर मैंने किसी बड़े प्रोजेक्ट्स के लिए मेहनत नहीं की। छोटे-मोटे काम से 500 रुपए तक की कमाई हो जाती थी। एक साल तक मैंने सिर्फ मौज मस्ती की, जिस वजह से एक साल बाद मेरी सारी सेविंग्स खत्म हो गई।

शुरुआत में मैं अच्छी जगह रहता था लेकिन पैसे खत्म हो जाने के बाद मुझे गोरेगांव की एक सस्ती सोसायटी में एक छोटे से फ्लैट में रहना पड़ा। यहां पहुंचकर मुझे आटे दाल का भाव पता चला। इस बात का भी एहसास हुआ कि इस शहर में मुझ जैसे काफी स्ट्रगलिंग एक्टर्स हैं, जो अपने शहर में हीरो थे लेकिन यहां काम के लिए दर-दर भटक रहे हैं।

इस वक्त पापा ने मेरा बहुत साथ दिया। इसे बुरे वक्त में वो मुझे हमेशा मोटिवेट करते रहे। एक ऐसा वक्त आया था कि रिजेक्शन की वजह से मैंने मुंबई छोड़ने का प्लान बना लिया था लेकिन उन्होंने ऐसा करने से रोका। कुछ दिन तक शो में काम किया फिर अचानक वहां से निकाल दिया गया

पापा के समझाने के बाद मैंने अपने सपने के लिए स्ट्रगल करना शुरू किया। फिर अचानक से टीम की तरफ से शूटिंग के लिए कॉल आना बंद हो गया। मैंने टीम को कॉल किया फिर उधर से जवाब आया कि मुझे शो से निकाल दिया गया है।

रेडियो शो ने बदली किस्मत

सुनील ने अपने पहले मेजर ब्रेक के बारे में बताया था कि उन्होंने दिल्ली में एक रेडियो शो में काम किया था जो बहुत वायरल हो गया था। इस वजह से शो के मेकर्स ने उसे पूरे देश में दिखाने का प्लान किया था। इस शो की पॉपुलैरिटी की वजह से उन्हें रेडियो, टीवी और फिल्म के ऑफर मिलने लगे। फिर गुत्थी का किरदार मिला और चीजें बेहतर हो गईं।

कॉलेज क्लासमेट से इंस्पायर है गुत्थी का किरदार

कॉमेडी नाइट्स विद कपिल में गुत्थी के करिदार से सुनील ने सबको खूब हंसाया था। ये किरदार फिक्शनल नहीं बल्कि उनके कॉलेज की एक लड़की से इंस्पायर था। क्लासमेट से इंस्पायर होकर सुनील ने गुत्थी के किरदार को जिया और सफलता की सीढ़ियां चढ़ते गए।

पत्नी की सलाह पर परफॉर्म करते

सुनील के मुताबिक, वह कहीं भी परफॉर्म करने से पहले अपने सारे जोक बीवी आरती को सुनाते हैं। अगर वह हंस पड़ीं तो सुनील उन जोक्स पर परफॉर्म करते हैं और अगर वो नहीं हंसीं तो समझ लेते हैं कि वो जोक ऑडियंस के सामने नहीं चलेगा। सुनील की वाइफ आरती पेशे से इंटीरियर डिजाइनर हैं और दोनों का एक बेटा भी है।

कॉमेडी शो से पहले फिल्मी पर्दे पर भी दिखे

बहुत कम लोगों को पता है कि कॉमेडी शो में आने से पहले सुनील ने 1998 में रिलीज हुई फिल्म प्यार तो होना ही था में काम किया था। ये पहला मौका था जब उन्हें फिल्मी पर्दे पर देखा गया था। फिल्म में उन्होंने नाई का रोल किया था। द लीजेंड ऑफ भगत सिंह, इंसान, गजनी जैसी फिल्मों में भी उन्होंने अपनी कुछ मिनट की एक्टिंग से लोगों को एंटरटेन किया है।

कैसे शुरू हुआ सुनील और कपिल शर्मा में विवाद?

ये बात 2017 की है। गुत्थी के किरदार से सुनील को बहुत पॉपुलैरिटी मिली थी। इस वजह से शो के TRP में भी उछाल देखने को मिला था। इस बीच में एक खबर सामने आई कि बढ़ती पॉपुलैरिटी के कारण सुनील ने शो के मेकर्स से सैलरी बढ़ाने की डिमांड की थी लेकिन मेकर्स ने मना कर दिया था। इस वजह से सुनील ने शो छोड़ दिया है।

सुनील को किसी ने शो छोड़ने के लिए बहकाया- कपिल शर्मा

कुछ समय बाद कपिल शर्मा ने इंटरव्यू में कहा- मैं इतना कह सकता हूं कि सुनील ने हमारा शो नहीं छोड़ा है। हम सब इस सक्सेसफुल शो के पार्ट है। सुनील इस इंडस्ट्री में जगह बनाने की कोशिश कर रहे हैं। वो मेरे सीनियर भी हैं। मैं उनके टैलेंट की बहुत रिस्पेक्ट करता हूं। मैं किसी के टैलेंट से इनसेक्योर नहीं होता हूं बल्कि कोशिश करता हूं कि टीम के हर मेंबर स्टेज पर आने का पूरा मौका मिले, जिस वजह से मैं थोड़ा आराम कर सकूं। शायद आस-पास के कुछ लोगों ने उन्हें शो से जाने के लिए उकसाया है।

जब कपिल ने सुनील की फिल्म प्रमोट करने से मना किया

कई रिपोर्ट्स ने दावा किया था कि कपिल ने सुनील की फिल्म कॉपी विद डी शो के दौरान प्रमोट करने से मना कर दिया था। वजह बताई गई थी कि कपिल को सुनील का फिल्मों में काम करना पसंद नहीं आया।

इस अफवाह के बाद सुनील की तरफ से एक बयान आया था जिसमें उन्होंने कहा था- फिल्म प्रमोशन से कपिल का कोई लेना देना नहीं है। हां शो में मेरे फिल्म का प्रमोशन नहीं हुआ लेकिन कपिल ने प्रमोशन के लिए कभी भी मना नहीं किया था।

फ्लाइट में कपिल ने सुनील को दी गाली, हाथ भी उठाया

कपिल और सुनील के मनमुटाव वाली खबरों के बीच एक खबर ने सबको हैरान कर दिया था। ये बात 2017 की है जब कपिल की टीम ऑस्ट्रेलिया में एक शो कर लौट रही थी। इसी दौरान फ्लाइट में सुनील और कपिल के बीच लड़ाई हो गई। दरअसल, नशे में धुत कपिल ने सुनील को बुरा भला बोल दिया था। सुनील के साथ उन्होंने बाकी टीम मेंबर्स के साथ भी बदतमीजी की थी।

कीकू ने किया कपिल का सपोर्ट

इस घटना के बाद कीकू शर्मा का एक बयान सामने आया जिसमें उन्होंने कहा कि कपिल शर्मा ने उनके साथ किसी तरह की कोई बदतमीजी नहीं की है। वो एक अच्छे आदमी हैं।

कपिल शर्मा ने अपनी गलती के लिए मांगी माफी

इन खबरों के बाद कपिल शर्मा ने भी सोशल मीडिया पर एक पोस्ट किया था। पोस्ट के जरिए उन्होंने बताया था कि उन्होंने इन बीते 5 सालों में पहली बार सुनील पर चिल्लाए हैं और ऐसी चीजें दोस्तों के बीच होती रहती हैं। पोस्ट के लास्ट के उन्होंने लिखा था- पाजी माफ करिए अगर मैंने आपको दुख पहुंचाया हो। आपको पता है कि मैं आपसे कितना प्यार करता हूं। मैं भी उदास हूं।

इंसानों को जानवरों जैसे ट्रीट ना करें- सुनील

कपिल के इस पोस्ट पर सुनील ने रिएक्ट किया था। उन्होंने भी एक पोस्ट के जरिए अपनी बातें कही थीं। उन्होंने लिखा था- भाई जी, हां आपकी इस हरकत से मैं बहुत ज्यादा दुखी हूं। आपके साथ काम करके मैंने बहुत सीखा है। एक सलाह है कि आप इंसानों को जानवरों जैसे ट्रीट नहीं किया करें। हम सभी आपके जैसे कामयाब नहीं हैं और ना ही आपके जैसे टैलेंटेड नहीं हैं। मान लीजिए कि हम सब आप जितने ही काबिल हैं तो आप किसकी वैल्यू ज्यादा करेंगे। इसी कारण आप दूसरों के भी वजूद को महत्व दिया करिए।

अगर गलती पर आपको कोई सही राय देता है तो उसे गाली ना दिया करें। महिलाओं के सामने अभद्र भाषा को इस्तेमाल ना किया करें क्योंकि उन्हें आपके स्टारडम से कोई फर्क नहीं पड़ता। आपका बहुत धन्यवाद कि आपने मुझे एहसास दिलाया कि ये शो आपका है और किसी को भी शो से निकालने का पावर भी है। आप अपने फील्ड में बेस्ट हैं लेकिन भगवान बनने की कोशिश ना करें।

बुमराह के बाद इस धाकड़ बल्लेबाज की एशिया कप में होगी वापसी! विकेटकीपिंग की भी कर रहा प्रैक्टिस

भारतीय टीम पिछले कुछ महीनों से अपने प्रमुख खिलाड़ियों के चोट से परेशान है। जसप्रीत बुमराह, प्रसिद्ध कृष्णा, केएल राहुल, श्रेयस अय्यर और ऋषभ पंत की चोट ने टीम इंडिया को काफी परेशान किया। इनमें से बुमराह और कृष्णा ने वापसी कर ली है। दोनों के आयरलैंड के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए चुना गया गया है। वहीं, केएल राहुल की फिटनेस पर बड़ा अपडेट आया है। कहा जा रहा है कि वह पूरी तरह फिट हैं और एशिया कप में उतर सकते हैं।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, केएल राहुल पूरी फिटनेस हासिल करने के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी के लिए तैयार हैं। आईपीएल में वह लखनऊ सुपरजाएंट्स के लिए खेलते हुए रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) के खिलाफ चोटिल

हो गए थे। उनके जांघ में चोट लगी थी।

कई अहम मैचों में नहीं खेल पाए राहुल

राहुल चोट के कारण आईपीएल के आखिरी कुछ मैचों से दूर रहे थे। साथ ही वह विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ नहीं खेल पाए थे। वह वेस्टइंडीज दौरे पर भी टीम के साथ नहीं रहे। अब वह पूरी तरह फिट हैं और वापसी के लिए तैयार हैं। एशिया कप का आयोजन 30 अगस्त से 17 सितंबर तक होगा। पाकिस्तान की मेजबानी में होने वाले इस टूर्नामेंट के मैच श्रीलंका में भी होंगे। भारत अपना पहला पाकिस्तान के खिलाफ दो सितंबर को पल्लेकेले में खेला जाएगा।

राहुल की वापसी से टीम में आएगा संतुलन

राहुल की वापसी से भारत की वनडे टीम में संतुलन आएगा। वह मध्यक्रम के अहम बल्लेबाजी हैं। राहुल ने पिछले हाल ही में सोशल मीडिया पर नेट्स पर बल्लेबाजी और विकेटकीपिंग के वीडियो शेयर किए हैं। कहा जा रहा है कि बेंगलुरु स्थित राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) के कोच और चिकित्सा विशेषज्ञ राहुल की रिकवरी से संतुष्ट हैं। वह एशिया कप के लिए चयन के लिए उपलब्ध होंगे।''

अय्यर का एशिया कप में खेलना मुश्किल

श्रेयस अय्यर की चोट को लेकर हालांकि अच्छी खबर नहीं है। वह अभी पूरी तरह फिट नहीं हो पाए हैं। वह एनसीए में हैं और रिकवरी की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं। माना जा रहा है कि श्रेयस अय्यर एशिया कप में नहीं खेल पाएंगे। वह विश्व कप से पहले ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन वनडे मैचों की सीरीज से वापसी कर सकते हैं।

'किसी ने नहीं की कुलदीप की मदद', पूर्व चयनकर्ता सुनील जोशी का बड़ा खुलासा

दो साल पहले तक चाइनामैन स्पिनर कुलदीप यादव की टीम इंडिया में जगह तक नहीं बन रही थी। अब वह टीम के नियमित गेंदबाज बन चुके हैं। 2017 से 2019 तक कुलदीप और युजवेंद्र चहल टीम इंडिया की रीढ़ हुआ करते थे। रिस्ट स्पिनर्स की यह जोड़ी इतनी सफल थी कि विपक्षी बल्लेबाज इनसे खौफ खाते थे। हालांकि, 2019 के बाद चीजें बदलीं और रविचंद्रन अश्विन और रवींद्र जडेजा की सफलता ने 'कुलचा' को टीम से बाहर कर दिया।

हालांकि, पिछले एक साल में टीम में फिर से बदलाव हुए और अब कुलदीप ने फिर वापसी की है, जिसे कुलदीप 2.0 कहा जा रहा है। घरेलू क्रिकेट और आईपीएल में जबरदस्त प्रदर्शन की वजह से कुलदीप एक बार फिर चर्चा का विषय बने हुए हैं। उनका हालिया प्रदर्शन देखकर पूर्व कोच रवि शास्त्री भी हैरान हैं।

इसका खुलासा टीम इंडिया के पूर्व चयनकर्ता सुनील जोशी ने किया है।

सुनील ने की थी कुलदीप की मदद

चयनकर्ता पद से हटने के बाद सुनील जोशी ने कुलदीप के साथ काम किया और उनकी फॉर्म वापस लाने में मदद की। सुनील खुद भी बाएं हाथ के स्पिनर रह चुके हैं। एक न्यूज वेबसाइट के साथ इंटरव्यू में सुनील जोशी ने बताया कि टीम से बाहर होने के बाद कैसे सबने कुलदीप को किनारा कर दिया था और कोई उनकी मदद नहीं कर रहा था।

उन्होंने कहा- जब कुलदीप यादव को बाहर किया गया तो मैं चयन समिति का हिस्सा था। कौन बचाव में आया? कोचिंग स्टाफ में से कोई नहीं, मैं ही था जिसने उनकी मदद की। उनके बॉलिंग एक्शन को ठीक कराया, फ्रंट आर्म और आर्म स्पीड बेहतर कराई। साथ ही उन्हें और अधिक गेंद फेंकने के लिए प्रेरित किया।

रवि शास्त्री भी रह गए हैरान

जब कुलदीप टीम इंडिया से बाहर हुए थे तो रवि शास्त्री हेड कोच थे। हालांकि, टीम से बाहर होने के बाद कुलदीप ने आईपीएल में अपनी फ्रेंचाइजी भी बदली। दिल्ली कैपिटल्स के लिए खेलते हुए कुलदीप यादव ने शानदार प्रदर्शन किया है। सुनील जोशी के साथ काम करने के बाद दिल्ली कैपिटल्स के कोच रिकी पोंटिंग और शेन वॉटसन ने भी उन पर काफी मेहनत की।

सुनील ने बताया कि अब सब कुलदीप के बारे में बातें कर रहे हैं। यहां तक कि रवि शास्त्री ने उनसे पूछा था कि उन्होंने कुलदीप के साथ क्या काम किया जिससे उन्हें फॉर्म में वापस आने में मदद मिली। पूर्व स्पिनर जोशी ने इस पर जवाब देते हुए कहा था कि उन्होंने वही किया जो एक बॉलिंग कोच को करना चाहिए था।

सुनील जोशी ने बताया, 'अचानक हर कोई कुलदीप यादव के बारे में बात कर रहा है। रवि शास्त्री ने एकबार मुझसे पूछा- तुमने कुलदीप के साथ क्या किया है? मैंने कहा, 'रवि भाई मैंने कुछ खास नहीं किया है। ये साधारण चीजें हैं जो एक बॉलिंग कोच को करनी चाहिए।' आप कुलदीप 2.0 को देखें, उनका फ्रंट आर्म टारगेट की ओर अच्छे से जा रहा है। उनकी बॉलिंग आर्म भी टारगेट की ओर है। वह टारगेट की तरफ दौड़ते हैं। छोटे-छोटे कदम, फ्री फॉलो थ्रू है, उनकी गेंद हवा में तेजी से आगे बढ़ती है। आप देखिए जिस तरह से कुलदीप अब गेंदबाजी कर रहे हैं वह पहले से कितना अलग है।कुलदीप ने बेहतर प्रदर्शन से वनडे विश्व कप में चयन के लिए अपना दावा मजबूत कर लिया है। 2017 से लेकर 2019 तक कुलदीप ने 56 वनडे खेले थे और 99 विकेट लिए थे। इसके बाद 2020, 2021 और 2022 में कुल मिलाकर 17 वनडे खेलने

को मिले, जिसमें उन्होंने 20 विकेट लिए।

अब 2023 में अभी तक कुलदीप 11 वनडे खेल चुके हैं, जिसमें उनके नाम 22 विकेट हैं। छह रन देकर चार विकेट इस साल कुलदीप की सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी रही है। साथ ही इकॉनमी रेट 4.88 का रहा है। इस साल उन्होंने वनडे में कुछ बेहतरीन गेंदबाजी की है, जिसमें श्रीलंका के 53/3, न्यूजीलैंड के खिलाफ 62/3, ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 56/3 और वेस्टइंडीज के खिलाफ 46/4 जैसे बॉलिंग फिगर्स शामिल हैं। कुलदीप 2.0 अक्तूबर-नवंबर में भारत में होने वाले वर्ल्ड कप के लिए महत्वपूर्ण साबित हो सकते हैं।

भारत विश्व कप नहीं जीता तो, रविचंद्रन अश्विन ने भारतीय फैंस को दी खास सलाह

भारत में होने वाले वनडे विश्व कप का काउंटडाउन शुरू हो चुका है। इसी साल अक्तूबर और नवंबर में होने वाले विश्व कप को लेकर भारतीय फैंस की काफी उम्मीदें हैं। 2011 विश्व कप भारत में हुआ था और मेजबान टीम इंडिया चैंपियन बनी थी। इसके बाद 2015 में ऑस्ट्रेलिया और 2019 में इंग्लैंड ने भी अपनी मेजबानी में विश्व कप

जीता। इसके बाद उम्मीदें लगाई जा रही हैं कि 2023 वनडे विश्व कप भी टीम इंडिया अपनी मेजबानी में जीतेगी। भारत ने 2013 चैंपियंस ट्रॉफी के बाद से कोई भी बड़ा आईसीसी टूर्नामेंट नहीं जीता है। 2011 के बाद से विश्व कप खिताब भी टीम इंडिया से दूर है। 2023 वनडे विश्व कप से पहले रविचंद्रन अश्विन ने भारतीय क्रिकेट टीम के प्रशंसकों के लिए एक खास सलाह दी है। अश्विन ने अपने यूट्यूब चैनल पर कहा, ₹अगर हम विश्व कप नहीं जीत पाते हैं तो आगे बढ़ें। अगर हम जीतते हैं तो हम उनकी सराहना करते हैं। इस बीच, अश्विन ने प्रशंसकों से विश्व कप से पहले और उसके दौरान भारतीय टीम को ₹जितना संभव हो सके उतनी सकारात्मकता₹ के साथ प्रेरित करने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा, ₹कम से कम मैं यह कह रहा हूं कि जब हम 2023 विश्व कप में उतरेंगे तो टीम को पूरी सकारात्मकता के साथ भेजेंगे। यही मेरा एकमात्र अनुरोध होगा। जितना संभव हो सके उतनी सकारात्मकता रखें। विश्व कप जीतना आसान नहीं है दोस्तों। भारत ने 2014 टी20 विश्व कप के फाइनल में प्रवेश किया, फिर वे 2015 वनडे विश्व कप के सेमीफाइनल में पहुंचे। पिछले साल उन्हें टी20 विश्व कप सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करते देखा गया। 2017 में वे चैंपियंस ट्रॉफी के फाइनल में पहुंचे, लेकिन जीत नहीं पाए। साल 2019 में भारत वनडे विश्व कप सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई कर गया, जबकि 2022 टी20 विश्व कप में भारत फिर से सेमीफाइनल में पहुंच गया। अश्विन ने कहा सिर्फ इसलिए कि हम एक निश्चित खिलाड़ी को खिलाते हैं या एक निश्चित खिलाड़ी को बाहर कर देते हैं, हम जीत नहीं सकते। हम सभी दूरदर्शी हैं। अगर हम एक मैच हार जाते हैं, तो हम तुरंत कहेंगे, 'अगर हमने इस खिलाड़ी को खिलाया होता, तो हम जीत गए होते।' यह इतना आसान नहीं है दोस्तों। पिछली रणनीति यहां काम नहीं करेगी। हमने लगभग सभी प्रमुख प्रतियोगिताओं के सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई कर लिया है।

मोईन अली अगले साल टेस्ट श्रृंखला के लिए भारत नहीं आएंगे

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांचवें एशेज टेस्ट को पारंपरिक प्रारूप में अपना आखिरी मैच बताते हुए इंग्लैंड के हरफनमौला मोईन अली ने कहा कि वह अगले साल टेस्ट श्रृंखला के लिए भारत नहीं जाएंगे। भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टेस्ट श्रृंखला अगले साल जनवरी और मार्च में खेली जाएगी। मोईन ने 'द गार्डियन' से कहा, मैं भारत नहीं जाऊंगा। टेस्ट क्रिकेट सर्वश्रेष्ठ है और इस तरह से उसे अलविदा कहने का सही समय है। काश समय को पलट पाता। मोईन ने इंग्लैंड के लिए 68 टेस्ट में 3094 रन बनाए और 204 विकेट लिए हैं। उन्होंने कहा, मेरे टेस्ट करियर में कई उतार चढ़ाव आए। उसे बदला नहीं जा सकता। इंग्लैंड टीम में वापसी का प्रस्ताव स्वीकार नहीं करता तो हमेशा खेद रहता। 36 वर्ष के मोईन ने कहा- मैंने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ कभी अच्छा प्रदर्शन नहीं किया। मेरे पास खोने के लिए कुछ नहीं था। मोईन अब फ्रेंचाइजी क्रिकेट खेलते रहेंगे जिन्होंने चेन्नई सुपर किंग्स के लिए आईपीएल में अच्छा प्रदर्शन किया है। वह पीएसएल और द हंड्रेड भी खेलते हैं। मोईन अली ने एशेज में चार मैचों में 25.71 की औसत से 180 रन बनाए थे। इसमें एक अर्धशतक शामिल है। इसके अलावा नौ विकेट भी लिए थे। मोईन ने एशेज के लिए टेस्ट से संन्यास से वापसी की थी। अब उन्होंने फिर से टेस्ट से संन्यास का फैसला लिया है। भारत का इंग्लैंड दौरा 25 जनवरी से शुरू होगा। इस दौरान दोनों टीमों के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेली जाएगी।

इंग्लैंड के पूर्व कप्तान का बयान, भारत में जेम्स एंडरसन का अनुभव उपयोगी साबित होगा

एशेज टेस्ट सीरीज खत्म होने के साथ ही इंग्लैंड के स्टार तेज गेंदबाज स्टुअर्ट ब्रॉड ने संन्यास ले लिया है। हालांकि, जेम्स एंडरसन ने साफ किया कि वह अभी संन्यास नहीं ले रहे हैं। इस बीच इंग्लैंड के पूर्व कप्तान नासिर हुसैन ने कहा है कि जनवरी 2024 में भारत के खिलाफ पांच टेस्ट मैच की सीरीज में जेम्स एंडरसन का अनुभव काफी उपयोगी होगा। इसके साथ ही उन्होंने यह उम्मीद जताई कि भारत के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए जेम्स एंडरसन को चुना जाएगा।

इंग्लैंड के दो अनुभवी खिलाड़ी, स्टुअर्ट ब्रॉड और मोईन अली संन्यास ले चुके हैं। ऐसे में एंडरसन का टीम में रहना इंग्लैंड के लिए बेहद जरूरी है। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान नासिर हुसैन को उम्मीद है कि तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन अगले साल की शुरुआत में पांच टेस्ट मैचों की कठिन सीरीज के लिए भारत का दौरा करेंगे, उनका कहना है कि तेज गेंदबाज स्टुअर्ट ब्रॉड और ऑलराउंडर मोईन के संन्यास लेने के बाद, 41 वर्षीय एंडरसन का अनुभव काम आएगा। भारत में टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले एंडरसन, हाल ही में एशेज में कुछ खास नहीं कर पाए थे। ऐसे में वह अगले साल जनवरी में शुरू होने वाली सीरीज के लिए भारत का दौरा करने के लिए उत्सुक होंगे।

हुसैन ने आईसीसी रिव्यू में कहा, जिमी (एंडरसन) का भारत के खिलाफ बहुत अच्छा रिकॉर्ड है... और आपको एक संतुलित आक्रमण की जरूरत है। युवा खिलाड़ियों के लिए आपको उस अनुभव की जरूरत है। एंडरसन का भारत के खिलाफ अच्छा रिकॉर्ड है, उन्होंने टेस्ट में 32 बार पांच विकेट लिए हैं और इनमें से छह बार पांच विकेट भारत के खिलाफ लिए हैं। एशियाई देशों में उनका औसत (29.32) उन अन्य स्थानों की तुलना में अच्छा है, जहां उन्होंने खेला है।

भारत के लिए खेल चुके बंगाल के खेल मंत्री ने क्रिकेट के सभी प्रारूपों से लिया संन्यास

भारत के लिए 15 मैच खेल चुके दाएं हाथ के बल्लेबाज मनोज तिवारी ने क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास का एलान कर दिया है। उन्होंने गुरुवार को सोशल मीडिया पर इसकी घोषणा की। मनोज ने भारत के लिए 12 वनडे और तीन टी20 मैच खेले। वह फिलहाल पश्चिम बंगाल के खेल और युवा मामलों के मंत्री हैं। मनोज ने इंस्टाग्राम पर एक लंबा पोस्ट लिखा और कहा कि इस खेल ने उन्हें काफी कुछ दिया है, जिसकी उन्होंने कभी उम्मीद भी नहीं की थी।

मनोज ने अपने पोस्ट में क्या लिखा

मनोज ने अपने पोस्ट में लिखा- क्रिकेट को अलविदा। इस खेल ने मुझे सबकुछ दिया है। मेरा मतलब है कि हर वह चीज जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी और मैं काफी कठिनाइयों का सामना कर रहा था, तब इस खेल में मुझे ऊपर उठने का मौका दिया। मैं क्रिकेट का आभारी रहूंगा। मैं ऊपर वाले का भी शुक्रिया अदा करना चाहूंगा कि उन्होंने हमेशा मेरा साथ दिया।

मनोज ने लिखा- मैं इस खेल और भगवान का हमेशा आभारी रहूंगा, जो हमेशा मेरे पक्ष में रहे। इस अवसर पर मैं उन लोगों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूं जिन्होंने मेरी क्रिकेट यात्रा में भूमिका निभाई है। मेरे बचपन से लेकर पिछले साल तक मेरे सभी कोचों को धन्यवाद, जिन्होंने मेरी क्रिकेट उपलब्धियों में भूमिका निभाई है। मेरे पिता तुल्य कोच मानवेंद्र घोष क्रिकेट यात्रा में स्तंभ रहे हैं। अगर वह नहीं होते तो मैं क्रिकेट जगत में कहीं नहीं पहुंच पाता।

धन्यवाद सर और आपके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं, क्योंकि आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा है। मेरे पिताजी और मां को धन्यवाद, उन्होंने कभी मुझ पर पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करने का दबाव नहीं डाला बल्कि उन्होंने मुझे क्रिकेट में बने रहने के लिए प्रोत्साहित किया।

मनोज ने क्रिकेट को धन्यवाद कहा

मनोज ने लिखा- मेरी पत्नी सुषमिता रॉय को बहुत-बहुत धन्यवाद, जो मेरे जीवन में आने के बाद से हमेशा मेरे साथ रही हैं। उनके निरंतर समर्थन के बिना, मैं जीवन में उस मुकाम तक नहीं पहुंच पाता जहां मैं आज हूं। मेरे सभी साथियों, पूर्व और वर्तमान और बंगाल क्रिकेट एसोसिएशन और एसोसिएशन के सभी सदस्यों को धन्यवाद, जिन्होंने मेरी यात्रा में भूमिका निभाई है।मैं उन क्रिकेट प्रशंसकों का जिक्र कैसे नहीं कर सकता, जिन्होंने मेरे उतार-चढ़ाव के दौरान मेरी लिए प्रार्थना की और मुझे आज की दुनिया में एक क्रिकेट हस्ती बनाया। मेरे दिल की गहराइयों से बहुत-बहुत धन्यवाद। बस इतना ही। यदि मुझसे कोई छूट गया हो जिसका उल्लेख मैं यहां करने से चूक गया हूं तो कृपया मेरी क्षमायाचना स्वीकार करें। धन्यवाद क्रिकेट।

मनोज का क्रिकेट करियर

मनोज ने भारत के लिए 12 वनडे में 26.09 की औसत से 287 रन बनाए। इनमें एक शतक और एक अर्धशतक शामिल है। इसके अलावा उन्होंने तीन टी20 भी खेले, जिसमें 15 रन बनाए। मनोज के नाम वनडे में पांच विकेट भी हैं। घरेलू क्रिकेट में मनोज बंगाल के लिए खेल रहे थे और इस साल रणजी ट्रॉफी में टीम की कप्तानी की थी।

मनोज के नेतृत्व में बंगाल की टीम रणजी ट्रॉफी 2023 के फाइनल में पहुंची थी। हालांकि, फाइनल में सौराष्ट्र के खिलाफ बंगाल की टीम को हार का सामना करना पड़ा था। मनोज ने 141 फर्स्ट क्लास मैचों में 48.56 की औसत से 9908 रन बनाए।

इनमें 29 शतक और 45 अर्धशतक शामिल है। वहीं, 169 लिस्ट-ए मैचों में मनोज के नाम 42.28 की औसत से 5581 रन हैं। इनमें छह शतक और 40 अर्धशतक हैं। वह आईपीएल में 96 मैच खेल चुके हैं, जिसमें 29.07 की औसत और 117.41 के स्ट्राइक रेट से 1686 रन बनाए। इनमें सात अर्धशतक शामिल हैं।

शोएब ने इंस्टाग्राम बायो से सानिया का नाम हटाया लिखा- लिव अनब्रोकन; तलाक की अटकलें फिर तेज

पूर्व इंडियन टेनिस स्टार सानिया मिर्जा और पाकिस्तानी क्रिकेटर शोएब मलिक के बीच तलाक की अटकलें एक बार फिर तेज हो गई हैं। पाकिस्तान के पूर्व कप्तान शोएब मलिक ने अपने इंस्टाग्राम बायो में बदलाव किया है। शोएब ने सानिया मिर्जा का नाम अपने बायो से हटा दिया है। शोएब ने पहले अपने बायो में सानिया मिर्जा को मेंशन करते हुए लिखा था 'हसबैंड टु ए सुपरवुमन'। उन्होंने अब यह लाइन अपने बायो से हटा दी है। इसकी जगह लिखा है- लिव अनब्रोकन। इसके बाद कयास लगाए जा रहे हैं कि दोनों जल्द ही एक-दूसरे से अलग हो सकते हैं।

नवंबर में भी आई थीं तलाक की खबरें

पिछले साल नवंबर में शोएब मलिक से सानिया की तलाक की खबरें आई थीं। हालांकि उन दोनों की ओर से इस पर कुछ नहीं कहा गया। बाद में सानिया ने शोएब मलिक के साथ एक फोटो भी शेयर

किया। साथ ही दोनों ने एक टॉक शो 'मलिक-मिर्जा शो' भी शुरू कर दिया। ऐसे में उनके तलाक की खबरें खुद खत्म हो गई थीं।

पाकिस्तानी मीडिया ने बताई थी वजह

अपने रिश्ते को लेकर अभी तक सानिया या शोएब ने खुलकर कुछ नहीं लिखा है। पिछले साल नवंबर में पाकिस्तानी मीडिया ने दावा किया था कि दोनों अलग-अलग रह रहे हैं। कोशिश कर रहे हैं कि बेटे की परवरिश मिलकर कर सकें। हालांकि इस बारे में ज्यादा कुछ नहीं लिखा गया था।

5 महीने डेटिंग के बाद की थी शादी, 8 साल बाद जन्मा बेटा

सानिया-शोएब की पहली मुलाकात साल 2004-2005 में भारत में हुई थी। दोनों की ज्यादा बातचीत नहीं हुई। दोनों 2009-2010 में एक-दूसरे से ऑस्ट्रेलिया के शहर होबार्ट में फिर मिले।

सानिया टेनिस खेलने पहुंची थीं और शोएब अपनी टीम के साथ क्रिकेट खेलने। इस समय पाकिस्तान की टीम ऑस्ट्रेलिया टूर पर थी। यहां जान-पहचान दोस्ती में बदली और फिर मुलाकातों का सिलसिला शुरू हो गया था।

करीब 5 महीने तक एक-दूसरे को जानने के बाद दोनों ने शादी करने का फैसला किया। शादी की सभी रस्में हैदराबाद में हुईं। इसके बाद लाहौर में रिसेप्शन रखा गया। शादी के 8 साल बाद उनके बेटे इजहान का जन्म हुआ था।

सानिया ने अपनी आत्मकथा 'ऐस अगेंस्ट ऑड्स' में लिखा है कि शोएब उनकी लाइफ में उस समय आए थे, जब वो अपनी प्रोफेशनल लाइफ में परेशानियों से जूझ रही थीं।

हैदराबाद में 12 अप्रैल 2010 को सानिया और शोएब की शादी हुई थी। 15 अप्रैल को रिसेप्शन लाहौर में दिया गया था। दोनों का एक बेटा इजहान है। उसका जन्म 2018 में हुआ था।

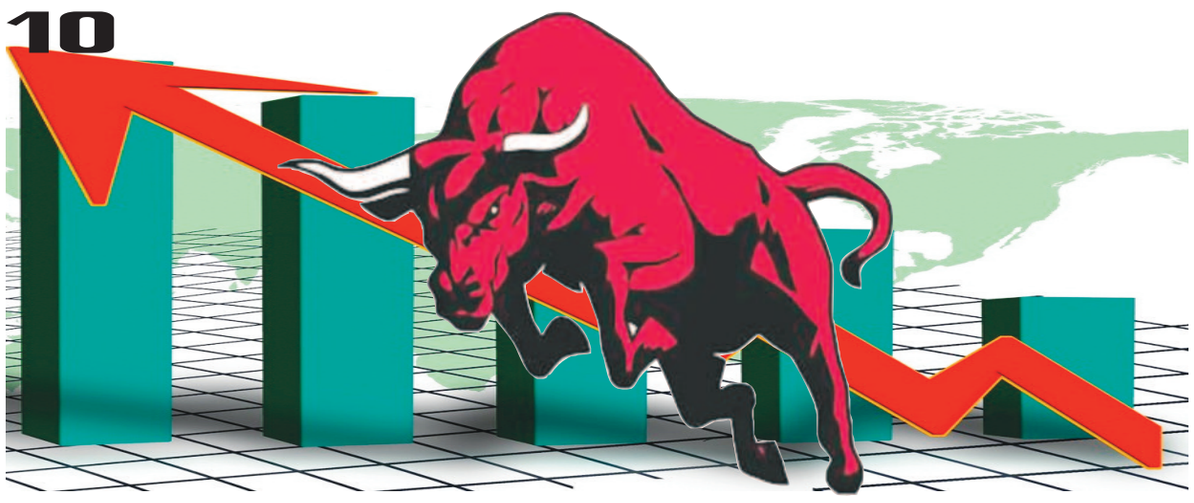

112 छोटे निवेशकों के खातों में 10-10 हजार रुपये भेजे गए, अमित शाह ने कही ये बात

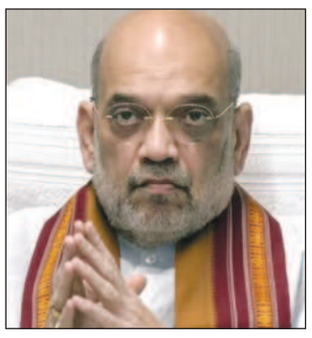

नई दिल्ली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। सहकारिता मंत्री अमित शाह ने सहारा समूह की चार सहकारी समितियों के करोड़ों जमाकर्ताओं की करोड़ों रुपये की गाढ़ी कमाई लौटाने की प्रक्रिया शुक्रवार को शुरू कर दी। इस दौरान 112 छोटे निवेशकों को 10 हजार रुपये की पहली किस्त हस्तांतरित की गई। शाह ने कहा कि अब तक 18 लाख जमाकर्ताओं ने 18 जुलाई को लॉन्च किए गए 'सीआरसीएस-सहारा रिफंड पोर्टल' पर पंजीकरण कराया है। उन्होंने कहा, अब तक 18 लाख निवेशकों ने पोर्टल पर पंजीकरण कराया है। ... आज 112 निवेशकों के बैंक खाते में करीब 10000 रुपये हस्तांतरित किए गए हैं। शाह ने कहा कि ऑडिट पूरा होने के बाद धन की अगली किस्त जल्द ही हस्तांतरित की जाएगी। उन्होंने जमाकर्ताओं को बधाई देते हुए कहा, 'मैं आश्वस्त करना चाहता हूं और मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाले दिनों में सभी जमाकर्ताओं को उनका धन मिल जाएगा। शाह ने कहा कि कई बार ऐसी घटनाएं होती हैं जो सहकारिता पर विश्वास को हिला देती हैं। हालांकि, यह सुनिश्चित करना सरकार की जिम्मेदारी है कि निवेशकों का पैसा सुरक्षित रहे और उन्हें वापस मिले। उन्होंने कहा कि सहारा के जमाकर्ताओं को प्रबंधन की गलती और अदालती मुकदमों में देरी के कारण पिछले 12-15 साल से उनका पैसा वापस नहीं मिल रहा था। शाह ने सेबी-सहारा कोष से 5,000 करोड़ रुपये हासिल करने के लिए सहकारिता मंत्रालय की ओर से किए गए प्रयासों को रेखांकित करते हुए कहा कि मंत्रालय ने इस मुद्दे पर सीबीआई और आयकर विभाग सहित सभी संबंधित सरकारी निकायों को लाने की पहल की और उच्चतम न्यायालय के समक्ष एक साझा अपील की कि छोटे निवेशकों को धन पर पहला अधिकार मिलना चाहिए। उन्होंने कहा, अगर हमें देश में सहकारी आंदोलन को मजबूत करना है, तो हमें सहकारी समितियों में विश्वास को मजबूत करना होगा।

'हम दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर' पीएम पर बोले केंद्रीय मंत्री

नई दिल्ली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। पिछले नौ वर्षों में हमने जो बदलाव देखा है, वह असाधारण है। हम अब दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। ये बातें केंद्रीय मंत्री केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने शुक्रवार को कही। एक बातचीत के दौरान केंद्रीय मंत्री ने कहा कि आज विदेश नीति और व्यापार नीति को भारतीय नागरिकों, भारत और दुनिया को लाभान्वित करने की दृष्टि से लागू किया जा रहा है। एक व्यापक आधार वाले नेता के नेतृत्व में देश का आकलन इस बात से नहीं किया जाएगा कि देश सामान्य समय में कैसा प्रदर्शन करता है, बल्कि इस बात से किया जाएगा कि वह चुनौतियों का सामना कैसे करता है। महामारी की चुनौती जीवन में एक बार होने वाली और बहुत गंभीर चुनौती थी। प्रधानमंत्री ने व्यक्तिगत रूप से स्थिति की निगरानी की और दो मौकों पर- नवंबर 2021 और मई 2022 में उन्होंने पेट्रोल और डीजल पर केंद्रीय उत्पाद शुल्क को एक महत्वपूर्ण स्तर तक कम कर दिया। भाजपा शासित राज्यों ने तुरंत वैट कम कर दिया। विपक्षी दलों पर निशाना साधते हुए हरदीप सिंह पुरी ने कहा कि ईंधन की ऊंची कीमतों पर हंगामा करने वाली पार्टियों ने अभी तक जहां उनकी सरकारें हैं वैट कम नहीं किया है।

मनी-लॉन्ड्रिंग केस में यस-बैंक फाउंडर की जमानत याचिका खारिज

एससी ने कहा- राणा कपूर के मामले ने पूरे बैंकिंग सिस्टम को हिलाकर रख दिया

नई दिल्ली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार (4 अगस्त) को मनी लॉन्ड्रिंग मामले में यस बैंक के फाउंडर राणा कपूर की जमानत याचिका खारिज कर दी है। साथ ही कोर्ट ने कहा है कि इस मामले ने पूरे बैंकिंग सिस्टम को हिलाकर रख दिया है। कोर्ट ने यह भी सवाल किया कि एनफोर्समेंट डायरेक्टरेट 3,642 करोड़ रुपए के यस बैंक घोटाले की जांच में इतना समय क्यों ले रहा है।

अगर ईडी की जांच में इतना समय लग रहा है, तो कुछ गलत है

जस्टिस संजीव खन्ना ने कहा, 'इस मामले ने भारतीय बैंकिंग सिस्टम को हिलाकर रख दिया है। यस बैंक मुश्किल में पड़ गया और भारतीय रिजर्व बैंक को निवेशकों की सुरक्षा के लिए आगे आना पड़ा था।' उन्होंने आगे कहा, 'आपको ऐसे मामलों को प्राथमिकता पर लेना होगा, जहां भारी दांव हो और बड़ी संख्या में लोग शामिल हों। अगर ईडी की जांच में इतना समय लग रहा है तो कुछ गलत है।'

सैकड़ों शेल कंपनियां हैं, जांच में लंबा समय लग रहा: एएसजी

इसके जवाब में एडिशनल सॉलिसिटर जनरल (एएसजी) ने कहा, 'सैकड़ों शेल कंपनियां हैं। जांच में लंबा समय लग रहा है, क्योंकि हम विदेशों से जानकारी हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं।'

8 मार्च 2020 से सलाखों के पीछे हैं राणा कपूर: सीनियर एडवोकेट

इस बीच राणा कपूर की ओर से पेश सीनियर एडवोकेट अभिषेक मनु सिंघवी ने कोर्ट से कहा, 'बैंक को मुश्किल में डाल दिया गया था, लेकिन किसी व्यक्ति को अनिश्चित काल तक सलाखों के पीछे रखने का कोई कारण नहीं है। राणा कपूर 8 मार्च 2020 से सलाखों के पीछे हैं। उन्हें तीन साल से ज्यादा समय से कैद में रखा गया है। वे न्यूनतम संभव सजा से ज्यादा सजा भुगत चुके हैं।'

भारत की जीडीपी 2031 तक होगी दोगुनी

एसएंडपी का दावा- सालाना 6.7 फीसदी की दर से बढ़ेगी हमारी अर्थव्यवस्था

नई दिल्ली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। एसएंडपी ने चालू वित्त वर्ष में 6 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान जताया है। इस आधार पर भारत समूह20 में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था होगा। पिछले माह अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने चालू वित्त वर्ष में विकास का अनुमान बढ़ाकर 6.1% कर दिया था। आरबीआई ने 6.5% वृद्धि का अनुमान लगाया है। एसएंडपी को उम्मीद है कि प्रति व्यक्ति जीडीपी 4,500 डॉलर तक बढ़ सकती है।

सरकार के पास निवेश की सीमित गुंजाइश- सीईए

वित्त मंत्रालय के मुख्य आर्थिक सलाहकार वी अनंत नागेश्वरन का कहना है कि निवेश दर को 29 प्रतिशत से बढ़ाकर कम से कम 35 प्रतिशत करने की जरूरत है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश सहित निजी क्षेत्र को निवेश दर बढ़ानी चाहिए, क्योंकि सरकार के पास सीमित वित्तीय गुंजाइश है। सीईए ने सुझाव दिया कि इस संबंध में प्रमुख पहलों में घरेलू कॉरपोरेट बॉन्ड बाजार का विकास और निवेश आकर्षित करने के लिए अच्छी तरह से लक्षित राजकोषीय प्रोत्साहन शामिल होना चाहिए। भारत को 2030 तक 7-7.5 प्रतिशत की निरंतर वृद्धि हासिल करने के लिए विनिर्माण क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है। कुशल श्रम, बेहतर भौतिक बुनियादी ढांचे, अच्छी तरह से स्थापित औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र और बड़े घरेलू बाजार के मामले में देश के तुलनात्मक लाभ को देखते हुए विनिर्माण एक प्रमुख विकास क्षेत्र होना चाहिए।एसएंडपी ग्लोबल ने कहा है ब्याज दरों में बढ़ोतरी और वैश्विक मंदी से अल्पकालिक चुनौतियों के बावजूद 2031 तक भारतीय अर्थव्यवस्था बढ़कर दोगुना हो जाएगी। इसका आकार 3.4 लाख करोड़ डॉलर से बढ़कर 6.7 लाख करोड़ डॉलर हो जाएगा। एजेंसी ने कहा, सालाना 6.7 प्रतिशत की औसत वार्षिक दर से जीडीपी बढ़ेगी।

विनिर्माण और सेवाओं के निर्यात और उपभोक्ता मांग के कारण यह तेजी बनी रहेगी। एसएंडपी ने चालू वित्त वर्ष में 6 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान जताया है। इस आधार पर भारत समूह20 में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था होगा।

पिछले माह अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने चालू वित्त वर्ष में विकास का अनुमान बढ़ाकर 6.1% कर दिया था। आरबीआई ने 6.5% वृद्धि का अनुमान लगाया है। एसएंडपी को उम्मीद है कि प्रति व्यक्ति जीडीपी 4,500 डॉलर तक बढ़ सकती है।

बैंक कर्ज चुकाने के लिए कारोबारी घर तक बेच रहे

हालात सामान्य पर बेरोजगारी दर 3 गुना; 4 साल में 30% बिजनेस बंद

श्रीनगर, 4 अगस्त (एजेंसियां)। श्रीनगर के क्रॉकरी व्यापारी मंजूर अहमद भट परिवार के साथ डाउनटाउन के एक होटल में रहने को मजबूर हैं। बीते दिनों जेएंडके बैंक के कर्मचारियों ने उनका घर खाली करवा लिया। परिवार 14 कमरों वाले घर से सड़क पर आ गया। इनमें मंजूर की 95 साल की मां भी हैं, जिनकी दो ओपन हार्ट सर्जरी हुई हैं। उन पर बैंक की 2.75 करोड़ रुपए की उधारी है। नोटबुक का बिजनेस करने वाले शाहीम खान को बैंक का कर्ज चुकाने के लिए घर बेचना पड़ा। वे कहते हैं कि हर रोज 10 हजार नोटबुक छपती थीं। करोड़ों में टर्नओवर था। अनुच्छेद-370 हटने के बाद घाटी बंद हो गई। कोविड आ गया। स्कूल-कॉलेज बंद हुए और धंधा बंद हो गया। कुल मिलाकर घाटी की इंडस्ट्री खत्म होती जा रही है। बैंक कर्ज लेने वालों को तंग कर रहे हैं और लोग घर बेचने को मजबूर हैं। बेरोजगारी दर (24%) देश की दर से तिगुनी है। मौजूदा वक्त में 30% बिजनेस बंद हो चुके हैं। इंडस्ट्री की डिमांड है कि सरकार सपोर्ट करे।

विडंबना... सरकार नई इंडस्ट्री पर ध्यान दे रही, पर पुरानी ज्यादा जॉब दे सकती हैं

आखिर घाटी में बिजनेस क्यों नहीं सर्वाइव कर पा रहा? फेडरेशन चैंबर ऑफ इंडस्ट्रीज कश्मीर के प्रेसिडेंट शाहिद कामिल कहते हैं कि 2009 और 2010 में हालात खराब रहे। फिर 2-3 साल अच्छे रहे। 2014 में सैलाब आ गया। हालात सुधर ही रहे थे कि बुरहान वानी एपिसोड शुरू हो गया। फिर चीजें ठीक होने लगीं तो 2019 में अनुच्छेद-370 हटा लिया गया। मार्च 2020 में काम शुरू हुआ तो कोविड आ गया।दिसंबर 2021 तक बैक टू बैक इंडस्ट्री जूझती रहीं। इंडस्ट्री को सर्वाइव करने के लिए साल में 310 दिन चलना जरूरी है। यहां औसत 180 दिन चलती हैं। शाहिद कहते हैं कि सरकार का फोकस अभी नई इंडस्ट्री पर है, लेकिन बिना कॉस्ट इक्विलाइजेशन नई इंडस्ट्री भी सर्वाइव नहीं कर पाएंगी। नई इंडस्ट्री बनने में 4-5 साल लगेंगे और 3-4 लाख रोजगार देंगी, जबकि मौजूदा इंडस्ट्री से 6 लाख लोग जुड़े हैं।श्रीनगर की सेम्पोरा इंडस्ट्रियल स्टेट में घाटी का पहला विदेशी निवेश हुआ था।

दैनिक पंचांग

ग्रह गोचर

ग्रह	स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य-	कर्क	में	मेष--	22-42 बजे
चंद्र-	मीन	में	वृष--	00-25 बजे
मंगल	सिंह	में	मिथुन..	02-27 बजे
बुध-	सिंह	पें	कर्क...	03-38 बजे
गुरु-	मेष	में	सिंह...	06-51 बजे
शुक्र-	सिंह	में	कन्या..	08-57 बजे
शनि-	कुंभ	में	तुला...	11-02 बजे
राहु-	मेष	में	वृश्चिक.	13-12 बजे
केतु-	तुला	में	धनु.....	15-26 बजे
			मकर..	17-33 बजे
			कुंभ...	19-23बजे
			मीन ..	21-05 बजे

श्री पिंगल नामक संवत्सर-विक्रम संवत्- **2080**
शक संवत् **-1945,** सूर्य - दक्षिणायने ,ऋतु- **वर्षा**
महावीर निर्वाण संवत् **-2549,**हिजरी सन् **-1444**
कलियुग अवधि-**432000** सूर्योदय- **06-00** सूर्य अस्त- **18-44**
भोग्य कलि वर्ष-**426876**
कलियुग संवत् **-5124** वर्ष,
कल्पारंभ संवत् **-1972949124**
सृष्टि ग्रहारंभ संवत्-**1955885124**
दिशाशूल -- पूर्व - अदरक खाकर घर से निकले
तिथि- चतुर्थी - **09 -40** तक उपरान्त पंचमी
मास - अ.श्रावण कृष्ण पक्ष , शनिवार **05 August**
नक्षत्र -उ.भाद्रपद - **02-54** तक उपरान्त रेवती
योग - सुकर्मा - **23 - 11** - तक उप धृति
करण- बालव - **09 -40** - तक उप- कौलव
विशेष:-
व्रत -त्योहार - **पचक**

विशेष:- राशिफल ग्रहों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश के लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति जानने के लिए जन्म कुण्डली दिखाना चाहिए।

राहुकाल 09:10 से 10:46 तक

श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र Hyd,Sec

दिन का चौघड़िया		रात का चौघड़िया	
काल	06:00 - 07:34 अशुभ	लाभ.	18:44 - 20:10 शुभ
शुभ.	07:34 - 09:10 शुभ	उत्पात	20:10 - 21:34 अशुभ
रोग	09:10 - 10:46 अशुभ	शुभ.	21:34 - 22:58 शुभ
उत्पात	10:46 - 12:22 अशुभ	अमृत	22:58 - 00:22 शुभ
चंचल	12:22 - 13:58 शुभ	चंचल	00:22 - 01:46 शुभ
लाभ	13:58 - 15:34 शुभ	रोग	01:46 - 03:10 अशुभ
अमृत	15:34 - 17:10 शुभ	काल	03:10 - 04:34 अशुभ
काल	17:10 - 18:44 अशुभ	लाभ	04:34 - 06:00 शुभ

आपका राशिफल

मेष (चू,चे, चो, ला, ली, लू , ले, लो, अ,)

खुशियों से भरा अच्छा दिन. आज धन का आगमन आपको कई आर्थिक परेशानियों से मुक्ति दिला सकता है। नई चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करें और अपने सबसे अच्छे दोस्तों से मदद लें। निजी मामले नियंत्रण में रहेंगे। अपने पेशेवर अवरोधों को हल करने के लिए अपनी विशेषज्ञता का उपयोग करें।

वृष (ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,)

किसी दोस्त का रुखा रवैया आपको नाराज़ कर सकता है। लेकिन खुद को शांत रखने की कोशिश करें। इसे आपको कष्ट न दें बल्कि दुख से बचने का प्रयास करें। संदिग्ध पैसों के लालच में न पड़ें- निवेश को बहुत सावधानी से संभालना चाहिए। दोस्तों के साथ शाम मौज-मस्ती के साथ-साथ छुट्टियों की योजना बनाने के लिए भी अच्छी रहेगी।

मिथुन (का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, ह,)

दोस्त आपका परिचय किसी खास शख्स से कराएंगे जो आपके विचारों पर गहरा प्रभाव डालेगा। आज दूसरों की बातों में आकर निवेश करने से आर्थिक नुकसान होने की संभावना नजर आ रही है। आज अगर परिवार का कोई सदस्य आप पर नाराज़ हो जाए तो स्थिति हाथ से बाहर जाने से पहले सीमा तय कर लें।

कर्क (ही, हू ,हे , हो, डा , डी, डू, डे, डो,)

कोई मित्र आपकी खुली मानसिकता और सहनशीलता की परीक्षा ले सकता है। आपको सावधान रहना चाहिए कि आप अपने मूल्यों को न छोड़ें और हर निर्णय में तर्कसंगत रहें। धन लाभ आपकी उम्मीद के मुताबिक नहीं होगा। आपका ज्ञान और अच्छा हास्य आपके आस-पास के लोगों को प्रभावित करेगा।

सिंह (मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,)

किसी अनावश्यक बहस में अपनी ऊर्जा बर्बाद न करें। अपने आप को याद दिलाएं कि बहस से आपको कभी कुछ हासिल नहीं होता बल्कि कुछ खोना पड़ता है। निवेश को दीर्घकालिक नजरिए से करने की जरूरत है। दिन की शुरुआत करीबी रिश्तेदारों या दोस्तों से मिली खुशखबरी से होती है।

कन्या (टो, पा, पी, पू ,ष, ण, ठ, पे ,पो,)

आज आप आशा के जादुई जादू में हैं। अगर आपकी रचनात्मक प्रतिभा का उचित उपयोग किया जाए तो वह अत्यधिक लाभदायक साबित होगी। जब आप किसी समूह में हों तो आप क्या कहते हैं, इस पर नज़र रखें- आपकी आवेगपूर्ण टिप्पणियों के लिए आपकी कड़ी आलोचना हो सकती है।

तुला (रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,)

शराब पीने की आदत से छुटकारा पाने के लिए यह बहुत ही शुभ दिन है। आपको यह समझना होगा कि शराब पीना स्वास्थ्य का घातक दुश्मन है और यह आपकी कार्यक्षमता को भी कम करता है। धन का अचानक प्रवाह आपके बिलों और तात्कालिक खर्चों को संभाल लेता है।

वृश्चिक (तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,)

बच्चे आपकी पसंद के मुताबिक काम नहीं करेंगे, जिससे आप चिड़चिड़ा हो सकते हैं। आपको खुद पर संयम रखना चाहिए क्योंकि अनियंत्रित क्रोध आमतौर पर हर किसी को और क्रोधित व्यक्ति को सबसे ज्यादा प्रभावित करता है क्योंकि यह ऊर्जा बर्बाद करता है और निर्णय क्षमता को धीमा कर देता है।

धनु (ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे)

आपके लिए यह सही समय है कि आप तंबाकू का सेवन बंद कर दें अन्यथा बाद में आपके लिए इस आदत से छुटकारा पाना बेहद मुश्किल हो जाएगा और इसका सेवन न केवल आपके शरीर को कमजोर करता है बल्कि दिमाग पर भी इसका असर डालता है।

मकर (भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी)

आज आप जो कुछ शारीरिक परिवर्तन करेंगे, वे निश्चित रूप से आपके रूप-रंग में निखार लाएंगे। आज आपको अपना पैसा खर्च करने की जरूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि घर का कोई बुजुर्ग आपकी आर्थिक मदद कर सकता है। जीवनसाथी के साथ बेहतर समझ घर में सुख-शांति और समृद्धि लाती है।

कुंभ (गू, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,)

स्वयं को किसी रचनात्मक कार्य में व्यस्त रखें। आपकी खाली बैठे रहने की आदत मानसिक शांति के लिए घातक साबित हो सकती है। अपने भविष्य को समृद्ध बनाने के लिए आपने अतीत में जो भी पैसा निवेश किया था, उसका आज फल मिलेगा। दिन के उत्तरार्ध में आप आराम करना और अपने परिवार के सदस्यों के साथ समय बिताना पसंद करेंगे।

मीन (दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची)

आपके लिए यह समझने का समय आ गया है कि मानसिक शत्रु शरीर की रोग-प्रतिरोधक शक्ति को कम कर देते हैं इसलिए किसी भी अवांछित विचार को मन में न आने दें। आज आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, जिसके कारण आपका धन काफी खर्च होगा।

पं. महेशचन्द्र शर्मा 9247132654, 8309517693

पंजाब राजभवन में टमाटर के इस्तेमाल पर रोक

गवर्नर बीएल पुरोहित ने दिए आदेश; किल्लत और दाम बढ़ने पर लिया फैसला

चंडीगढ़, 4 अगस्त (एजेंसियां)। पंजाब में टमाटर की किल्लत और दामों के आसमान छूने के बाद अब पंजाब राजभवन में भी टमाटर का इस्तेमाल नहीं किया जा सकेगा। गवर्नर बनवारी लाल पुरोहित ने टमाटर के पंजाब राजभवन में इस्तेमाल पर रोक लगाने के आदेश दिए हैं। उन्होंने पंजाब में इस समस्या को आत्मसात करते हुए यह फैसला लिया। पंजाब में खाद्य पदार्थों समेत विशेष रूप से टमाटर के दामों में काफी बढ़ोतरी हुई है। पंजाब के लोगों की समस्या को समझ कर एकजुटता दर्शाने के मद्देनजर गवर्नर बीएल पुरोहित ने राजभवन में टमाटर पर रोक लगाने का आदेश जारी किया है।

चुनौतीपूर्ण समय में जिम्मेदारी से इस्तेमाल

गौरतलब है कि बीते कुछ समय से पंजाब और केंद्र शासित प्रदेश के लोग टमाटर की कीमत कहीं अधिक बढ़ने से काफी परेशानी में हैं। इसका कारण बेमौसमी बरसात, बाढ़ और खाद्य पदार्थों की सप्लाई बाधित होना मुख्य वजह हैं। ऐसा होने से बाजार में खाद्य पदार्थों की कीमतों में अस्थिरता बनी है। इसी कारण गवर्नर बीएल पुरोहित ने इस चुनौतीपूर्ण समय में राजभवन में टमाटर के इस्तेमाल पर रोक लगा आवश्यक वस्तुओं का इस्तेमाल जिम्मेदारी से करना दर्शाया है।

खपत कम होने से कीमत में होगी गिरावट

गवर्नर बीएल पुरोहित ने कहा कि किसी वस्तु की खपत को रोकना या कम करना उसकी कीमत को प्रभावित करता है। मांग कम होने पर इसकी कीमत स्वयं नीचे आ जाएगी।

20 से 25 किलो टमाटर होता है इस्तेमाल

राजभवन में महीने में करीब 20-25 किलो टमाटर इस्तेमाल होता है।

जब कभी किसी को विशेष रूप से भोज पर बुलाया जाए तो ऐसे में जरूरत के अनुसार कम-ज्यादा रहता है। चंडीगढ़ की मंडी में अच्छी क्वालिटी

शेयर बाजार में गिरावट पर लगी ब्रेक

हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन शानदार तेजी के साथ बंद हुआ सेंसेक्स-निफ्टी

नई दिल्ली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। पिछले तीन दिनों से लगातार जारी गिरावट के बाद हफ्ते का आखिरी कारोबारी सत्र भारतीय शेयर बाजार के लिए बेहद शानदार रहा है।आईटी और बैंकिंग स्टॉक्स में खरीदारी के चलते बाजार तेजी के साथ बंद हुआ है।मिड कैप शेयरों में भी खरीदारी देखी गई।आज का कारोबार खत्म होने पर बीएसई सेंसेक्स 480 अंकों की तेजी के साथ 65,721 और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 136 अंकों के उछाल के साथ 19,517 अंकों पर बंद हुआ है।

आज के ट्रेड में बैंकिंग, आईटी, फार्मा, मेटल्स, रियल एस्टेट, एनर्जी, इंफ्रा, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, हेल्थकेयर, ऑयल एंड गैस जैसे सेक्टर के स्टॉक्स तेजी के साथ बंद हुए। जबकि केवल ऑटो और एफएमसीजी स्टॉक्स में गिरावट देखने को मिली है।आज के कारोबार में मिड कैप और स्मॉल कैप स्टॉक्स में भी खरीदारी देखने को मिली है।निफ्टी के 50 शेयरों में 30 शेयर तेजी के साथ और 20 गिरकर क्लोज हुए।जबकि सेंसेक्स के 30 शेयरों में 18 शेयर तेजी के साथ और 12 गिरावट के साथ बंद हुए.शेयर बाजार में शानदार तेजी के चलते आज के ट्रेड में निवेशकों की संपत्ति में उछाल देखने को मिला है।बीएसई पर लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैप 304.04 लाख करोड़ रुपये पर जा पहुंचा है तो पिछले ट्रेडिंग सेशन में 302.39 करोड़ रुपये पर रहा था। आज के सेशन में निवेशकों की संपत्ति में 1.65 लाख करोड़ रुपये का उछाल देखने को मिला है। आज के कारोबार में इंडसइंड बैंक 3.25 फीसदी, टेक महिंद्रा 2.91 फीसदी, विप्रो 2.28 फीसदी, भारती एयरटेल 2.02 फीसदी, एचसीएल टेक 1.78 फीसदी, एक्सिस बैंक 1.59 फीसदी, एचडीएफसी बैंक 1.48 फीसदी की तेजी के साथ बंद हुआ है।जबकि एसबीआई 2.94 फीसदी, एनटीपीसी 1.09 फीसदी, मारुति सुजुकी 0.96 फीसदी और टाटा मोटर्स 0.69 फीसदी की गिरावट के साथ बंद हुआ है।

काश! खरीद लिया होता ये शेयर, हर साल दोगुना किया पैसा

10 साल पहले लगाते पैसा तो आज बंगला-गाड़ी सब होता

नई दिल्ली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। गोल्ड, शेयर बाजार और प्रॉपर्टी में अगर निवेश सही मौके पर किया जाए तो रिटर्न बड़े जबरदस्त मिलते हैं।पिछले 10 वर्षों में इन तीनो एसेट क्लास ने निवेशकों को जबरदस्त फायदा पहुंचाया।इसलिए अक्सर लोगों के मन में यह कसक रहती है कि काश हमने या पापा ने 10 साल पहले फलां शेयर में पैसा लगा दिया होता तो अच्छा रिटर्न मिल जाता।टाटा ग्रुप के शेयर टाइटन ने भी लोगों को 10 साल पहले निवेश का बेहतरीन मौका दिया था।टाइटन कंपनी पिछले कुछ वर्षों में भारतीय शेयर बाजारों में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले शेयरों में से एक रही है।मशहूर निवेशक दिवंगत राकेश झुनझुनवाला ने इस शेयर में बड़ी हिस्सेदारी खरीदी थी।सोचिये अगर एक दशक पहले आपने या आपके पिता जी ने टाटा समूह की इस कंपनी में 10,000 का निवेश किया होता, तो आज नतीजा क्या होता?

अगस्त 2013 में क्या था शेयर का भाव

अगस्त 2013 में टाइटन का शेयर 280.35 पर मिल रहा था, लेकिन मौजूदा कीमत 2,924 है।अगर आप 10 साल पहले 10,000 रुपये में टाइटन के 36 शेयर मिल जाते और आज, उन 36 शेयरों का मूल्य लगभग 1,05,264 होता यानी इस अवधि में आपको 10 गुना रिटर्न मिल जाता।टाइटन देश में रिटेल सेक्टर में एक नामचीन कंपनी है, जो ज्वैलरी से लेकर चश्मे तक कई प्रोडक्ट्स बेचती है।हालाँकि, कंपनी के हालिया तिमाही नतीज आने से शेयर में गिरावट आई है, क्योंकि ब्रोकरेज हाउसेज ने स्टॉक के टारगेट प्राइस कट कर दिए हैं।

तिमाही नतीजों के बाद शेयर में गिरावट

अप्रैल-जून अवधि में कंपनी का शुद्ध मुनाफा 753 करोड़ रहा, जो पिछले साल की समान अवधि के दौरान दर्ज 785 करोड़ के मुनाफे से 4% कम है।इस तिमाही के लिए कंपनी का राजस्व 11,897 करोड़ रहा, जो साल-दर-साल 26% अधिक है।

विश्लेषकों ने आंकड़ों पर मिली-जुली प्रतिक्रिया व्यक्त की है।जेफ़रीज़ ने 2,650 के मूल्य लक्ष्य के साथ स्टॉक के लिए अपनी "होल्ड" रेटिंग बरकरार रखी और कंपनी के मार्जिन को नकारात्मक और कमाई में कमी का हवाला दिया।वहीं, मॉर्गन स्टेनली ने 3,190 के मूल्य लक्ष्य के साथ स्टॉक के लिए अपनी "इक्वलवेट" रेटिंग बरकरार रखी, यह देखते हुए कि कंपनी का मुनाफा अनुमान से लगभग 15% कम है।

तो अब ट्विटर पर होगी शेयरों की ट्रेडिंग? एलन मस्क ने साफ कर दी बात

नई दिल्ली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति एलन मस्क ने हाल ही में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्विटर की रिब्रांडिंग की है।अब प्लेटफॉर्म को एक्स नाम दिया गया है।ट्विटर के पारंपरिक चिड़िया वाले लोगो को भी एक्स से रिप्लेस किया गया है।मस्क 'एक्स' को एवरीथिंग ऐप/प्लेटफॉर्म के रूप में डेवलप करना चाहते हैं, इसीलिए ट्विटर की रिब्रांडिंग की गई है।अब ऐसी खबरें हैं कि एक्स प्लेटफॉर्म पर शेयर ट्रेडिंग भी शुरू की जा सकती है.Semafor के द्वारा इस बारे में एक दिन पहले यानी 3 अगस्त को एक्सक्लूसिव जानकारियां साझा की गईं।उसमें दावा किया गया कि एक्स प्लेटफॉर्म के तहत ट्रेडिंग हब की जल्द शुरुआत की जा सकती है।मामले से जुड़े सूत्रों के हवाले से Semafor ने बताया कि एलन मस्क एक्स को फाइनेंशियल डेटा पावरहाउस बनाना चाहते हैं और इसके लिए वो कोलाबोरेट करने की कोशिश में हैं।

मोनू, बिट्टू या मामन खान, नूंह दंगों के पीछे कौन?

हाउस अरेस्ट बिट्टू बजरंगी बोला– यात्रा में क्या घूंघट में जाता

नूंह, 4 अगस्त (एक्सक्लूसिव डेस्क)। दिल्ली से 85 किमी दूर हरियाणा का नूंह 31 जुलाई से अशांत है। चप्पे-चप्पे पर पैरामिलिट्री फोर्स के जवान गश्त कर रहे हैं। दुकानें और घरों के दरवाजे बंद हैं। शहर के तिरंगा पार्क में अब भी 31 जुलाई को हुई हिंसा के दाग दिखाई दे रहे हैं। हिंसा का असर हरियाणा के 9 जिलों तक पहुंच गया है। यहां धारा 144 लगा दी गई। इंटरनेट बंद हैं, तो लोग बेहाल।

पूरा मामला ब्रज मंडल यात्रा से शुरू हुआ। सीएम मनोहर लाल खट्टर दंगों को साजिश बताते हुए लोगों की सुरक्षा से हाथ खडे कर चुके हैं। सोशल मीडिया पर यात्रा से पहले भड़काऊ बयानबाजी हो रही थी। इसमें कुछ नाम निकले, जो बार-बार सामने आए, हिंसा से पहले और बाद में भी। इनमें दो नाम बजरंग दल से जुड़े हैं। मोनू मानेसर और बिट्टू बजरंगी उर्फ राजकुमार। बिट्टू बजरंगी के खिलाफ नामजद एफआईआर भी हुई है। मोनू मानेसर का नाम इससे पहले गोतस्करी के आरोप में दो लोगों की हत्या में आया है। बिट्टू बजरंगी का नाम इस हिंसा के बाद चर्चा में है। एक नाम फिरोजपुर झिरका से कांग्रेस के विधायक मामन खान का भी है।

बिट्टू बजरंगी का घर फरीदाबाद में है। बिट्टू घर का नाम है,

असली नाम राजकुमार। हनुमान भक्त होने की वजह से सभी बिट्टू बजरंगी कहने लगे। बिट्टू बजरंगी को बल्लभगढ़ क्राइम ब्रांच सुबह से शाम तक नजरबंद रख रही है। शाम के बाद उनके साथ क्राइम ब्रांच का एक अधिकारी निगरानी के लिए रहता है। यात्रा से पहले बिट्टू बजरंगी का एक वीडियो सामने आया था। इसमें वे कहते हैं कि 'ये बोलेंगे कि बताया नहीं कि हम ससुराल आए और मुलाकात नहीं हुई। फूल माला तैयार रखना।' तभी पीछे से कोई बोलता है, जीजा आ रहे हैं। बिट्टू की आवाज आती है- हां। इसी बयान पर बिट्टू बजरंगी पर केस दर्ज हो गया। क्राइम ब्रांच की नजरबंदी के बावजूद बिट्टू बजरंगी बातचीत के लिए तैयार हो गया।

ब्रज मंडल यात्रा क्या है, कब से शुरू हुई, इसे क्यों निकालते हैं के जवाब में बिट्टू ने कहा ये यात्रा अनादिकाल से चल रही है। पहले सिर्फ नूंह जिले के लोग यात्रा निकालते थे। अब हरियाणा के अलग-अलग जिलों से भक्त नूंह-मेवात के शिव मंदिर में इकट्ठा होते हैं, वहां से पूरे जिले में रैली निकालते हैं। इसका मकसद हिंदुओं को जगाना है। हमारा संगठन यात्रा से 5-7 साल पहले जुड़ा है। आप धार्मिक यात्रा में गए थे, चुपचाप भी जा सकते थे, मकसद तो आस्था थी न? वह भड़कते हुए बोला कि चुपचाप मतलब घूंघट में?घूंघट में नहीं, धार्मिक यात्रा शांति से निकाली जा सकती थी, इसमें चैलेंज करते हुए वीडियो वायरल करने का मकसद क्या था? तो उन्होंने कहा कि कुछ लोगों ने धमकी दी थी कि एक बार आकर दिखाओ, स्वागत हम करेंगे। मैंने उनके लिए वीडियो बनाया था। अगर मुझसे कोई ये बोलेगा कि आओ तुम्हें मारेंगे, तुम्हारा स्वागत करेंगे...तो उनका जवाब देना पड़ेगा न। ये मैसेज उनके लिए ही था। सबके लिए नहीं। 15 दिन पहले मेवात में मुझ पर हमला हुआ था। 3 गोलियां चलाई थीं। सैकड़ों लोगों ने घेर लिया था। मोबाइल पर एक मैसेज दिखाते हुए, पढ़िए आप। लिखा था-आ जा एक बार, पिछली बार 4-5 थप्पड़ में बच गया था। इस बार नहीं बचेगा।

बिट्टू ने कहा जो वीडियो न्यूज में चल रहे हैं, वायरल हो रहे हैं, क्या प्रशासन को उनकी जानकारी नहीं लगेगी। मैं कुछ बोलता हूं, तो सबको पता लगता है। फिर वहां के लोग बोल रहे थे, तो प्रशासन को पता कैसे नहीं लगा। विधायक मामन खान ने प्याज फोड़ने की बात कही, तो प्रशासन को पता नहीं लगा? हम जानकारी क्यों देंगे। हमारे वीडियो की जानकारी तो सबको लग गई। उनके वीडियो, बयान किसी को पता ही नहीं चले। बजरंग दल में हमें सेल्फ डिफेंस सिखाया जाता है, लेकिन आतंकवादियों की तरह गोलियां चलाना नहीं। निहत्थों पर वार करना नहीं। महिलाओं और बुजुर्गों पर हमला करना नहीं। प्रशासन के लोगों की हत्या करना नहीं। हम हथियार लेकर नहीं गए थे।

आप गौरक्षा का काम करते हैं, इसके अलावा और क्या काम है? तो लव जिहाद रोकते हैं। हिंदू हो या मुस्लिम बेटी। अभी कुछ मुस्लिम लड़कियों को कश्मीर का एक लड़का परेशान कर रहा था। उनसे लाखों रु. ऐंठ लिए। अश्लील वीडियो बना लिया था। मैंने उनकी मदद की। कम्प्लेन करवाई। वो लड़कियां इस लड़ाई में भी मेरे साथ हैं।

आप नजरबंद हैं, फिर प्रशासन से आपको बात करने की इजाजत कैसे मिल गई? मैं अपने घर पर हूं, किसी से भी बात कर सकता हूं। प्रशासन ने सुरक्षा के लिहाज से हमें नजरबंद रखा है। माहौल ठीक नहीं है। हमें कानून का सम्मान और सहयोग करना ही चाहिए।

चार और लोग, जिन पर उकसाने के आरोप

नूंह में निकलने वाली यात्रा से पहले मोनू मानेसर ने एक वीडियो जारी किया। कहा कि 31 जुलाई को मेवात ब्रज मंडल यात्रा है। सभी भाई इस यात्रा में जाएं। हम खुद और हमारी टीम इसमें शामिल होगी। इसके बाद मोनू का एक और वीडियो सामने आया। इसमें मोनू अपने साथियों के साथ गाड़ी में है। दावा किया गया कि वो यात्रा में शामिल होने जा रहा है। पुलिस रिकॉर्ड में मोनू फरवरी से फरार चल रहा है। हमने हिंसा के बारे में बात करने के लिए मोनू मानेसर से वक्त लिया, पर बाद में उसका फोन बंद आने लगा।

मामन खान, कांग्रेस विधायक

मामन खान फिरोजपुर झिरका से कांग्रेस के विधायक हैं। 31 जुलाई को मोनू मानेसर ने वीडियो जारी कर कहा था कि वो यात्रा में शामिल होने टीम के साथ नूंह आएगा। इसके जवाब में मामन खान ने फेसबुक पर लिखा, 'किसी भी साथी को चिंता करने की जरूरत नहीं है। मैंने विधानसभा में भी आपकी लड़ाई लड़ी थी। मेवात में भी आपकी लड़ाई मैं ही लड़ूंगा।' हिंदूवादी संगठनों के लोगों का आरोप है कि इसी पोस्ट की वजह से हिंसा भड़की।

5 महीने पहले हरियाणा विधानसभा में राजस्थान के जुनैद–नासिर हत्याकांड पर हंगामा हुआ था। तब विधायक मामन खान ने कहा था कि अब की बार मोनू मानेसर मेवात आया, तो उसको प्याज की तरह फोड़ देंगे। इसी साल फरवरी में मामन खान ने हरियाणा विधानसभा में मानेसर को दोबारा मेवात आने की चुनौती दी थी। कहा था कि वे उसे सबक सिखाएंगे।

मोनू मानेसर ने एक इंटरव्यू में आरोप लगाया था कि मामन खान ने ही लोगों को हिंसा के लिए उकसाया। हमने इस बारे में मामन खान से बात करने की कोशिश की, लेकिन उनका फोन रिसीव नहीं हुआ। 56 साल के मामन खान 2019 में कांग्रेस के टिकट पर चुनाव जीते थे। उन्हें 84,546 यानी करीब 58% वोट मिले थे। उन्होंने बीजेपी के नसीम अहमद को 37 हजार वोट से हराया था।

दंगाइयों की भीड़ को लीड करने वाला कार ड्राइवर

छानबीन में 31 जुलाई को एक वीडियो मिला है, जिसमें एक सफेद रंग की हुंडई वेन्यू कार में बैठा शख्स दंगाइयों की भीड़ को लीड कर रहा है। कार का नंबर पीबी 31 डब्ल्यू 4831 है। उसके पीछे चल रही भीड़ धार्मिक नारे लगा रही है। कार में मौजूद शख्स बार-बार उन्हें गाइड कर रहा है।

इस दौरान मौके पर पुलिस की गाड़ी भी मौजूद थी, लेकिन भीड़ उनसे डरे बिना आगे बढ़ रही है। छानबीन में पता चला कि वीडियो में नजर आ रही जगह दिल्ली-अलवर हाईवे है, जो नूंह शहर के बीच से गुजरता है। हिंसा वाले दिन दोपहर 12 बजे दंगाई पहले होडल चौक पर इकट्ठा हुए और हाईवे पर ही लगभग 2 किलोमीटर चलते हुए तिरंगा पार्क पहुंचे थे।

होडल चौक से रवाना होते समय भीड़ में सिर्फ 20-25 दंगाई थे। जैसे-जैसे ये लोग तिरंगा पार्क की तरफ बढ़े, नूंह शहर के अलग-अलग इलाकों से लोग इकट्ठा होकर इनके साथ जुड़ते गए। तिरंगा पार्क पहुंचने तक हाईवे पर उपद्रवियों की संख्या 250 से ज्यादा हो चुकी थी। पुलिस वीडियो के आधार पर कार में बैठे शख्स को तलाश रही है। मोहम्मद समर नाम से बने एक अकाउंट से भी वीडियो पोस्ट हुआ था। इसमें एक लड़का कह रहा है कि कल नूंह में दोबारा प्रोटेस्ट है। सभी अपने यार-दोस्त को लेकर जाएं और खुद जाएं। हम लोग भी अपनी टीम के साथ पहुंचेंगे। नूंह में हुई हिंसा के बाद हरियाणा के 4 जिलों में तनाव है। चारों जिलों में पैरामिलिट्री फोर्स की 20 कंपनियां तैनात हैं। हिंसा में मरने वालों की संख्या 7 हो गई है। नूंह, पलवल, फरीदाबाद और गुरुग्राम के सोहना, मानेसर और पटोदी में 5 अगस्त तक इंटरनेट और एसएमएस सेवाएं बंद की गई हैं। सीईटी स्क्रीनिंग टेस्ट को देखते हुए गुरुवार दोपहर 1 से 4 बजे तक 3 घंटे के लिए बैन हटाया गया। नूंह में जुमे की नमाज घरों में हुई।

150 फीट ऊंचे टावर पर चढ़ी गर्लफ्रेंड

प्रेमिका को मनाने प्रेमी भी चढ़ा, उतरने की करता रहा मिन्नतें, 2 घंटे तक चला ड्रामा

गौरेला-पेंड्रा-मरवाही, 4 अगस्त (एजेंसियां)। गौरेला-पेंड्रा-मरवाही जिले के कोडगार गांव में प्रेमी-प्रेमिका का हाई वोल्टेज ड्रामा देखने को मिला। गुरुवार शाम को गुस्साई शादीशुदा प्रेमिका पहले हाईटेंशन टावर पर चढ़ गई, इसके बाद उसे मनाने के लिए उसका प्रेमी भी उसके पीछे-पीछे टावर पर चढ़ गया। मामला पेंड्रा थाना क्षेत्र का है।

जानकारी के मुताबिक, गौरेला थाना क्षेत्र के नेवरी नवापारा की रहने वाली अनीता भैना का प्रेम प्रसंग पिछले एक साल से कोडगार गांव में रहने वाले मुकेश भैना के साथ चल रहा है। अनीता शादीशुदा है। उसकी शादी 6 साल पहले हुई थी, लेकिन उसका अलगाव अपने पति से काफी साल पहले हो चुका है। पति से अलग होने के बाद मुकेश के साथ उसका अफेयर चल रहा था। कुछ दिनों पहले प्रेमिका अनीता अपने

प्रेमी के साथ रहने के लिए कोडगार गांव आ गई थी। दोनों एक साथ एक ही घर में रह रहे थे। गुरुवार को दोनों के बीच किसी बात को लेकर बहस हो गई। इससे नाराज होकर महिला घर से निकल गई और खेत में लगे हाईटेंशन टावर पर जाकर चढ़ गई। महिला टावर के एकदम ऊपर जाकर बैठ गई।

जब कुछ ग्रामीणों की नजर टावर पर पड़ी, तो वे दूर से महिला को पहचान नहीं पाए, हालांकि आवाज लगाकर उसे नीचे उतारने की कोशिश की। इधर हाईटेंशन टावर पर महिला के चढ़ने की बात गांव में फैल गई। धीरे-धीरे वहां बड़ी संख्या में गांववाले इकट्ठा हो गए। इस बीच प्रेमी मुकेश भैना भी टावर के पास पहुंचा। वो अनीता को देखते ही पहचान गया और उसे मनाने के लिए वो भी हाईटेंशन टावर पर एकदम ऊंचाई पर चढ़ गया।

प्रेमी महिला को उतारने के लिए लगातार उसे समझाता रहा, उसे मनाता रहा। बहुत कोशिशों के बाद प्रेमिका थोड़ा सा नीचे उतरी। दोनों प्रेमी-प्रेमिका टावर के बीच में आकर बैठ गए। यहां भी दोनों के बीच मान-मनौव्वल चलता रहा। इधर लोगों ने पुलिस को भी सूचना दे दी।

सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और समझा-बुझाकर दोनों प्रेमी-प्रेमिका को हाईटेंशन टावर से नीचे उतारा। दोनों से पूछताछ की गई है। इसके बाद प्रेमिका को उसके माता-पिता को सौंप दिया गया। प्रेमिका अपने परिजनों के साथ नेवरी नवापारा चली गई। पेंड्रा थाना प्रभारी धर्मनारायण तिवारी ने बताया कि हाईटेंशन टावर में विद्युत प्रवाह लगातार जारी था, लेकिन राहत की बात ये है कि कोई हादसा नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि दोनों से पूछताछ की गई है। मामूली विवाद में महिला ने ऐसा कदम उठा लिया था। अब उसे उसके परिजनों को सौंप दिया गया है।

दंगों के दिन छुट्टी पर रहे नूंह एसपी का ट्रांसफर

शहर में 20 घर–दुकानें और 250 झुग्गियों पर चला बुलडोजर, पटौदी में हिंदू संगठनों ने मार्च निकाला

नूंह, 4 अगस्त (एजेंसियां)। हरियाणा सरकार ने गुरुवार देर रात हिंसा प्रभावित नूंह जिले के पुलिस अधीक्षक (एसपी) वरुण सिंघला का ट्रांसफर कर दिया। वह हिंसा के दिन छुट्टी पर थे। उन्हें अब भिवानी जिले का चार्ज दिया गया है। उनकी जगह पर एसपी नरेंद्र बिजारणिया को नूंह का जिम्मा सौंपा गया है। बिजारणिया पहले भिवानी के एसपी थे और साथ में एडीजी (लॉ एंड ऑर्डर) के ओएसडी की जिम्मेदारी भी संभाल रहे थे।

नूंह हिंसा के बाद शुक्रवार को प्रशासन ने शहर के नल्हड़ शिव मंदिर के पास 20 घरों- दुकानों और तावडू इलाके में 250 झुग्गी-झोपड़ियों पर बुलडोजर चलाया। ये कंस्ट्रक्शन अवैध थे।

पुलिस सूत्रों ने भास्कर को बताया कि यहां बांग्लादेशी रोहिंग्या अवैध तरीके से रह रहे थे और हिंसा में शामिल थे। कई युवकों के नाम एफआईआर में दर्ज हैं। वहीं, नूह में हुई हिंसा के विरोध में गुरुग्राम के पटौदी में हिंदू संगठनों ने मार्च निकाला। हिंदू संगठन पटौदी के पुराने कोर्ट पर इकट्ठा हुए और बाजार में दुकानों को बंद करते हुए एसडीएम ऑफिस पहुंचे।इधर, हरियाणा के गृह मंत्री अनिल विज ने मोनू मानेसर को लेकर कहा कि वो जरूर पकड़ा जाएगा। जो उसने किया है उसकी सजा उसको मिलेगी।

बजरंग दल-विहिप की रैलियों के खिलाफ याचिका पर सुनवाई आज

नूंह हिंसा के विरोध में 2 अगस्त को बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद ने दिल्ली-एनसीआर में रैलियां निकाली थीं। इनके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की गई थी।

इस पर सुनवाई करते हुए कोर्ट ने उत्तर प्रदेश, हरियाणा और दिल्ली सरकार को नोटिस जारी किया था। आज जस्टिस संजीव खन्ना और एसवीएन भट्टी की बेंच मामले पर दोबारा सुनवाई करेगी।

नूंह में जुमे की नमाज घरों में अदा हुई

नूंह और गुरुग्राम में आज जुमे की नमाज घरों में अदा हुई। नूंह के डीसी प्रशांत पंवार और गुरुग्राम में एसीपी क्राइम वरूण दहिया ने खुले में नमाज न पढ़ने की अपील की थी।

हिंसा के चलते 4 जिलों- नूंह, पलवल, फरीदाबाद और गुरुग्राम में हालात तनावपूर्ण हैं। चारों जिलों में पैरामिलिट्री फोर्सेज की 20 कंपनियां तैनात की गई हैं और इंटरनेट बंद है। राज्य के 9 जिलों में धारा 144 लागू है।

रोहतक में निगम के सीनियर डिप्टी मेयर और संत महामंडलेश्वर बाबा अनभुतानंद नजरबंद

नूंह हिंसा के बाद रोहतक नगर निगम के सीनियर डिप्टी मेयर राजकमल राजू सहगल, उनके पीए रोहित शर्मा और संत महामंडलेश्वर बाबा अनभुतानंद को पुलिस ने उनके घरों पर नजरबंद किया है। इन्होंने गुरुवार को हिंदू संगठनों की मीटिंग की थी, जिसमें विशेष समुदाय की दुकानें खाली करवाने की बात कही गई थी।

पानीपत में चिकन शॉप पर पथराव, पटौदी में बाइक जलाई

गुरुवार रात को पानीपत में कुछ लोगों ने एक चिकन शॉप और दो गाड़ियों पर पथराव कर दिया। नूंह हिंसा में पानीपत के अभिषेक की मौत हुई थी। उसके घर के पास ही भीड़ ने यह तोड़-फोड़ की। गुरुवार रात को ही गुरुग्राम के पटौदी में 3 बाइक्स को आग के हवाले कर दिया गया। ये बाइक्स राशिद ऑटो वर्क्स के बाहर खड़ी हुई थीं और अंदर एक मैकेनिक सो रहा था। फायर टीम ने आग बुझाई और सो रहे व्यक्ति को बचाया।

इससे पहले बुधवार रात को नूंह में दो धार्मिक स्थलों और पलवल में 3 दुकानों, 2 धार्मिक स्थलों और एक टेंपो में आग लगा दी गई थी।

विधानसभा में पास हुआ झारखंड प्रतियोगी परीक्षा बिल

नकल करने वालों पर होगी कड़ी कार्रवाई

रांची, 4 अगस्त (एजेंसियां)। झारखंड विधानसभा ने झारखण्ड प्रतियोगी परीक्षा (भर्ती में अनुचित साधनों की रोकथाम और निवारण) बिल 2023 पारित कर दिया। यह विधेयक परीक्षाओं में अनुचित साधनों के उपयोग और अनियमितताओं पर नकेल कसने और प्रश्नपत्र लीक की घटनाओं को रोकने का एक प्रयास है, क्योंकि यह परीक्षाओं के दौरान नकल करते हुए पकड़े गए छात्रों के लिए सजा के कड़े प्रावधानों के साथ-साथ प्रश्नपत्रों या किसी अन्य को लीक करने में शामिल सांठगांठ से संबंधित है।

झारखंड प्रतियोगी परीक्षा (भर्ती में अनुचित साधनों की रोकथाम और निवारण) विधेयक, 2023, प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में अनुचित साधनों के उपयोग पर रोक लगाने और राज्य में प्रश्न पत्र लीक को रोकने के लिए एक कारगर उपाय होगा। विधेयक में झारखंड सरकार द्वारा आयोजित प्रतियोगी परीक्षाओं में धोखाधड़ी और पेपर लीक के लिए कड़ी सजा का प्रस्ताव है। प्रतियोगी परीक्षा के दौरान किसी भी अभ्यर्थी को नकल करते हुए या किसी अनुचित साधन का उपयोग करते हुए पकड़े जाने पर तीन साल की कैद और 5 लाख रुपये का जुर्माना लगाया जाएगा। बिल में प्रस्ताव है कि जुर्माना न देने पर 9 महीने की अतिरिक्त कैद होगी। झारखंड प्रतियोगी परीक्षा (भर्ती में अनुचित साधनों की रोकथाम और निवारण) विधेयक, 2023 पारित होने पर झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन ने कहा कि हम चाहते हैं कि छात्रों को पहले की तरह संकट का सामना न करना पड़े।

यही सरकार का मकसद है। हम उनकी समस्याओं का समाधान ढूंढ रहे हैं।

झारखंड में कमजोर पड़ा मानसून

बारिश से चार्ज हुआ ग्राउंड वाटर लेवल किसानों को राहत, फिर कुछ दिनों में मजबूत होगा मानसून

रांची, 4 अगस्त (एजेंसियां)। झारखंड में अब मानसून फिर कमजोर पड़ने लगा है। अगले दो दिनों में इसका असर साफ देखने को मिलेगा। मौसम विभाग के अनुसार निम्न दबाव क्षेत्र झारखंड से दूर मध्य प्रदेश के उत्तर-पूर्व इलाके में केंद्रित है। इससे झारखंड में अगले दो दिन बारिश में कमी आ सकती है। अब आज सुबह तक इसके छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश के इलाकों में पहुंचने की संभावना है। इसके कुछ दिनों बाद मानसून दोबारा सक्रिय हो सकता है। झारखंड के कई जिलों में कल से बारिश हो रही है। रांची में आज सुबह से कम बारिश है। पिछले 24 घंटे में सिमडेगा के बानो में सर्वाधिक बारिश हुई है।

गढ़वा के भावनाथपुर में 74.5 मिमी बारिश हुई। रांची में 0.48 मिमी वर्षा हुई है। इस दौरान राजधानी का अधिकतम तापमान 25.4 डिग्री से रहा।

छत्तीसगढ़ सरकार ने केंद्र को दिए 90 करोड़

बिलासपुर, 4 अगस्त (एजेंसियां)। बिलासपुर में एयरपोर्ट के विस्तार के लिए राज्य सरकार ने सेना की जमीन वापसी की प्रक्रिया पूरी कर ली है। जमीन के एवज में रक्षा मंत्रालय को 90 करोड़ रुपए मुआवजा दे दिया गया है। अब केंद्र सरकार से जमीन वापसी के लिए औपचारिक सहमति देना बाकी है, जिसके बाद एयरपोर्ट का विकास 4 सी कैटेगरी के लिए होगा। गुरुवार को नए कलेक्टर ने एयरपोर्ट में चल रहे टर्मिनल बिल्डिंग के काम का जायजा लिया और अफसरों से जानकारी लेकर निर्माण जल्द पूरा करने के निर्देश दिए। बिलासा देवी केंवट एयरपोर्ट में चल रहे काम का निरीक्षण करने के लिए कलेक्टर बिलासा देवी केंवटिंन एयरपोर्ट पहुंचे। इस दौरान उन्होंने बताया कि हाईकोर्ट के निर्देश के बाद राज्य शासन ने कैबिनेट में सेना की जमीन वापसी का प्रस्ताव पास कर दिया है। जिसके बाद जमीन की मुआवजा राशि राज्य शासन ने केंद्र सरकार के रक्षा मंत्रालय को भेज दी है। कलेक्टर संजीव झा नोडल ऑफिसर निगम कमिश्नर कुणाल दुदावत के साथ एयरपोर्ट पहुंचे। सबसे पहले उन्होंने एयरपोर्ट डायरेक्टर और पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों से एयरपोर्ट में अब तक हुए काम और निर्माणाधीन कार्यों की जानकारी ली। जांच के दौरान कलेक्टर झा ने पीडब्ल्यूडी के अफसरों और ठेकेदार को एयरपोर्ट टर्मिनल बिल्डिंग के काम को जल्द पूरा करने के निर्देश दिए।

झारखंड के मानसून सत्र का अंतिम दिन भी हंगामेदार

जामताड़ा बरबेंदिया पुल की मांग अर्पणा सेन गुप्ता ने रखी, पूछा कब तक बनेगा पुल

रांची, 4 अगस्त (एजेंसियां)। 28 जुलाई से शुरू झारखंड विधानसभा मानसून सत्र का आज अंतिम दिन है। अंतिम दिन कई विधेयक और महत्वपूर्ण सवालों के जवाब दिए गये। झारखंड स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय विधेयक 2023 पर सदन में चर्चा चल रही है। विधानसभा में कल अपने व्यवहार के लिए विधायक शशिभूषण मेहता ने भी अपने शब्द वापस लिए। आलमगीर आलम ने सदन में मांग रखी जिसमें कहा कि कल विधायक इरफान अंसारी के बयान के लिए संसदीय कार्य मंत्री ने भी माफी मांगी थी। आज भाजपा विधायक को भी अपने उस व्यवहार के लिए माफी मांगनी चाहिए जिसमें वह वेल होते हुए विधायक तक पहुंच गये थे। सदन की शुरुआत के साथ ही भाजपा ने अपना विरोध दर्ज कराया और विधेयक वापस लेने की मांग की। सभा के अध्यक्ष ने विपक्ष से अपील सदन चलाने और चर्चा में शामिल होने की अपील की। विपक्ष लगातार इस मुद्दे को लेकर नारेबाजी करता रहा। हंगामें को देखते हुए अध्यक्ष ने सदन की कार्यवाही दोपहर 12 बजे तक के लिए स्थगित कर दिया गया। सदन की कार्यवाही के दौरान पहले सवाल के बाद ही हंगामा शुरू हो गया। विपक्ष वेल में पहुंचकर हेमंत सरकार हाय-हाय के नारे लगे रहे हैं।

झारखंड विधानसभा मानसून सत्र का आज आखिरी दिन है. अब तक सदन की कार्यवाही हंगामेदार रही और आज भी हंगामा जारी है। बाबूलाल मरांडी ने कहा कल भी सदन में विधायकों ने प्रतियोगी परीक्षा विधेयक को काला कानून बताया था। बाबूलाल ने कहा, भाजपा इसे काला कानून मानती है। इस कानून से कदाचार रूकेगा नहीं बल्कि और बढ़ेगा। परीक्षा में कदाचार छात्र नहीं जेपीएससी और जेएससीसी कर रही है। नौकरी के लिए आवेदन निकालने के बाद यह लोग नियम बदलते हैं। बाबूलाल ने कहा, भ्रष्टाचार में ये कैसे लिफ्त है इसकी जानकारी आप सभी को हो। छात्रों न इसका विरोध किया सरकार नहीं मानी लेकिन बाद में पुख्ता सबूत मिले तो स्वीकार करना पड़ा।

चकनाचूर हो गए इंडिया गठबंधन के कई नेताओं के सपने

कांग्रेस की बढ़ी बारगेनिंग पावर, राहुल को मिली संजीवनी का एनालिसिस

नई दिल्ली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी को सुप्रीम कोर्ट से सबसे बड़ी संजीवनी मिल गई है। मोदी सरनेम मामले में कोर्ट ने साफ कर दिया है जब तक सुनवाई पूरी नहीं हो जाती राहुल गांधी की सजा पर रोक रहेगी। इस एक फैसले के कांग्रेस के लिए कई मायने हैं। एक तरफ राहुल गांधी एक बार फिर सांसद बन गए हैं तो दूसरी तरफ 2024 की लड़ाई में कांग्रेस को एक बड़ा सियासी बूस्टर मिल गया है। अब सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले को सियासी चश्मे से समझना बहुत जरूरी हो जाता है। इस समय लोकसभा चुनाव करीब हैं, एक तरफ एनडीए खुद को एकजुट कर अपना शक्ति प्रदर्शन कर रहा है तो दूसरी तरफ इंडिया गठबंधन भी पहले पटना और बेंगलुरु में मीटिंग कर अपनी ताकत दिखा चुका है। लेकिन अभी तक क्योंकि राहुल गांधी प्रधानमंत्री रेस से बाहर चल रहे थे, ऐसे में कांग्रेस की बारगेनिंग पावर काफी कम हो गई थी। लेकिन अब सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले के बाद जमीन पर कई समीकरण फिर बदलने वाले हैं।

इंडिया गठबंधन में इस समय कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी के रूप में है लेकिन क्योंकि राहुल गांधी को मोदी सरनेम मामले में सजा दे दी गई थी, ऐसे में पार्टी खुलकर अपनी तरफ से किसी भी चेहरे को आगे नहीं कर पा रही थी। उनके लिए राहुल गांधी सबसे बड़े स्टार प्रचारक थे, लेकिन एक सजा की वजह से पार्टी मजबूर थी और उसे दूसरी विपक्षी पार्टियों के सामने झुकना पड़ रहा था।

ईरान से जहाज बचाने उनमें हथियारबंद सैनिक तैनात करेगा अमेरिका

अधिकारी ने कहा- गल्फ में वो अटैक करेंगे तो हम भी जवाब देने को तैयार

वॉशिंगटन/ तेहरान, 4 अगस्त (एजेंसियां)। गल्फ में ईरान और अमेरिका के बीच हालात बिगड़ते जा रहे हैं। अमेरिका अब होर्मुज के दर्रे से गुजरने वाले कमर्शियल जहाजों में नौसेना के हथियारबंद सैनिक तैनात करेगा। ये वो इलाका है जहां से दुनिया में सप्लाई किए जाने वाले कुल तेल का 20% हिस्सा गुजरता है। अमेरिका ने गुरुवार को इसकी जानकारी दी है। एक अधिकारी ने न्यूज एजेंसी एएफपी को बताया कि वो सैनिक तैनात करने से जुड़े एग्रीमेंट को जल्द ही लागू कर देंगे।

वहीं, जब अधिकारी से पूछा गया कि इस तैनाती से ईरान की फोर्सेज के साथ तनाव तो नहीं बढ़ जाएगा। इसके जवाब में अधिकारी ने कहा- ये तो उन (ईरान) पर निर्भर करता है। अगर ईरान अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का पालन करेगा तो किसी तरह का तनाव पैदा नहीं होगा। वहीं, अगर उनकी तरफ से अटैक हुआ तो हम भी जवाब देने को तैयार हैं।

अमेरिका ने गल्फ में तैनात किए एफ-16 लड़ाकू विमान

ईरान से बढ़ते तनाव के बीच अमेरिका ने पिछले महीने गल्फ में लड़ाकू विमान भी तैनात किए थे। एक अधिकारी ने पहचान उजागर न करने की शर्त पर कहा था कि अमेरिका का ए-10 अटैक एयरक्राफ्ट पहले से ही इलाके की निगरानी कर रहा है। अब एफ-16 लड़ाकू विमान भी तैनात किए गए हैं।

अमेरिका ने गल्फ में इस एक्शन की वजह ईरान से जहाजों को बचाना बताया था। अमेरिका ने इस इलाके में 3000 सैनिक तैनात करने की भी बात कही थी। व्हाइट हाउस के प्रवक्ता जॉन किर्बी ने कहा था- होर्मुज पास दुनिया के लिए काफी अहम समुद्री रास्ता है। हमने देखा है कि ईरान कैसे इसे प्रभावित करने की कोशिश कर रहा है।

ईरान ने ओमान की खाड़ी में कॉमर्शियल जहाज जब्त किया

अमेरिका और ईरान के बीच ओमान की खाड़ी में 2019 से जहाजों को जब्त करने को लेकर विवाद चल रहा है। दरअसल, 2018 में तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान से न्यूक्लियर डील खत्म कर ली थी। इसके बाद दोनों देश अलग-अलग जगहों पर एक-दूसरे के खिलाफ खड़े नजर आते हैं।

गल्फ में होर्मुज पास भी उनमें से एक है।अब अधिकारियों का कहना है कि एफ-16 गल्फ में जहाजों को एयर कवर देगा। इस फैसले से गल्फ में ईरान को चुनौती देने के लिए अमेरिकी सेना की मौजूदगी भी बढ़ेगी।

दरअसल, अमेरिका ने पिछले महीने ईरान पर ओमान की खाड़ी में एक कॉमर्शियल जहाज पर कब्जा करने के आरोप लगाए थे। यूएस नेवी ने दावा किया था कि उसने ईरान को 2 कॉमर्शियल तेल के टैंकर रिचमंड वोयेजर को जब्त करने से रोका। रॉयटर्स के मुताबिक, अमेरिकी नेवी ने बताया कि बाहमास के झंडे वाले 2 टैंकर गल्फ ऑफ ओमान से गुजर रहे थे। तभी ईरान की नेवी वेसल ने उस पर हमला कर दिया।

वहीं ईरान के मुताबिक, उसे कोर्ट से टैंकर को जब्त करने के ऑर्डर मिले थे। ईरान ने दावा किया कि ओमान की खाड़ी में एक टैंकर उनके वेसल से टकरा गया था। इस वजह से वेसल में सवार 5 क्रू मेंबर्स घायल हो गए थे, जिसके बाद उन्हें उसे जब्त करने का आदेश मिला था।

कर्नाटक के चार पुलिसकर्मियों को केरल पुलिस ने पकड़ा

कोच्ची, 4 अगस्त (एजेंसियां)। केरल पुलिस ने कर्नाटक के एक इंस्पेक्टर समेत चार पुलिसवालों को गिरफ्तार किया। चारों पुलिसकर्मी कर्नाटक में दर्ज एक धोखाधड़ी के मामले में 2 आरोपियों को पकड़ने के लिए केरल गए थे। कर्नाटक पुलिसकर्मियों ने दोनों आरोपियों को पकड़ लिया था। उन्होंने आरोपियों को छोड़ने के बदले में कुछ पैसे मांगे थे। जैसे ही केरल पुलिस को इस मामले के बारे में पता चला उन्होंने कर्नाटक के चारों पुलिसकर्मियों को गिरफ्तार कर लिया।

केरल के कोच्चि जिले के डीसीपी एस शशिधरन ने बताया कि कर्नाटक की पुलिस टीम 1 अगस्त को ऑनलाइन धोखाधड़ी मामले के 2 आरोपी अखिल और निखिल को ढूंढ़ती हुई यहां आई। जहां पर कर्नाटक पुलिस ने दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

कर्नाटक पुलिस ने पकड़े गए आरोपियों को छोड़ देने के नाम पर 25 लाख की मांग की। इनमें से एक आरोपी की पत्नी ने 1 लाख और दूसरे आरोपी की पत्नी ने 2 लाख 95 हजार रुपए कर्नाटक पुलिस को दे दिए थे।

अमेरिका के लिए दुखद दिन, मैं राजनीतिक उत्पीड़न का शिकार

डोनाल्ड ट्रंप ने बचाव में दी दलील

वाशिंगटन, 4 अगस्त (एजेंसियां)। वाशिंगटन की एक अदालत में अपने खिलाफ लगाए गए चुनावी साजिश के आरोपों की आलोचना करते हुए पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि वह ₹राजनीतिक उत्पीड़न₹ का शिकार हैं। उसके बाद उन्होंने खुद को दोषी नहीं ठहराए जाने का अनुरोध किया। ट्रंप ने सुनवाई के बाद अपने बेडमिंस्टर, न्यू जर्सी, गोल्फ क्लब में लौटने के लिए अपने निजी विमान में चढ़ने से पहले संवाददाताओं से कहा, ₹यह अमेरिका के लिए बहुत दुखद दिन है। यह एक राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी का उत्पीड़न है।

पूर्व राष्ट्रपति ने कहा, यदि आप उसे हरा नहीं सकते, तो उस पर अत्याचार करते हैं या उस पर मुकदमा चलाते हैं। हम अमेरिका में ऐसा नहीं होने दे सकते। ट्रंप 2024 के रिपब्लिकन राष्ट्रपति पद के नामांकन के दौड़ में सबसे आगे हैं। उन्होंने गुरुवार को अपने 2020 के चुनावी नुकसान को पलटने की कोशिश करने की साजिश रचने के आरोप में खुद के दोषी नहीं होने का अनुरोध किया।

अप्रैल के बाद से यह तीसरी बार है जब ट्रंप ने खुद को निर्दोष बताया है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, विशेष वकील जैक स्मिथ के अभियोग में उल्लिखित चार गुंडागर्दी के मामलों में उन्हें गिरफ्तार किया गया और उन पर मुकदमा चलाया गया।

इनमें अमेरिका को धोखा देने की साजिश, आधिकारिक कार्यवाही में बाधा डालने की साजिश, आधिकारिक कार्यवाही में बाधा डालने का प्रयास और अधिकारों के खिलाफ साजिश शामिल हैं। इससे पहले उन्हें औपचारिक रूप से यूएस कैपिटल से कुछ ही दूरी पर ई बैरेट प्रिटीमैन संघीय अदालत में गिरफ्तार किया गया था।

28 अगस्त को होगी अगली सुनवाई

दोषी न होने की अपनी दलील दर्ज करने के बाद ट्रंप को इस शर्त पर रिहा कर दिया गया कि वह सभी संघीय, राज्य और स्थानीय कानूनों का पालन करेंगे और किसी भी गवाह के साथ मामले पर चर्चा करने से बचेंगे। मामले में अगली सुनवाई 28 अगस्त तय की गई है। हालांकि, ट्रंप की कानूनी मुश्किलें अभी खत्म नहीं हुई हैं।

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति ने पहले संघीय आरोपों के लिए दोषी नहीं होने का अनुरोध किया था कि उन्होंने कार्यालय छोड़ने के बाद गोपनीय दस्तावेजों को अपने पास रखा था और न्यूयॉर्क राज्य के आरोपों में उन्होंने एक पोर्न स्टार को चुपचाप पैसे के भुगतान के संबंध में दस्तावेजों में हेराफेरी की थी। उन्हें जल्द ही जॉर्जिया में और अधिक आरोपों का सामना करना पड़ सकता है। जहां एक राज्य अभियोजक वहां चुनाव को पलटने के उनके प्रयासों की जांच कर रहा है। अटलांटा-क्षेत्र अभियोजक फानी विलिस ने कहा कि वह अगस्त के मध्य तक अभियोग दायर करेंगी।

महिलाओं ने पीएम मोदी को धन्यवाद दिया

चिट्ठी में लिखा-आपने झुग्गी के बदले घर दिया, कोरोना में वैक्सीनेशन कराया

नई दिल्ली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। दिल्ली में सरकारी योजना में घर पाने वाली महिलाओं ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चिट्ठी लिख कर धन्यवाद दिया। पत्र में लिखा- धन्यवाद मोदी जी आपने हमें झुग्गी के बदले मकान दिया। पीएम मोदी के ट्वीट के मुताबिक, महिलाओं ने उन्हें ये पत्र विदेश मंत्री एस जयशंकर के हाथों भिजवाए हैं। प्रधानमंत्री ने चार पत्रों की फोटो शेयर की है।

प्रधानमंत्री ने ट्वीट में ये कहा

पीएम मोदी ने ट्वीट किया- दिल्ली के कालकाजी की उन माताओं और बहनों के पत्रों को पाकर अभिभूत हूं, जिन्हें 'जहां झुग्गी वहीं मकान' स्कीम के तहत पक्के घर मिले हैं। विदेश मंत्री डॉ एस जयशंकर जी जब वहां गए तो महिलाओं ने ये पत्र उन्हें सौंपे, जिनमें उन्होंने खुशी जाहिर की है। वे बताती हैं कि कैसे स्कीम के जरिए उनका वर्षों पुराना सपना साकार हुआ है और पूरे परिवार का जीवन आसान बना है। पत्रों के लिए आप सभी का बहुत- बहुत आभार। हमारी सरकार गरीबों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध होकर काम करती रहेगी। चेतना नाम की महिला ने लिखा थैंक यू मोदी जी आपने हमें फ्लैट दिए और हमारी आने वाली जनरेशन को साफ सुथरा वातावरण दिया। साथ ही खत में महिला ने कोरोना में फ्री वैक्सीनेशन के लिए भी धन्यवाद दिया।

दूसरे खत में कुसुम लता नाम की महिला ने लिखा- मैं कई सालों से मोमिन कैंप में रहती थी आपने मुझे मेरा घर दिया। मेरे और मेरे बच्चों के सिर पर छत दी। मैं और मेरे बच्चे आपका तहे दिल से बहुत बहुत धन्यवाद करते है। रेशमा नाम की महिला ने लिखा धन्यवाद मोदी जी आपने हमे झुग्गी के बदले मकान दिया। आपका बहुत आभार। एक महिला ने खत में लिखा कि धन्यवाद मोदी जी आपने हमें झुग्गी के बदले में मकान दिया और मुफ्त टीका भी दिया। आपका आभार काकोली मेइत्रा।

अमेरिकी नेवी अफसरों ने चीन को सीक्रेट इन्फर्मेशन बेची

नेवी बेस सिक्योरिटी, हथियारों, मिलिट्री ड्रिल की फाइल्स लीक कीं, वॉरशिप्स की कमजोरी बताई

वॉशिंगटन, 4 अगस्त (एजेंसियां)। अमेरिका ने चीन को देश से जुड़ी खुफिया जानकारी देने के आरोप में 2 नेवी अफसरों को गिरफ्तार किया है। रॉयटर्स के मुताबिक, एक अफसर का नाम वेनहेंग झाओ है, जिसने करीब साढ़े 12 लाख रुपए के बदले अमेरिकी मिलिट्री से जुड़ी कई संवेदनशील फोटोज और वीडियो बेच दिए थे। दूसरे अफसर का नाम जिनचाओ वेई है, जिसने कई हजार डॉलर के बदले नेशनल डिफेंस से जुड़ी जानकारी लीक करने की साजिश रची थी।

झाओ पर आरोप है कि उसने अपने चीनी साथियों को इंडो-पैसेफिक में अमेरिका की मिलिट्री एक्सरसाइज, इलेक्ट्रिकल डायग्राम, जापान में अमेरिकी मिलिट्री बेस के रडार सिस्टम के ब्लू प्रिंट्स और लॉस एंजेल्स के पास मौजूद अमेरिकी नेवी बेस से जुड़ी सिक्योरिटी डिटेल्स बेची हैं।

अमेरिकी अधिकारियों के मुताबिक, सैन डिएगो में अमेरिकी युद्धपोत यूएसएस एसेक्स पर काम करने वाले वेई ने चीन को अमेरिकी वॉरशिप्स से जुड़े 30 तकनीकी मैनुअल्स के साथ उसके पावर स्ट्रक्चर और जहाज के हथियारों से जुड़ी जानकारी दी है। उसने चीन को ये भी बताया है कि इन वॉरशिप्स की कमजोरी क्या है। मामला सामने आने के बाद अमेरिकी अधिकारियों ने चीन के इस जासूसी ऑपरेशन की निंदा की। एफबीआई के स्पेशल एजेंट स्टेसी मोय ने कहा कि चीन अमेरिका के लिए सबसे बड़ा खतरा है, जो शायद कई पीढ़ियों तक रहेगा।

बीजिंग किसी भी हाल में अमेरिका पर हमले बंद नहीं करने वाला है। वो इन सब हरकतों के जरिए दुनिया की इकलौती सुपरपावर बनना चाहता है। दोनों आरोपियों पर चीन के लिए जासूस करने के चार्ज लगाए गए हैं। अगर वो दोषी साबित हो जाते हैं तो उन्हें 20 साल से ज्यादा की सजा सुनाई जा सकती है।

असिस्टेंट अटॉर्नी जनरल मैट ओल्सन ने कहा- दोनों आरोपियों की वजह से अमेरिका की सुरक्षा से जुड़ी खुफिया जानकारी चीन के हाथ चली गई। इनमें से एक को हाल ही में अमेरिका की नागरिकता मिली है और दूसरे ने इसके लिए अप्लाय कर रखा है। उन्हें अपने नए देश का साथ देने की जरूरत थी। फिलहाल चीन की तरफ से मामले में कोई बयान जारी नहीं किया गया है। 2 दिन पहले ही आई एक रिपोर्ट के मुताबिक, चीन अमेरिका के मिलिट्री बेस के पास मौजूद 20 स्कूलों में भी घुसपैठ की कोशिश कर रहा है। चीन ने अमेरिका के पब्लिक स्कूलों को करीब 2 करोड़ डॉलर की फंडिंग की है।

अमेरिकी ऑर्गनाइजेशन पेरेंट्स डिफेंडिंग एजुकेशन (पीडीई) की रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका के तीन टॉप साइंस एंड टेक्नोलॉजी हाई स्कूल ऐसे पाए गए हैं, जिनको चीन की सरकार सीधे तौर पर फंडिंग कर रही है।

पाकिस्तान ने फिर अलापा कश्मीर राग

नई दिल्ली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। भारत के संयुक्त राष्ट्र मिशन में परामर्शदाता आर मधु सूदन ने गुरुवार को कहा, 'मेरा सुझाव है कि संबंधित प्रतिनिधिमंडल मेरे देश के खिलाफ तुच्छ आरोपों में शामिल होने के बजाय अपने आंतरिक मामलों को हल करने और अपनी सीमाओं के भीतर व्यवस्था बहाल करने पर ध्यान केंद्रित करें।'मधु सूदन संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अकाल और संघर्ष-प्रेरित वैश्विक खाद्य असुरक्षा पर खुली बहस के दौरान एक पाकिस्तानी प्रतिनिधि द्वारा उठाए गए कश्मीर के मुद्दे का जवाब दे रहे थे।

उन्होंने अपनी टिप्पणी में कहा, 'दुर्भाग्य से हमनें देखा कि खाद्य सुरक्षा के महत्वपूर्ण विषय से इस परिषद का ध्यान भटकाने के लिए एक प्रतिनिधिमंडल ने फिर से इस मंच का दुरुपयोग किया।' इस दौरान उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि भारत की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता पर समझौता नहीं किया जा सकता है।

पाक एससी ने तोशाखाना मामले के खिलाफ इमरान खान की याचिका खारिज की

इस्लामाबाद, 4 अगस्त (एजेंसियां)। पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को तोशाखाना मामले में मुकदमे की कार्यवाही के खिलाफ इमरान खान की याचिका खारिज कर दी। इसके बाद उन्होंने मामला वापस ले लिया। दरअसल, तोशाखाना मामले में पूर्व प्रधानमंत्री पर अपने पास रखे गए उपहारों का विवरण छिपाने का आरोप है। तोशाखाना मामले में याचिका खारिज करते हुए शीर्ष अदालत ने कहा कि मामले को किसी अन्य अदालत में स्थानांतरित करने की मांग करने वाला आवेदन इस्लामाबाद उच्च न्यायालय (आईएचसी) में चल रहा है। कोर्ट ने उम्मीद जताई कि निचली अदालत और आईएचसी कानून के मुताबिक फैसले लेंगे। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि उक्त निर्णय 70 वर्षीय खान द्वारा दायर अन्य याचिकाओं को प्रभावित नहीं करेगा।

राहुल बोले- आज नहीं तो कल सच जीतता है

खड़गे : हटाने के लिए 24 घंटे में सब हुआ, देखते हैं सांसदी कब बहाल होगी

नई दिल्ली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने 4 जुलाई को मानहानि मामले में राहुल गांधी को मिली 2 साल की सजा पर रोक लगा दी। इसके बाद शाम को राहुल कांग्रेस मुख्यालय पहुंचे। कहा- आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों, सच्चाई की जीत होती है। मेरा रास्ता तो क्लीयर है। मुझे क्या करना है, मेरा का क्या काम है, मुझे इसकी क्लैरिटी है। जिन लोगों ने मदद की, जनता ने जो सपोर्ट किया, उसका शुक्रिया। थैंक्यू...।

खड़गे बोले- संविधान जिंदा है, डेमोक्रेसी की जीत

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि सारे लोग खुश हैं। अक्सर ऐसा होता है कि हमारी बातें निगेटिव जाती हैं, कभी पॉजिटिव भी होती हैं। मैं सुप्रीम कोर्ट का धन्यवाद करता हूं। अभी संविधान जिंदा है। न्याय मिल सकता है। सिर्फ राहुल गांधी की जीत नहीं है, भारत की जनता और डेमोक्रेसी की जीत है। इससे बहुत बड़ा फायदा देश को हुआ है। जो व्यक्ति सच्चाई, देश के हित, देश में मजबूती लाने के लिए, बढ़ती महंगाई के लिए लड़ता है, जो व्यक्ति लोगों को जागृत करने के लिए कन्याकुमारी से चलकर कश्मीर से चलते हुए डॉक्टर, इंजीनियर, किसान, मजदूरों से मिले। ये सब उनकी दुआओं का नतीजा है।

राहुल गांधी को हटाने के लिए 24 घंटे में सब कुछ हुआ। अब देखना है कि उनकी दोबारा सांसदी कब बहाल होती है। रात में रीइंस्टेट (बहाल) करते हैं या अभी करते हैं, हम इसका इंतजार करते हैं। मोदी सरकार भले ही बाहर ना बोलें, अंदर तो बोल ही रहे होंगे कि ये क्या हुआ। मैं इस पर टिप्पणी नहीं करूंगा। सुप्रीम कोर्ट के फैसले से वायनाड (राहुल के संसदीय क्षेत्र) के लोग भी खुश होंगे।

3 घंटे सुनवाई चली, राहुल सत्र में हिस्सा ले सकेंगे

कोर्ट ने उन्हें नसीहत भी दी कि भाषण के वक्त उन्हें सावधानी बरतनी चाहिए। इस फैसले के बाद राहुल गांधी संसद सत्र में हिस्सा ले सकेंगे। उनकी सांसदी भी बहाल होगी। इससे पहले, सुप्रीम कोर्ट में 3 घंटे बहस चली। सुनवाई जस्टिस बीआर गवई, जस्टिस पीएस नरसिम्हा और जस्टिस संजय कुमार की बेंच ने की। राहुल की तरफ से अभिषेक मनु सिंघवी और पूर्णेश मोदी की तरफ से महेश जेठमलानी ने दलीलें दीं।

बॉम्बे हाईकोर्ट बेंच के जज का चलती कोर्ट से इस्तीफा

जस्टिस रोहित देव बोले- आत्मसम्मान के खिलाफ काम नहीं कर सकता

नागपुर, 4 अगस्त (एजेंसियां)। बॉम्बे हाईकोर्ट के जस्टिस रोहित बी देव ने अपने पद से 4 अगस्त को इस्तीफा दे दिया। जस्टिस रोहित हाईकोर्ट की नागपुर बेंच में बैठते थे। उन्होंने खुली कोर्ट से इस्तीफे की घोषणा करते हुए माफी भी मांगी। वे 4 दिसम्बर 2025 को रिटायर होने वाले थे।

जस्टिस रोहित बोले- किसी का दिल दुखाया हो तो माफ करें

कोर्ट रूम में मौजूद वकीलों के मुताबिक, जस्टिस रोहित देव ने कहा कि मेरी किसी के खिलाफ कोई दुर्भावना नहीं है। अगर मैंने किसी का दिल दुखाया हो तो माफ करें । उन्होंने कहा कि आत्मसम्मान के खिलाफ काम नहीं कर सकता। हालांकि, इस्तीफे के पीछे का कारण स्पष्ट नहीं हो पाया है।

पिछले साल साईंबाबा को क्लीन चिट दी थी

जस्टिस रोहित देव ने 14 अक्टूबर 2022 को जीएन साईंबाबा को माओवादियों से संबंध रखने के मामले में क्लीन चिट दी थी। इस आदेश को सुप्रीम कोर्ट ने 15 अक्टूबर को खारिज कर दिया था। हाल ही में महाराष्ट्र सरकार, समृद्धि एक्सप्रेसवे के ठेकेदारों के खिलाफ हो रही कार्रवाई को रोकने के लिए प्रस्ताव लाई थी। जस्टिस रोहित देव की अध्यक्षता वाली बेंच ने महाराष्ट्र सरकार को अधिकार देने वाले उस प्रस्ताव पर रोक लगा दी।

इससे पहले जस्टिस देव एडिशनल सॉलिसिटर जनरल थे

जस्टिस रोहित देव पहले नागपुर बेंच में एडिशनल सॉलिसिटर जनरल रह चुके हैं। इसके बाद उन्होंने राज्य के एडवोकेट जनरल के रूप में सेवाएं दी। 2017 में हाईकोर्ट की नागपुर बेंच में जज बने।

यूक्रेन जंग के चलते रूस ने दोगुना किया रक्षा खर्च

मॉस्को, 4 अगस्त (एजेंसियां)। रूस ने 2023 के लिए अपने रक्षा खर्च को दोगुना कर दिया है। रॉयटर्स के मुताबिक, अब रूस का रक्षा खर्च 8.28 लाख करोड़ हो गया है। ये भारत के डिफेंस बजट से करीब सवा 2 लाख करोड़ रुपए ज्यादा है। रूस ने पहले 2023 के लिए रक्षा खर्च 4.47 लाख करोड़ तय किया था। लेकिन, शुरुआती 6 महीनों में उसने 12% यानी 52 हजार करोड़ रुपए ज्यादा खर्च किए, जिसके बाद ये फैसला लिया गया। ये उसके पूरे पब्लिक खर्च का एक तिहाई हिस्सा है। जो फरवरी 2022 में शुरू हुई यूक्रेन जंग और रूस पर बढ़ते प्रतिबंधों को देखते हुए लिया गया है। रूस के बजट का 17.1% हिस्सा देश की सुरक्षा पर खर्च करने की प्लानिंग की है। शुरुआती 6 महीने में रूस ने अपने बजट का 19.2% हिस्सा डिफेंस पर खर्च किया है। रूस ने इस साल जनवरी-फरवरी में अपनी सेना पर करीब 1.75 लाख करोड़ रुपए खर्च किए थे।

रूस ने 2011 से 2022 के बीच रक्षा के क्षेत्र में सबसे ज्यादा 23% और सबसे कम 13.9% खर्च किए हैं। वहीं रूस अब तक 2023 के डिफेंस बजट का 57.4% हिस्सा खर्च कर चुका है। जुलाई में रूस के उप रक्षा मंत्री डेनिस मैंटुरोव ने कहा था कि रूस की डिफेंस इंडस्ट्री ने 2022 में जितने हथियार बनाए थे, उससे ज्यादा अब वो 1 महीने में बना रही है। रक्षा बजट बढ़ाने के लिए पहले ही रूस में स्कूल, अस्पताल और सड़कों से जुड़े बजट को कम कर दिया गया था। अब दूसरी इंडस्ट्रीज के फंड्स में भी कटौती का अनुमान लगाया जा रहा है। एसआईपीआरआई की रिपोर्ट के मुताबिक, दुनिया ने 2022 में डिफेंस और हथियारों पर 2.24 ट्रिलियन डॉलर, यानी 183 लाख करोड़ रुपए खर्च किए थे। ये दुनिया में अब तक का मिलिट्री पर किया गया सबसे ज्यादा खर्च है। रिपोर्ट के मुताबिक ये खर्च रूस-यूक्रेन जंग की वजह से बढ़ा है। रिपोर्ट में बताया गया था कि केवल यूरोप महाद्वीप में ही जंग के चलते डिफेंस के खर्च में एक साल में 13% की बढ़ोतरी हुई।

ब्लैक सी तक फिर पहुंची रूस-यूक्रेन जंग

450 किलो डाइनामाइट से रूसी जहाज पर यूक्रेनी अटैक, रूस बोला- हमने हमला नाकाम किया

मॉस्को, 4 अगस्त (एजेंसियां)। यूक्रेन ने दावा किया है कि उन्होंने ब्लैक सी में रूसी जहाज पर हमला किया है। ये अटैक शुक्रवार को रूस के नोवोरोससिक पोर्ट के पास हुआ। इससे ग्रेन डील खत्म होने के बाद एक बार फिर रूस-यूक्रेन जंग ब्लैक सी तक पहुंच गई है। जिस पोर्ट पर हमला हुआ वो रूस के निर्यात का बड़ा हब है। यूक्रेन ने अटैक का एक वीडियो भी जारी किया है। इसमें एक समुद्री ड्रोन एक जहाज से टकराते हुए देखा जा सकता है। यूक्रेन ने बताया है कि जब ड्रोन रूसी जहाज से टकराया तो उसमें 450 किलो डाइनामाइट था। हालांकि, रूस ने ड्रोन से हुए किसी भी नुकसान से इनकार किया है। वहीं, बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक यूक्रेन ड्रोन जिस रूसी शिप से टकराया वो ओलेनोगोर्सकी गोर्नयाक है। जो एक लैंडिंग शिप है। इसे सैनिकों और कार्गो को ले जाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

जंग के मैदान का जायजा लेने पहुंचे रूस के रक्षा मंत्री

एक तरफ जहां यूक्रेन ने ब्लैक सी में रूस के जहाज पर अटैक करने का दावा किया है। वहीं, रूस के रक्षा मंत्री सर्गेई शोइगू का कहना है कि उन्होंने क्रीमिया पर हमला करने जा रहे 10 यूक्रेनी ड्रोन को तबाह कर दिया।

फिलहाल रूस के रक्षा मंत्री सर्गेई शोइगू जंग के मैदान का जायजा लेने फ्रंट लाइन्स पर हैं। यहां उन्होंने रूसी कमांडरों से जंग से जुड़ी लेटेस्ट जानकारी ली है। इससे पहले रूस ने कहा था कि उन्होंने ब्लैक सी में रूसी नौसेना के बेस पर यूक्रेनी हमले को नाकाम कर दिया।

सीएम का असली चेहरा वसुंधरा राजे हैं : गहलोत

उन्हें छिपाया क्यों, मुकाबला के लिए आगे लाएं; राजे-मेघवाल ने मेरी सरकार नहीं बचाई

जयपुर, 4 अगस्त (एजेंसियां)। सीएम अशोक गहलोत ने बीजेपी पर निशाना साधते हुए कहा कि बीजेपी में जो नेता सीएम के चेहरे बने हुए हैं, उनका लेवल क्या है? वसुंधरा राजे असली सीएम का चेहरा हैं। उसे तो इन्होंने छिपा रखा है।

जयपुर में इन्होंने घेराव किया और दो लाख का दावा कर रहे थे। जबकि उसमें 15 से 20 हजार लोग ही आए। उस घेराव में वसुंधरा राजे क्यों नहीं आईं? उनको क्यों छुपा रखा है? दो बार मुख्यमंत्री रही हैं। लाओ आगे उसको, अगर मुकाबला करना है। तुमसे तो मुकाबला होगा नहीं। गहलोत सीएम हाउस पर मीडिया से बातचीत कर रहे थे। गहलोत ने कहा-ये कहते हैं मोदी के चेहरे पर चुनाव लड़ेंगे। चुनाव राजस्थान विधानसभा का हो रहा है। देश के प्रधानमंत्री को चेहरा बनाएंगे। ये इतने नाकाबिल लोग हैं। जो कहते हैं कि पीएम के चेहरे पर चुनाव लड़ेंगे। मैं तो राजस्थान में जो काम किए हैं। उसके आधार पर चुनाव लड़ूंगा। मोदी तो अंतर्राष्ट्रीय नेता हैं, विश्व गुरू हैं। उनको क्यों ला रहे हो? इनके जो मुख्यमंत्री के चेहरे बने हुए हैं, क्या ये लोग मुख्यमंत्री के चेहरे के लायक हैं? क्या आपको राजस्थान की जनता स्वीकार करेगी?

गहलोत ने कहा-यहां बीजेपी के नेता 25 साल में भी चेहरे नहीं बन पाए। चार-पांच चुनाव जीतने के बावजूद भी इनका हाईकमान इन्हें अंडरएस्टीमेट कर रहा है। तुम में इतनी भी क्षमता पैदा नहीं हुई है। इतने काबिल नहीं हो कि आपका चेहरा आगे रखकर चुनाव लड़ा जाए। मोदी के चेहरे पर इलेक्शन लड़ेंगे।

गहलोत ने कहा- मुझ पर आरोप लगा रहे हैं कि मेरी सरकार बचाई। इसलिए मैं इस तरह की बातें बोल रहा हूं। वसुंधरा राजे और कैलाश मेघवाल ने मेरी सरकार नहीं बचाई। उन्होंने अपना व्यू दिया था कि हमारे यहां हॉर्स ट्रेडिंग से सरकार गिराने की परंपरा नहीं रही है। जैसे महाराष्ट्र मध्य प्रदेश और कर्नाटक में सरकार गिराई। यह कहना क्या गलत था? उन्होंने ठीक कहा। मैं तो उनका स्वागत करता हूं। वसुंधरा राजे हों, चाहे कैलाश मेघवाल हों। अगर आगे आकर कहते हैं कि हॉर्स ट्रेडिंग से सरकार गिराने की हमारी परंपरा नहीं रही। उसके बाद उनके लिए क्या कहूं। वह बात मैंने कही थी। उसको तो इन्होंने पीछे कर रखा है। बाकी चारों को आगे कर रखा है। आने वाले चुनाव में अब देखेंगे इनको जनता जवाब देगी।

राजस्थान में 19 नए जिले, तीन नए संभाग 7 अगस्त को होंगे साकार

जयपुर, 4 अगस्त (एजेंसियां)। राजस्थान में 19 नए जिलों और तीन नए संभाग साकार हो गए हैं। इन्हें मिलाकर प्रदेश में अब कुल 50 जिले और 10 संभाग बन गए हैं। पहले राज्य में 33 जिले और सात संभाग हुआ करते थे।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कैबिनेट मंत्रियों और अधिकारियों की मौजूदगी में प्रेस कॉन्फ्रेंस में इस फैसले की विस्तार से जानकारी दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि सात अगस्त को हमारे मंत्री जिलों में जाएंगे। सभी जिलों में हमारे मंत्री जाएंगे। वहां पूजा-पाठ होगी। भारतीय संस्कृति, संस्कार और परंपराओं का निर्वहन करते हुए उस नए जिले की एक तरह से स्थापना की जाएगी। जिन तीन नए संभागों का गठन किया गया है, उनमें बांसवाड़ा, पाली और सीकर शामिल है। इसके साथ ही 19 नए जिलों- अनूपगढ़, बालोतरा, ब्यावर, डीग, डीडवाना, दूदू, गंगापुर सिटी, जयपुर शहर, जयपुर ग्रामीण, जोधपुर शहर, जोधपुर ग्रामीण, केकड़ी, कोटपूतली, खैरथल, नीमकाथाना, फलौदी, सलूम्बर, सांचौर और शाहपुरा, के गठन को भी कैबिनेट ने मंजूरी दे दी है। कैबिनेट मीटिंग में इसके अलावा भी कई महत्वपूर्ण प्रस्तावों को मंजूर किया गया है। नए जिलों के सीमांकन को लेकर राजस्व विभाग ने गजट नोटिफिकेशन पहले ही तैयार था।

हनुमान बेनीवाल बोले-अपराध की राजधानी बना राजस्थान

रेप के आरोपियों का हो एनकाउंटर, सख्त कानून बनाए सरकार

जयपुर, 4 अगस्त (एजेंसियां)। राजस्थान के भीलवाड़ा में हुए गैंगरेप और हत्या मामले में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी ने सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। आरएलपी के प्रमुख हनुमान बेनीवाल ने कहा- राजस्थान देश में अपराध की राजधानी बन चुका है। ऐसे में सरकार को अपराधियों पर अंकुश लगाने के लिए सख्त एक्शन लेना चाहिए। बेनीवाल जयपुर में जालूपुरा स्थित अपने आवास पर मीडिया से बात कर रहे थे। रेप जैसी वारदातों को अंजाम देने वाले आरोपियों को सरेआम सजा मिलनी चाहिए। सरकार को ऐसे आरोपियों के एनकाउंटर का आदेश जारी करना चाहिए। तभी इस तरह की विकृत मानसिकता के लोगों पर अंकुश लग पाएगा।

भीलवाड़ा अपराध का गढ़ बन रहा

सांसद हनुमान बेनीवाल ने कहा- राजस्थान का भीलवाड़ा दिनों दिन अपराध का गढ़ बनता जा रहा है। बजरी माफिया के साथ ही अब भीलवाड़ा में लूट, चोरी, हत्या और बलात्कार जैसी घटनाएं भी बढ़ रही है। वहीं अब नाबालिक बच्ची के साथ दुष्कर्म और हत्या की घटना का जो कलंक राजस्थान पर लगा है।

उसे मिटा पाना काफी मुश्किल है। ऐसे में सरकार को आत्मचिंतन कर अपराधियों के खिलाफ सख्त एक्शन लेने की जरूरत है।

कांग्रेस और बीजेपी का गठबंधन चल रहा

बेनीवाल ने कहा कि राजस्थान में पिछले लंबे वक्त से कांग्रेस और बीजेपी का गठबंधन चल रहा है। जिसकी वजह से हालात बद से बदतर हो चुके हैं। प्रदेश में एंबुलेंस लेकर पुलिस थानों में बलात्कार जैसी घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है। लेकिन सरकार आंखें बंद कर बैठी हुई है। अगर सरकार अब भी नहीं जागी। तो स्थिति भयावह हो सकती है। इन हालातों को रोकने के लिए सिर्फ सख्त एक्शन ही एकमात्र तरीका है। इसलिए आरएलपी मांग करती है, ऐसे आरोपियों को रोकने के लिए उन्हें सार्वजनिक सजा मिलनी चाहिए। उन्हें सरेआम पीटकर फांसी पर चढ़ाया जाना चाहिए। इतना ही नहीं बल्कि, पुलिस को उनका एनकाउंटर कर देना चाहिए। इस तरह का कानून अब सरकार को बनाना चाहिए। तभी इस तरह की विकृत मानसिकता के लोगों में खौफ और डर पैदा हो पाएगा।

उन्होंने कहा कि भीलवाड़ा की घटना ने पूरे राजस्थान को झकझोर कर रख दिया है। इस घटना के बाद प्रदेशभर की बालिकाएं खुद को सुरक्षित महसूस कर रही है। इसलिए राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी राजस्थान के मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री दोनों से महिला सुरक्षा को लेकर सख्त कानून बनाने की मांग करती है। ताकि भारत की बेटियां खुद को सुरक्षित महसूस कर सके।

भीलवाड़ा में किशोरी के साथ हैवानियत

मामले में आया नया मोड़, घटना से डेढ किलोमीटर दूर मिला किशोरी का शव

भीलवाड़ा, 4 अगस्त (एजेंसियां)। कोटडी थाना क्षेत्र में किशोरी के साथ गैंगरेप और हत्या कर भट्टी में शव जलाने के मामले में नया मोड़ आया है। किशोरी के साथ गैंगरेप और उसकी हत्या के बाद आरोपी शव को डेरो के पास ले आए थे। यहां आरी से गर्दन और हाथ के टुकड़े किए। उसके बाद शव को एक कट्टे में भरकर डेढ़ किलोमीटर दूर झाड़ियों में फेक कर आ गए। इस दौरान एक हाथ घटना स्थल पर रह जाने से उसे भट्टी में जलाने की कोशिश की थी। इससे आरोपी हत्थे चढ़ गए। पुलिस ने शुक्रवार तड़के आरोपियों की निशानदेही पर शव बरामद कर लिया है। पुलिस ने शव को बरामद करके पोस्ट मार्टम के लिए शाहपुरा चिकित्सालय स्थित मोर्चरी में ले गए है। पोस्ट मार्टम के बाद खुलासा होगा कि उसके साथ क्या हुआ था। उधर इस घटना के बाद बाल आयोग की टीम शुक्रवार को घटना स्थल पर पहुची ओर घटना की जानकारी ले रही है। इस टीम में राजीव मेघवाल समेत अन्य सदस्य शामिल है। उल्लेखनीय है कि कोटड़ी क्षेत्र की किशोरी बुधवार को बकरिया चराने जंगल गई थी जो शाम को पुनः घर न लौटने पर परिजनों ने उसकी तलाश की थी। देर रात उसका एक हाथ कोयले की भट्टी में जलता हुआ मिला था। उसके बाद यह सनसनी फैल गई थी कि किशोरी की हत्या करने के बाद उसे कोयले की भट्टी में जला दिया गया था। पुलिस ने छह जनों को हिरासत में लिया है। उनके से गहनता से पूछताछ की जा रही है।

चोरी की बड़ी वारदात, लाखों रुपये के सोने-चांदी के जेवरात और नकदी ले उड़े चोर

सीकर, 4 अगस्त (एजेंसियां)। राजस्थान के सीकर जिले के दांतारामगढ़ क्षेत्र में चोरी की बड़ी वारदात सामने आई है। जहां कांकरा गांव में अज्ञात चोरों ने घर में घुसकर अलमारी से लाखों रुपये और सोने-चांदी के जेवरात लेकर गायब हो गए।

पीड़ित पूरणमल कुमावत ने बताया कि वह और उसकी पत्नी मकान के एक कमरे में सो रहे थे। सुबह जब चार बजे पूरणमल उठा तो उसने देखा कि उसके कमरे को रस्सी से बांधकर बंद किया हुआ है। इस पर उसने पड़ोसियों को बुलाकर रस्सी खुलवाई और देखा तो घर के अन्य कमरों का सामान बिखरा हुआ था। अलमारियों के बक्सों के ताले टूटे थे।

जयपुर टाइगर फेस्टिवल : राज्यपाल ने फोटोग्राफर्स की कला को सराहा

बोले-बाघ संरक्षण के लिए जनचेतना की जरूरत

जयपुर, 4 अगस्त (एजेंसियां)। राज्यपाल कलराज मिश्र ने गुरुवार को जयपुर के होटल क्लार्क्स आमेर में जयपुर टाइगर फेस्टिवल के पुरस्कार वितरण समारोह में सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि आज विश्व के 75 प्रतिशत बाघों की संख्या अकेले हमारे देश में हैं।

राज्यपाल कलराज मिश्र ने प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण के लिए नई पीढ़ी में वन्यजीवों के प्रति जागरूकता लाए जाने पर ज़ोर दिया है। उन्होंने कहा कि बाघ संरक्षण के लिए जन-चेतना कार्यक्रम चला कर सतत प्रयत्न किए जाने की ज़रूरत है। उन्होंने बाघों की बढ़ती संख्या के साथ-साथ उनके संरक्षण के लिए भी सभी स्तरों पर समुचित कार्य किए जाने पर ज़ोर दिया। राज्यपाल ने बाघों के संरक्षण के साथ वन प्रबंधन में और बेहतर कार्य करते हुए राजस्थान को इस क्षेत्र में अग्रणी राज्य बनाने का आह्वान किया। राज्यपाल ने कहा कि बाघों का होना पारिस्थितिकी संतुलन और जैव विविधता संरक्षण के लिए जरूरी है। उन्होंने बाघों सहित अन्य वन्य जीवों के संकुचित हो रहे प्राकृतिक आवासों पर चिंता प्रकट करते हुए कहा कि बढ़ती आबादी के दबाव में वन कॉन्क्रिट के जंगलों में तब्दील न हों, इस पर सभी स्तरों पर चिंतन करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि बाघ क्षेत्रों में पर्यटन का विकास इस तरह से होना चाहिए कि वन्य जीवों को किसी तरह की हानि न पहुंचे। उन्होंने पुरस्कृत फोटोग्राफर्स की कला और दृष्टि की सराहना भी की। राज्यपाल ने पुरस्कार विजेता फोटोग्राफर्स, वन्यजीवन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले विशेषज्ञों को सर्टिफिकेट दिए।

राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता वाइल्डलाइफ फिल्म निर्माता एस. नल्लामुत्थु द्वारा बाघ संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए तैयार टाइगर एन्थम भी कार्यक्रम में स्क्रीन पर प्रस्तुत किया गया। नल्लामुत्थु और वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर सितारा कार्तिकेयन की जूरी द्वारा पुरस्कृत फोटोग्राफ का चयन किया गया।

माता-पिता की सहमति नहीं तो पाली में वकील नहीं करवाएंगे शादी

बार एसोसिएशन का फैसला

पाली, 4 अगस्त (एजेंसियां)। राजस्थान के पाली में अब घर से भागकर लव मैरिज करना किसी के लिए आसान नहीं होगा। पाली बार एसोसिएशन ने माता-पिता की सहमति के बिना इस प्रकार के विवाह कोर्ट में नहीं करवाने का निर्णय लिया है। पाली में बेटी के प्रेम विवाह से आहत माता-पिता ने ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या कर ली थी। इसी के मद्देनजर बार एसोसिएशन ने यह फैसला लिया है।

पाली बार एसोसिएशन के अध्यक्ष धीरेंद्र सिंह राजपुरोहित ने बताया कि हमारे पास कोर्ट मैरिज के लिए आने वाले युवक-युवती से माता-पिता का सहमति पत्र मांगा जाएगा। सहमति पत्र दिखाने पर ही उनकी कोर्ट मैरिज करवाई जाएगी। 24 जुलाई को ओल्ड हाउसिंग बोर्ड निवासी एक युवती ने प्रेम विवाह किया था। पुलिस के सामने पेश होकर अपने माता-पिता से खतरा बताया और सुरक्षा की गुहार लगाई गई थी। पुलिस ने जब माता-पिता को उनका सामना बेटी से करवाया तो उसने अपने माता-पिता को पहचानने तक से इनकार कर दिया था। इस बात से आहत होकर दोनों ने 25 जुलाई को ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या कर ली थी। बहन के अंतरजातीय विवाह से दुखी भाई भी घर छोड़कर चला गया था। तीन दिन बाद पुलिस ने दिल्ली से उसे घर पहुंचाया।

नहीं करेंगे किसी प्रकार का सहयोग

बार एसोसिएशन के अध्यक्ष धीरेंद्र सिंह राजपुरोहित ने बताया कि हाल ही में पाली के हाउसिंग बोर्ड में हुई हृदयविदारक घटना के बाद यह निर्णय लिया गया है कि घर से भागकर और माता-पिता की बिना सहमति लव मैरिज करने आने वाले लड़के-लड़कियों को न तो कानूनी सलाह दी जाएगी और न ही कानूनी तरीके से कोई सहयोग किया जाएगा। न ही किसी प्रकार के दस्तावेज तैयार करवाए जाएंगे।

शराब ठेका चलाना है तो तीन लाख रुपये दो

एसीबी ने आबकारी इंस्पेक्टर को रिश्वत लेते पकड़ा

जयपुर, 4 अगस्त (एजेंसियां)। जयपुर में आबकारी इंस्पेक्टर को एंटी-करप्शन ब्यूरो (एसीबी) ने तीन लाख रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों पकड़ा है। दो दलालों को भी एसीबी ने पकड़ा है। इसके बाद जांच का दायरा बढ़ा दिया गया है। आरोप है कि आबकारी इंस्पेक्टर दलालों के जरिये शराब ठेकेदार को धमका रही थी। कहा जा रहा था कि यदि शराब ठेका चलाना है तो तीन लाख रुपये लेकर आओ।

शराब ठेकेदार ने इसकी शिकायत एसीबी को की और अधिकारी को ट्रैप कराया। एसीबी मुख्यालय के निर्देश पर एसयू प्रथम जयपुर यूनिट ने कार्रवाई करते हुए जयपुर ईस्ट की आबकारी निरीक्षक अंकिता माथुर को तीन लाख रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। उसके साथ ही दलाल मोनू अली और असलम भी पकड़े गए हैं। एसीबी के अतिरिक्त महानिदेशक हेमन्त प्रियदर्शी ने बताया कि शराब ठेकेदार ने शिकायत की थी कि उसकी लाइसेंसी दुकान बिना किसी समस्या के चलाने के लिए अंकिता माथुर ने तीन लाख रुपये की मांग की थी। पैसा नहीं देने पर ठेके पर कार्रवाई की धमकी भी दी गई थी। इसमें दो दलाल उसकी मदद कर रहे थे।

चुनावी साल में चौकस रहें अधिकारी, मुखबिर बढ़ाएं

बीकानेर, 4 अगस्त (एजेंसियां)। पुलिस अधीक्षक तेजस्वनी गौतम ने कहा आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर अधिकारी मुस्तैद व चौकस रहें। कानून-व्यवस्था न बिगड़े, इसके लिए मुखबिर तंत्र, सर्व समाज के प्रबुद्धजन व सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों से सामंजस्य बना कर रखें।

अपराधियों पर नकेल रखें। यह निर्देश उन्होंने गुरुवार को पुलिस अधिकारियों को क्राइम मीटिंग में दिए। उन्होंने पेंडेंसी खत्म करने, एनडीपीएस व अवैध हथियार, शराब आदि की कार्रवाई लगातार रखने के निर्देश दिए। अवैध हथियार, मादक पदार्थ तस्करी के साथ-साथ चुनावी साल में हवाला करोबार बढ़ने की आशंका जाहिर करते हुए समुचित व्यवस्था बनाने को कहा। अवैध खनन व सड़क हादसों पर लगाए रोकपुलिस अधीक्षक ने कहा कि जिले में अवैध खनन, ओवरलोडिंग भी एक बड़ी समस्या है।

सड़क हादसों में कमी लाना प्राथमिकता है। सामाजिक संगठनों का सहारा लेकर काम करें। तेज स्पीड व यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्ती करें। गश्त बढ़ाएं, निगरानी रखेंपुलिस अधीक्षक ने कहा कि थानाधिकारी अपने-अपने थाना क्षेत्र में गश्त बढ़ाए। बीट कांस्टेबल को विशेष हिदायत देकर क्षेत्र में निगरानी करवाएं। संदिग्ध व्यक्तियों की सूचना एकत्रित करें। बैठक में एएसपी सिटी दीपक शर्मा, एएसपी ग्रामीण डॉ. प्यारेलाल शिवरान, शहरी व ग्रामीण एसएचओ व सीओ उपस्थित थे।

जयपुर डिस्कॉम के 3 लाइनमैन 13 हजार रुपए की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार

सवाई माधोपुर, 4 अगस्त (एजेंसियां)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की सवाई माधोपुर इकाई ने गुरुवार देर रात कार्यवाही करते हुए जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड (जेवीवीएनएल) के तीन लाइनमैन भीम सिंह जाटव, नरसीलाल बैरवा एवं जितेन्द्र कुमार सैनी तीन को 13 हजार रुपए की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। इन तीनों के ठिकानों पर छापेमारी कर तलाशी ली जा रही है।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के अतिरिक्त महानिदेशक हेमन्त प्रियदर्शी ने बताया कि एसीबी की सवाई माधोपुर इकाई को दी गई शिकायत में परिवादी ने आरोप लगाया था कि उसके कृषि कनेक्शन की शिफ्टिंग नहीं होने पर कोई कार्यवाही नहीं करने की एवज में भीम सिंह जाटव, नरसीलाल बैरवा लाइनमैन जी.एस.एस. कबीरपुरा एवं जितेन्द्र कुमार सैनी लाईनमैन, जी.एस.एस. बहरावण्डा कलाँ, जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड सवाई माधोपुर द्वारा प्रत्येक के लिए 5 हजार रुपए के हिसाब से 15 हजार रुपए रिश्वत मांग कर परेशान किया जा रहा है। इस पर एसीबी भरतपुर के उप महानिरीक्षक पुलिस कालूराम रावत के सुपरवीजन में एसीबी सवाई माधोपुर इकाई के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सुरेन्द्र कुमार शर्मा के नेतृत्व में शिकायत का सत्यापन किया गया।

पाकिस्तानी दुल्हन और राजस्थान के दूल्हे का ऑनलाइन निकाह

ऑनलाइन हुई दोनों परिवारों की रस्में, रिश्तेदारों ने एलईडी पर देखी शादी

जोधपुर, 4 अगस्त (एजेंसियां)। दुल्हन पाकिस्तान की और दूल्हा राजस्थान का। इस शादी में परिवार वाले भी थे और यार-दोस्त व रिश्तेदार भी। लेकिन, निकाह की सारी रस्में निभाई गई...ऑनलाइन। शहर काजी ने निकाह पढ़ा तो कराची में मौजूद दुल्हन ने कहा- कबूल है...कबूल है...कबूल है। ये खास ऑनलाइन निकाह हुआ बुधवार को जोधपुर के भीतरी शहर में। दरअसल, भीतरी शहर के खेरादियों के मोहल्ले में रहने वाले कॉन्ट्रैक्टर मोहम्मद अफजल के छोटे बेटे अरबाज की शादी थी। रिश्ता कराची में तय किया गया लेकिन वीजा नहीं मिलने से ऑनलाइन निकाह किया गया।

ऑनलाइन निभाई गई रस्में, दोनों परिवार वीडियो कॉन्फ्रेसिंग से जुड़े

इस अनूठी शादी में अरबाज और अमीना के घर वालों ने ऑनलाइन रस्में निभाई। दोनों के परिवार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए जुड़े। आयोजन स्थल पर लैपटॉप के साथ बड़ी-बड़ी दो एलईडी स्क्रीन भी लगाई गई थी। दूल्हे के पिता मोहम्मद अफजल ने बताया कि पाकिस्तान

से ऐसे रिश्ते लंबे समय से जारी है। पाकिस्तान की दुल्हन जोधपुर आकर खुश है और वहां की लड़कियां और उनके परिवार भी जोधपुर में शादी करना चाहते हैं। हमारे भी रिश्तेदार वहां है। अब हम वीजा की तैयारी करेंगें। दुल्हन को जोधपुर आने में अभी समय लगेगा। उन्होंने बताया कि दोनों देशों के बीच भले ही तनाव रहे लेकिन रिश्ते तो बनते रहते हैं, अफजल ने कहा कि उन्होंने कहा कि इस शादी से पूरा परिवार खुश है।

ऑनलाइन निकाह से खुश

अफजल ने बताया कि हम जैसे साधारण परिवारों के लिए ऑनलाइन निकाह होना बहुत अच्छी बात है खर्चा भी कम होता है और निकाह हो जाता है। अब जब दुल्हन आएगी तो उसका हम स्वागत करेंगे। दूल्हा मोहम्मद अरबाज वकालत के साथ वीडियो एडिटिंग का काम करता है। दूल्हे ने बताया कि रिश्तेदारों ने आपस में रिश्ता तय किया था। अभी वीजा नहीं मिल रहा है इसलिए हम लोगों ने ऑनलाइन शादी करने का ऑप्शन चुना। हालांकि पाकिस्तान में जाकर हम लोग शादी करते तो वह भारत में मान्य नहीं होती और यहां आकर वापस शादी करनी पड़ती। लेकिन, अब हमें भारत के निकाह नामा के साथ वीजा अप्लाई करेंगे तो ये आसानी से मिल जाएगी।

राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए एनएमडीसी निरंतर प्रयासशील : एके पाढी

एनएमडीसी में अंतर उपक्रम हिंदी वाक् प्रतियोगिता आयोजित

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद-सिकंदराबाद के तत्वावधान में आयोजित की जा रही विभिन्न प्रतियोगिताओं के क्रम में एनएमडीसी ने अंतर उपक्रम हिंदी वाक् प्रतियोगिता का आयोजन किया। यह प्रतियोगिता हिंदीभाषी वर्ग के प्रतिभागियों के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का रोजगार पर प्रभाव एवं अन्य भाषा वर्ग के प्रतिभागियों के लिए अक्षय ऊर्जा-विश्व का भविष्य विषय पर पृथक-पृथक रूप से आयोजित की गई। प्रतियोगिता में हैदराबाद-सिकंदराबाद स्थित विभिन्न उपक्रमों के 24 कार्मिकों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में सर्वप्रथम रूद्रनाथ मिश्र, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने मंचासीन अतिथियों एवं नराकास की कोर कमेटी के सदस्यों, विभिन्न उपक्रमों से आए हिंदी अधिकारियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया और बताया कि आज की यह प्रतियोगिता राजभाषा प्रयोग के प्रति हैदराबाद-सिकंदराबाद के उपक्रमों की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। उन्होंने प्रतियोगिता के विषयों के महत्व को रेखांकित किया। तत्पश्चात प्रतियोगिता के निर्णायकों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में एनएमडीसी लिमिटेड के अधिशासी निदेशक (वाणिज्य) ए.के. पाढी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में महाप्रबंधक (कार्मिक) महेश एस. नायर उपस्थित थे। प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में हिंदी शिक्षण योजना, भारत सरकार, गृह मंत्रालय की उपनिदेशक श्रीमती बेला एवं डॉ. अर्चना झा, विभागाध्यक्ष, हिन्दी, सेंट-एन्स कॉलेज, हैदराबाद थीं। मुख्य अतिथि श्री पाढी ने कहा कि एनएमडीसी केवल कंपनी के स्तर पर ही नहीं, बल्कि नगर एवं राष्ट्र स्तर पर भी राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयासशील है। इसके लिए कंपनी समय-समय पर हिंदी प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन करती रहती है। उन्होंने हिंदी वाक प्रतियोगिता के आयोजन का उत्तरदायित्व एनएमडीसी को देने के लिए नगर समिति को धन्यवाद दिया तथा सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दीं। तत्पश्चात नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद-सिकंदराबाद के सदस्य सचिव एवं बीडीएल के उप महाप्रबंधक (राजभाषा) होमनिधि शर्मा ने नराकास की गतिविधियों के विषय में जानकारी दी तथा राजभाषा के क्षेत्र में एनएमडीसी के योगदान की सराहना करते हुए इसे नगर एवं राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त हो रहे पुरस्कारों के लिए बधाई दी। प्रतियोगिता के अंत में निर्णायकगण श्रीमती बेला तथा डॉ. अर्चना झा ने प्रतियोगिता के आयोजन पर अपने विचार प्रस्तुत किए एवं विजेताओं के नामों की घोषणा की। राजेश कुमार गोंड, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के सफल आयोजन में देबाशीष घोष, प्रबंधक (राजभाषा), डॉ. रजिन्दर कौर, प्रबंधक (राजभाषा), एस.के. सनोडिया, उप प्रबंधक (सचि.) तथा सुश्री के. सौम्या, प्रशिक्षु ने सहयोग किया।

रोटरी क्लब ऑफ हैदराबाद सेंटिनल ने की बैठक

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। रोटरी क्लब ऑफ हैदराबाद सेंटिनल की बैठक में फरवरी 2024 में डिस्ट्रिक्ट कॉन्फ्रेंस रोटरी क्लब ऑफ हैदराबाद सेंटिनल द्वारा होस्ट करने या ना करने पर चर्चा की गई। 6 अगस्त को नचाराम में सीपीआर ट्रेनिंग और अवेयरनेस का प्रोग्राम रखा गया है, जहां कार्डियक अरेस्ट की तकनीक बताई जाएगी। यह प्रोग्राम रोटरी क्लब ऑफ स्मार्ट हैदराबाद और रोटरी क्लब ऑफ हैदराबाद सेंटिनल द्वारा रखा जाएगा। इस अवसर पर अध्यक्ष रामराज खत्री, सचिव पंकज कुमार संघी, वेंकट राम रेड्डी,वेंकटेश्वरलू, अनिल डनडू, अशोक काबरा, पराग शाह, विजय सारथी, आशीष अवस्थी, संजय केडिया, रविंदर, सुरेश गुप्ता, गोविंद अग्रवाल, राजेश अग्रवाल, डॉक्टर देवेंद्र, चेतन, राजीव शाह आदि उपस्थित थे।

महिला सशक्तीकरण पर संगोष्ठी आज

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। सौ साल पूरे होने के उपलक्ष्य में अहमदिया मुस्लिम महिला संगठन, हैदराबाद द्वारा इंटरफेथ संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। गोष्ठी का आयोजन 5 अगस्त को शाम 5 बजे रॉयलटन होटल, चिराग अली लेन एबिड्स, हैदराबाद में किया गया है। इस संगोष्ठी का विषय समाज में 'महिलाओं की भूमिका और उनका सशक्तिकरण' रखा गया है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रेसीडेंस अहमदिया मुस्लिम ओमेन आग्जिलरी बुशरा खातून भाग लेंगी।

राजस्थानी सैनिक क्षत्रिय माली संघ द्वारा नानीबाई का मायरा का शुभारंभ

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। राजस्थानी सैनिक क्षत्रिय माली संघ कोलसावाडी, बेगम बाजार के तत्वावधान में श्रावण पुरुषोत्तम मास पर नानीबाई का मायरा का शुभारंभ किया गया। कथा वाचक पूज्य गुरुदेव महन्त परमहंस श्री 108 श्री रामप्रसादजी महाराज (श्री बड़ारामद्वारा, सूरसागर, जोधपुर) के सान्निध्य में आयोजित नानीबाई का मायरा 6 अगस्त तक चलेगा। कार्यक्रम के मुख्य यजमान लूणारामजी जीतमलजी हनुमानजी कच्छवाहा, अलवाल, सह यजमान रामवल्लभजी भाटी 'मामाजी' उपस्थित रहे। दैनिक यजमान के रूप में कृपाराम विकास गहलोत (ताडबन), बलदेवराम बजरंगलाल भाटी, छगनलाल सत्यनारायण मुकेश साँखला (मिर्धा) ने भाग लिया। प्रसादी यजमान हनुमानदासजी, अशोक कुमारजी, अनिल कुमारजी देवडा हैं।

कार्यक्रम के आयोजक राजस्थानी सैनिक क्षत्रिय माली संघ बेगम बाजार के अध्यक्ष रामवल्लभ भाटी, मंत्री राधाकिशन परिहार, कोषाध्यक्ष पुरुषोत्तम टाक हैं। कार्यक्रम को सफल बनाने में माली महिला संगठन की अध्यक्ष अनुरोधा सोलंकी, मंत्राणी सुमन गहलोत, तेलंगाना माली युवा संगम के अध्यक्ष अविनाश देवडा, मंत्री राहुल भाटी का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम के आयोजन में सहयोगी संस्थाएं न्यू राजस्थानी सैनिक क्षत्रिय संघ (माली समाज), रामजाने सेवा संघ, जय श्री बाबा रामदेव संघ, संत श्री लिखमीदासजी (माली) सेवा समिति, माली युवा सेना, ह्यूमानिटी फ्रेंडस ग्रुप ने सहयोग दिया।

मंत्री तलसानी से कई मुद्दों पर की गई चर्चा

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। गोशामहल निर्वाचन क्षेत्र जामबाग मंडल में कुछ लोगों को दिए जाने वाले सीएम राहत कोष, निर्वाचन क्षेत्र के मुद्दों और कार्यों से संबंधित अनुमानों के बारे में मंत्री तलसानी से मुलाकात कर स्थानीय नेता एम. आनंद कुमार गौड़ ने चर्चा की। उन्होंने कहा कि अगर विधानसभा क्षेत्र में कोई समस्या है, तो वह उनके संज्ञान में लाये जायेंगे, तो वह मंत्री से बात कर उसका समाधान करायेंगे। उन्होंने कहा कि गोशामहल निर्वाचन क्षेत्र में पानी की लाइन, सीवरेज लाइन, स्ट्रीट लाइट और सीवरेज की समस्याओं को अधिकारियों के ध्यान में लाया जाएगा और समाधान किया जाएगा। इस अवसर पर जामबाग मंडल के प्रधान सचिव जी. नंदू कुमार, किरण और सीएम राहत कोष पाने वाली कई महिलाओं ने मंत्री को बधाई दी।

प्रमोशन से बढ़ेगी जिम्मेदारी : एसपी सुरेश कुमार

एआरएसआई पद पर पदोन्नति पाने वाले पुलिस पदाधिकारियों को दी बधाई

कुमरम भीम आसिफाबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। जिला एसपी के. सुरेश कुमार आईपीएस ने जिला पुलिस कार्यालय में कुमरम भीम आसिफाबाद जिला सशस्त्र रिजर्व डिवीजन में हेड कांस्टेबल के रूप में काम करते हुए एआरएसआई के रूप में पदोन्नत हुए पांच हेड कांस्टेबलों को सम्मानित किया। पदोन्नत अधिकारियों में एम. दिगंबर, पी. सोने राव, वाई वेंकन्ना, एन. वेंकटेश्वर, पी. माणिक राव शामिल हैं। इस मौके पर एसपी ने कहा कि कि पुलिस विभाग में पदोन्नति के माध्यम से स्तर के साथ-साथ जिम्मेदारी भी बढ़ती है और लोगों के बीच पुलिस विभाग के प्रति विश्वास और सम्मान बढ़ाने के लिए बढ़ी हुई जिम्मेदारी को अनुशासित तरीके से संभालना चाहिए। उन्होंने वरिष्ठों के आदेशानुसार कड़ी मेहनत कर पुलिस विभाग का नाम रोशन करने को कहा। उन्होंने कहा कि हर किसी को लोगों की सेवा में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहिए और अगर आप कड़ी मेहनत करेंगे तो आपको हमेशा अच्छी पहचान मिलेगी। इस कार्यक्रम में आरआई एडमिन पेद्दैया, जिला पुलिस एसोसिएशन के अध्यक्ष विजय शंकर रेड्डी और उपाध्यक्ष टी. स्वामी ने भाग लिया।

बीडीएल ने पहली आरएफ सीकर आकाश-एनजी मिसाइल डीआरडीओ को सौंपी

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। भारत डायनेमिक्स लिमिटेड (बीडीएल) ने अपने नवनिर्मित अत्याधुनिक सीकर सुविधा केंद्र (एसएफसी) में निर्मित आकाश की पहली रेडियो फ्रीक्वेंसी (आरएफ) सीकर-अगली पीढ़ी के हथियार प्रणाली को रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) को सौंप दिया। सीकर एक महत्वपूर्ण और प्रौद्योगिकी गहन उपप्रणाली है जिसका उपयोग टर्मिनल चरण में लक्ष्य ट्रैकिंग के लिए सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों और हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइलों में किया जाता है। आरएफ सीकर को डीआरडीओ के अनुसंधान केंद्र इमारत द्वारा डिजाइन किया गया है, और बीडीएल द्वारा कंचनबाग यूनिट में स्थापित अपने अत्याधुनिक सीकर सुविधा केंद्र में इसका उत्पादन किया गया है। आज बीडीएल की कंचनबाग इकाई में आयोजित एक विशेष समारोह में, कमोडोर ए माधवराव (सेवानिवृत्त), अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, बीडीएल ने इस सुविधा में बीडीएल द्वारा निर्मित पहला आरएफ सीकर रक्षा अनुसंधान विभाग एवं विकास के सचिव डॉ. समीर वी कामत को सौंपा। इस अवसर पर बोलते हुए, रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव और डीआरडीओ के अध्यक्ष डॉ. समीर वी कामत ने कहा कि बीडीएल में सीकर सुविधा केंद्र की स्थापना ने भारत को आरएफ सीकर उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल करने और इसमें महत्वपूर्ण योगदान देने में सक्षम बनाया है। कमोडोर ए. माधवराव (सेवानिवृत्त), सीएमडी, बीडीएल ने इस उपलब्धि पर गर्व व्यक्त करते हुए कहा कि आरएफ सीकर के उत्पादन के साथ, बीडीएल अब दुनिया भर में कंपनियों के एक विशिष्ट समूह में शामिल हो गया है, जिनके पास आरएफ सीकर के उत्पादन की पूरी क्षमता है।

महिला दक्षता समिति व बंसीलाल मालानी कॉलेज ऑफ नर्सिंग का दीक्षांत समारोह

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। महिला दक्षता समिति द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं सुमन जूनियर और वोकेशनल कॉलेज, वीडी बजाज डिग्री कॉलेज, महिला दक्षता समिति और बंसीलाल मालानी कॉलेज ऑफ नर्सिंग गंगारम, चंदानगर प्रांगण में बीएससी नर्सिंग दूसरी बैच की छात्राओं का दीक्षांत समारोह किया गया। अवसर पर मुख्य अतिथि जीएचएमसी मेयर श्रीमती गड़वाल विजयलक्ष्मी, विशेष अतिथि श्रीमती करुणा वाकाटी अकेला, आईएएस सचिव, उच्च शिक्षा विभाग हैदराबाद, डॉ. श्रीमती सपना मर्दा रेडियोलॉजिस्ट यशोदा अस्पताल सिकंदराबाद, सम्माननीय अतिथि विनोद के अग्रवाल, आईएएस (सेवानिवृत्त) तेलंगाना सरकार के पूर्व विशेष मुख्य सचिव कार्यक्रम में उपस्थित रहे। महिला दक्षता समिति की फाउंडर अध्यक्ष डॉ. सरोज बजाज ने अतिथियों का स्वागत करते हुए महिला दक्षता समिति द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं का संक्षेप में परिचय दिया।

सम्माननीय अतिथि श्री विनोद के. अग्रवाल, आईएएस (सेवानिवृत्त) तेलंगाना सरकार के पूर्व विशेष मुख्य सचिव ने नर्सिंग की छात्राओं को बधाई देते हुए कहा कि नर्सिंग के क्षेत्र में आपकी भूमिका महत्वपूर्ण है। रोगियों के जीवन में आपकी अमिट छाप होती है, डॉक्टर रोगियों के पास निर्दिष्ट समय तक रहते हैं किंतु नर्से रोगियों के पास निरंतर तत्पर रहकर अपना कर्तव्य निभाती है। विशिष्ट अतिथि डॉ. श्रीमती सपना मर्दा (रेडियोलॉजिस्ट यशोदा अस्पताल, सिकंदराबाद), ने कहा कि विपन्न वर्ग की ग्रामीण बालिकाओं को शिक्षा प्रदान करने के लिए सबसे पहले मैं महिला दक्षता समिति शिक्षण संस्था और इसकी अध्यक्ष डॉ सरोज बजाज का अभिनंदन करती हूं। कार्यक्रम में श्रीमती अरुणा मालानी, सचिव महिला दक्षता समिति और बंसीलाल मालानी कॉलेज ऑफ नर्सिंग, श्रीमती दिव्या मालानी, डॉ. सचिन मर्दा, श्रीमती मंजू कोठारी, श्रीमती उषा मालपानी, कार्यकारी सदस्य श्रीमती जया बाहेती, श्रीमती राजश्री जैन एमडीएस की ट्रस्टी, के. अनुसूया, सौरव कोठारी, ब्रिज सोनी,उपस्थित रहे।

विधायक ने मदनूर व बीचकुंडा मंडल में किया एंबुलेंस का शुभारंभ

मदनूर, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। जुक्कल विस क्षेत्र के विधायक हनमंत शिंदे ने बिचकुंदा मंडल केंद्र के सरकारी अस्पताल में एंबुलेंस सेवा का शुभारंभ करते हुए बताया कि तेलंगाना सरकार ने गरीब जनता की सेवा के लिये निःशुल्क एंबुलेंस सेवा शुरू की है। विधायक ने जनता को संबोधित करते हुए बताया कि आने वाले दिनों में बिचकुंदा मंडल केंद्र में जल्द ही सौ बिस्तर वाला दवाखाना निर्माण किया जायेगा। पत्रकार के साथ बातचीत में उन्होंने बताया कि कुछ वर्ष पहले जाहीराबाद सांसद बीबी पाटील ने आपने निधि से मदनूर सरकारी दवाखाना को गरीब जनता की सेवा के लिये एक एबुलेंस दिया। उस दिन जुक्कल विधायक शिंदे ने ही एबुलेंस का शुभारंभ करने के बाद दवाखाना मैदान में विधायक शिंदे ने एक प्रेस मिट में बताया कि मदनूर में ही सौ बिस्तर वाला दवाखाना निर्माण किया जायेगा। बिचकुंदा व मदनूर मंडल में एक ही आश्वाशन देने से मदनूर की जनता विधायक के आश्वाशन से परेशन हैं।

बजरंग सेना में कई पदाधिकारी शामिल

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। बजरंग सेना में कई पदाधिकारियों को शामिल कर लिया गया। जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार एनएस अजय नायडू को तेलंगाना राज्य का आयोजन सचिव नियुक्त किया गया। केवी जगदीश गौड़ को महांकाली जिला के महासचिव, वी.सतीश राजू महंकाली जिला अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

के. सुनील चारी मल्काजगिरी मेडचल जिले के अध्यक्ष के रूप में, अभिनय तिवारी, अध्यक्ष हिमायतनगर मंडल, विनीत यादव, युवा अध्यक्ष, ग्रेटर हैदराबाद को अध्यक्ष एन.आर. लक्ष्मण राव ने स्वागत किया और नियुक्ति पत्र दिए। इस अवसर पर श्रीनिवास गुप्ता, नंद किशोर अग्रवाल उपाध्यक्ष, सूर्य शुक्ला, ठाकुर विकास सिंह, महासचिव, मनोज मोगलगिड्डी, अध्यक्ष ग्रेटर हैदराबाद, प्रवीण यादव, ओ. वेंकट और अन्य उपस्थित थे।

ऋषिश्रृंग भवन से 6 अगस्त को श्री सिखवाल ब्राह्मण समाज द्वारा कांवड यात्रा का शुभारंभ किया जाएगा। आज इस संदर्भ में आयोजित बैठक में भाग लेते हुए संस्था के पदाधिकारी रामदेव नगला व अन्य।

एस ताराचंद, महाप्रबंधक (वित्त), बीएसएनएल, तेलंगाना को बीएसएनएल में 25 साल की सेवा पूरी करने और सीसीए टेलीकॉम, एपी के रूप में नई नियुक्ति पर फत्ते मैदान क्लब में अयोजित समारोह में तेलंगाना प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन के अध्यक्ष रमेश कुमार बंग ने शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर जामबाग के पार्षद राकेश जयसवाल, सुमेश कुमार बंग और अन्य उपस्थित थे।

प्रथम पृष्ठ का शेष...

राहुल की सजा ...

अदालत के इस फैसले से राहुल के पक्ष में सबसे जरूरी बातें हुई

राहुल गांधी की सांसदी फिर से बहाल होगी और वो मौजूदा सत्र में शामिल हो सकेंगे। अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव में राहुल चाहें तो चुनाव लड़ सकते हैं। राहुल को फिर से बतौर सांसद मिलने वाला सरकारी घर मिल जाएगा।

राहुल ने 15 जुलाई को सुप्रीम कोर्ट में हाईकोर्ट और ट्रायल कोर्ट के फैसले के खिलाफ अपील की थी। सुप्रीम कोर्ट में पहली सुनवाई 21 जुलाई को हुई। कोर्ट ने शिकायतकर्ता और राहुल से जवाब दाखिल करने को कहा। इसके बाद 2 अगस्त को फिर बेंच ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनीं। इसके बाद 4 अगस्त तक फैसला सुरक्षित रख लिया। सुप्रीम कोर्ट ने 4 अगस्त को फैसले में कहा, जब तक राहुल गांधी की याचिका पर सुनवाई पूरी नहीं होती, तब तक दोषसिद्धि पर रोक रहेगी। सुनवाई की नई तारीख अभी नहीं बताई है।

जस्टिस बीआर गवई, जस्टिस पीएस नरसिम्हा और जस्टिस संजय कुमार। 21 जुलाई को पहली सुनवाई में जस्टिस गवई ने कहा कि उनके पिता कांग्रेस से जुड़े हुए थे और भाई भी कांग्रेस से जुड़े हुए हैं। ऐसे में उनके सुनवाई करने से किसी पक्ष को कोई आपत्ति तो नहीं है। इस पर दोनों पक्षों ने कहा कि उन्हें इससे कोई दिक्कत नहीं है।

शिकायतकर्ता के महेश जेठमलानी और राहुल के वकील अभिषेक मनु सिंघवी।

राहुल के वकील : शिकायतकर्ता पूर्णेश मोदी का असली सरनेम मोदी नहीं है। उन्होंने ये सरनेम बाद में अपनाया है।

राहुल के वकील : मानहानि केस के चलते राहुल गांधी को 8 साल के लिए चुप करा दिया गया? लोकतंत्र में मतभेद होते हैं। हिंदी में बोलें तो हम इसे शालीन भाषा कहते हैं। मैं यह समझता हूं और मुझे नहीं लगता कि राहुल गांधी की नीयत किसी को मोदी सरनेम वाले सभी लोगों को नीचा दिखाने की थी। नैतिक पतन की बात आ रही है। ऐसा कोई साक्ष्य नहीं है। यह गंभीर अपराध नहीं है, जमानत दिए जाने वाला केस है। ये ऐसा मामला कैसे बन गया, जिसमें नैतिक पतन शामिल हो?

ज्ञानवापी सर्वे पर ...

इससे पहले, इलाहाबाद हाईकोर्ट से इजाजत मिलने के बाद गुरुवार सुबह 8 बजे से ज्ञानवापी में एएसआई की टीम ने सर्वे शुरू कर दिया था। 4 घंटे बाद यानी 12 बजे जुमे की नमाज के लिए सर्वे को रोक दिया गया। दोपहर 3 बजे से सर्वे फिर शुरू हो गया। इस बार एएसआई टीम में 61 सदस्य हैं। यानी पिछली बार की तुलना में 40 सदस्य ज्यादा।

ज्ञानवापी परिसर को 4 ब्लॉक में बांटा गया है। चारों तरफ कैमरे लगाए हैं। वीडियोग्राफी की जा रही है। ज्ञानवापी की पश्चिमी दीवार पर सबसे ज्यादा फोकस है। दीवार की बारीक स्कैनिंग की जा रही है। कलाकृतियों को देखा जा रहा है। एएसआई के साथ हिंदू पक्ष अंदर है। लेकिन मुस्लिम पक्ष ने सर्वे में शामिल होने से इनकार कर दिया है। मुस्लिम पक्ष ज्ञानवापी नहीं पहुंचा। जुमे की वजह से प्रदेश में हाईअलर्ट है। ज्ञानवापी के आसपास भारी संख्या में फोर्स तैनात है।

अपर जिला मजिस्ट्रेट (नगर) आलोक कुमार वर्मा ने हिंदू पक्ष के 7 और मुस्लिम पक्ष के 9 लोगों को सर्वे टीम के साथ अंदर जाने की अनुमति दी है। इसमें हिंदू पक्ष में रेखा पाठक, सीता साहू, लक्ष्मी देवी, सोहन लाल आर्य, अनुपम द्विवेदी, सुभाष नंदन चतुर्वेदी, विक्रम व्यास परिसर में अंदर पहुंच चुके हैं।

वहीं, मुस्लिम पक्ष में मौलाना अब्दुल बांकी, अब्दुल बातीन नोमानी, एमएम यासिन, मुमताज अहमद, अखलाक अहमद, मोहम्मद एजाज अहमद, शमशेर अली, फुजैल अहमद, हाजी नेसार को बुलाया गया था, लेकिन वो ज्ञानवापी परिसर में नहीं पहुंचे।

वाराणसी जिला कोर्ट के आदेश पर एएसआई ने 24 जुलाई को ज्ञानवापी का सर्वे शुरू किया था। उस वक्त एएसआई की 20 सदस्यीय टीम थी।

भारत ने खेला 200वां टी-20 पाकिस्तान के बाद दूसरा देश

तिलक डेब्यू मैच में सबसे ज्यादा सिक्स मारने वाले भारतीयों की सूची में नंबर-2 पर

त्रिनिनाद, 4 अगस्त (एजेंसियां)। भारत ने अपना 200वां टी-20 मुकाबला खेला। टीम इंडिया 200 या इससे ज्यादा टी-20 मैच खेलने वाली दुनिया की दूसरी टीम बनी। भारत से ज्यादा पाकिस्तान 223 टी-20 खेल चुका है। इस लो-स्कोरिंग मैच को वेस्टइंडीज ने 4 रन से जीता। वेस्टइंडीज के खिलाफ टी-20 सीरीज के पहले मुकाबले के बाद कई रोचक फैक्ट सामने आए।

हार्दिक पंड्या की कप्तानी में टीम इंडिया पहली बार 150 रन का टारगेट चेज करने में नाकाम रही है। मुकेश कुमार एक दौरे पर तीनों फॉर्मेट में डेब्यू करने वाले दूसरे भारतीय गेंदबाज बने। तिलक वर्मा ने इंटरनेशनल करियर की शुरुआत सिक्स जमाकर की।

200 मैचों के बाद भारत का विनिंग परसेंटेज सबसे ज्यादा

200 मैचों के बाद भारतीय टीम का विनिंग परसेंटेज सबसे ज्यादा है। भारतीय टीम ने 63.5 % मैच जीते हैं, जबकि 223 मैच खेल चुकी पाकिस्तान 60.08% मैच ही जीत सकी है। भारत ने 200 में से 127 और पाकिस्तान ने 223 में से 134 मैच जीते हैं।

चौथी बार 150 रन चेज नहीं कर सकी टीम इंडिया

टी-20 क्रिकेट के इतिहास में भारतीय टीम चौथी बार 150 रन का टारगेट चेज करने में नाकाम रही है। इससे पहले टीम 2016 में न्यूजीलैंड, 2015 में जिम्बाब्वे और 2009 में साउथ अफ्रीका के खिलाफ 150 का टारगेट चेज करने में नाकाम रही थी।

द्रविड़ और मुरली विजय की बराबरी पर आए तिलक वर्मा

युवा बैटर तिलक वर्मा डेब्यू मैच में सबसे ज्यादा सिक्स जमाने वाले बैटर्स की सूची में दूसरा स्थान हासिल कर लिया है। वर्मा ने डेब्यू मैच में 3 सिक्स जमाए हैं। उन्होंने राहुल द्रविड़ और मुरली विजय की बराबरी कर ली है। डेब्यू मैच में तिलक से ज्यादा छक्के ईशान किशन ने जमाए थे।

डेब्यू मैच में 175+ का स्ट्राइक रेट

तिलक वर्मा ने विंडीज के खिलाफ 177.27 के स्ट्राइक रेट से बैटिंग की है। वे डेब्यू मैच में 175+ के स्ट्राइक रेट से रन बनाने वाले तीसरे भारतीय बैटर्स बने हैं।

सबसे ज्यादा 150 चेज करने में असफल रहे भारतीय कप्तानों में पंड्या

पंड्या का नाम सबसे ज्यादा बार 150 चेज करने में असफल भारतीय कप्तानों की सूची में जुड़ गया है। उनकी कप्तानी में टीम पहली बार 150 का टारगेट चेज करने में नाकाम रही है। उनके अलावा, अंजिक्य रहाने की कप्तानी में एक और धोनी की कप्तानी में दो बार ऐसा हुआ है।

भारत को वर्ल्ड आर्चरी-चैम्पियनशिप में गोल्ड

92 साल के इतिहास में पहली बार विमेंस कंपाउंड टीम को सफलता

बर्लिन, 4 अगस्त (एजेंसियां)। भारत की विमेंस कंपाउंड टीम ने पहली बार वर्ल्ड आर्चरी चैम्पियनशिप जीत ली है। टूर्नामेंट के 92 साल के इतिहास में पहली बार भारत को आर्चरी के इस इवेंट में गोल्ड मिला है। पहली बार वर्ल्ड आर्चरी चैम्पियनशिप 1931 में हुई थी। जर्मनी की राजधानी बर्लिन में चल रही वर्ल्ड चैम्पियनशिप के कंपाउंड में भारतीय विमेंस टीम ने फाइनल में मैक्सिको को 235-229 से हराया। टीम में आर्चर ज्योति सुरेख, वेन्नम परनीत कौर और अदिति स्वामी शामिल थी।

इससे पहले सेमीफाइनल में कोलंबिया को 220-216 से हराया। वहीं भारतीय टीम को पहले राउंड में बाई मिला था। जबकि प्री क्वार्टर फाइनल में तुर्की को और क्वार्टर फाइनल में चीनी ताइपे को हराया।

इंडिविजुअल में पहली बार टॉप 8 में से 3 भारतीय खिलाड़ी

विमेंस कंपाउंड के इंडिविजुअल में पहली बार टॉप-8 तीरंदाजों में 3 भारतीय शामिल हैं। भारतीय टीम की तीनों तीरंदाज ज्योति सुरेख, वेन्नम परनीत कौर और अदिति स्वामी क्वार्टर फाइनल में जगह बनाने में सफल हुई हैं।वर्ल्ड आर्चरी चैम्पियनशिप चार साल में एक बार होने वाला इवेंट है। इसमें ओलिंपिक क्वालिफिकेशन का भी क्वोटा है। भारत ने इस चैम्पियनशिप में 9 बार सिल्वर और 2 बार ब्रॉन्ज मेडल जीते हैं। कंपाउंड मेंस और मिक्स्ड टीम की टूर्नामेंट में कड़ी हार के बाद समाप्त हो गईं। मेंस टीम में अभिषेक वर्मा, ओजस देवताले और प्रथमेश जावकर क्वार्टर फाइनल में नीदरलैंड से 230-235 से हार गए। दूसरी ओर मिक्स्ड इवेंट में में, देवतले और ज्योति सुरेखा को क्वार्टरफाइनल में अमेरिका ने 154-153 से हराया। भारतीय तीरंदाजों में मेंस और विमेंस की रिकर्व टीम क्वार्टरफाइनल में बाहर हो गई। इसके चलते टीमों की डाइरेक्ट ओलिंपिक में जाने का मौका गवां दिया। अब टीम को अगले बड़े टूर्नामेंट का इंतजार करना होगा। पेरिस ओलिंपिक्स क्वालिफायर का अगला दौर कॉन्टिनेंटल गेम्स होगा।

ऑस्ट्रेलिया ओपन बैडमिंटन...पीवी सिंधु क्वार्टरफाइनल में हारीं

> प्रियांशु और प्रणय सेमीफाइनल में पहुंचे

> 5 अगस्त को एक-दूसरे से भिड़ेंगे

मेलबोर्नत्रिनिनाद, 4 अगस्त (एजेंसियां)। भारत की दो बार की ओलिंपिक मेडलिस्ट पीवी सिंधु और पूर्व वर्ल्ड नंबर-1 किदांबी श्रीकांत ऑस्ट्रेलिया ओपन के क्वार्टर फाइनल में हारकर टूर्नामेंट से बाहर हो गए हैं। वहीं प्रियांशु रजावत और एचएस प्रणय सेमीफाइनल में पहुंच गए हैं। अब दूसरे सेमीफाइनल में प्रियांशु और प्रणय आपस में भिड़ेंगे। प्रियांशु ने क्वार्टर फाइनल में श्रीकांत को हराया।

सिंधु को टूर्नामेंट की चौथी सीड बेवेन झांग ने हराया

सिंधु को क्वार्टर फाइनल में टूर्नामेंट की चौथी सीड मलेशिया की बेवेन झांग से हार का सामना करना पड़ा। बेवेन झांग ने सिंधु को 21-12 और 21-17 से हराया। इससे पहले झांग दूसरे राउंड में हुआंग यू-सन को 19-21, 21-10, 21-12 को हराकर क्वार्टर फाइनल में पहुंची थीं। वहीं सिंधु ने दूसरे राउंड में हमवतन आकर्षी कश्यप को 21-14, 21-10 से हराया था। सिंधु और आकर्षी पहली बार आपस में भिड़ी थीं। सिंधु ने अपने अनुभव का फायदा उठाते हुए बहुत ही आसानी से आकर्षी को 29 मिनट में हराकर अगले राउंड में अपना स्थान पक्का किया था।

प्रियांशु रजावत ने सीधे गेमों में श्रीकांत को हराया

वहीं प्रियांशु रजावत ने पूर्व वर्ल्ड नंबर-1 किदाम्बी श्रीकांत को सीधे गेमों में 21-13, 21-8 से हराकर सेमीफाइनल में पहुंचे। श्रीकांत ने दूसरे राउंड में चीनी ताइपे के सु ली यांग को 21-10, 21-17 से हराकर क्वार्टर फाइनल में पहुंचे थे। उन्होंने पहले राउंड में जापान के केंटा निशिमोटो को 21-18, 21-7 से हराया था। जबकि प्रियांशु ने दूसरे राउंड में चीनी ताइपे के वांग त्जु वेई को 21-8, 13-21, 21-19 से हराया था। अब रजवात दूसरे सेमीफाइनल में हमवतन एचएस प्रणय से भिड़ेंगे।

प्रणय ने क्वार्टर फाइनल में इंडोनेशिया के एंथोनी गिंटिंग को हराकर सेमीफाइनल में पहुंचे हैं। उन्होंने गिटिंग को 16-21, 21-17, 21-14 से हराया। प्रणय ने पहला गेम हराने के बाद दूसरे गेम में वापसी करने के बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा और तीसरे गेम को आसानी से 21-13 से जीतकर मैच को अपने कब्जे में कर लिया। इससे पहले प्रणय ने दूसरे राउंड में चीनी ताइपे के चू यू जेन को 19-21, 21-19, 21-13 से हराया था।

एंडी फ्लावर आरसीबी के हेड कोच नियुक्त

टीम में संजय बांगड़ की जगह लेंगे; आरसीबी ने माइक हेसन को भी रिलीज किया

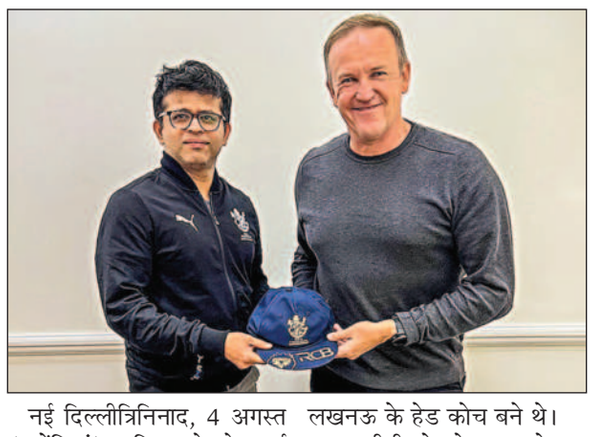

नई दिल्लीत्रिनिनाद, 4 अगस्त (एजेंसियां)। जिम्बाब्वे के पूर्व खिलाड़ी और पिछले सीजन लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) के हेड कोच रहे एंडी फ्लावर को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) ने टीम का नया हेड कोच नियुक्त किया है। आरसीबी ने इसकी जानकारी शुक्रवार को सोशल मीडिया के जरिए दी। फ्लावर संजय बांगड़ की जगह लेंगे, जिनका इस टीम के साथ कार्यकाल 31 अगस्त को खत्म हो रहा है।

वहीं आरसीबी ने टीम डायरेक्टर माइक हेसन को भी रिलीज कर दिया है। टीम पिछले सीजन प्लेऑफ के लिए भी नहीं क्वालिफाई कर पाई थी। एंडी फ्लावर ने हाल ही में लखनऊ सुपर जायंट्स का साथ छोड़ा था। उनकी जगह जस्टिन लैंगर लखनऊ के हेड कोच बने थे।

आरसीबी ने पोस्ट करते हुए लिखा-हम आईसीसी हॉल ऑफ फेमर और इंग्लैंड को टी-20 वर्ल्ड कप जिताने वाले कोच एंडी फ्लावर का आरसीबी की मेंस टीम के हेड कोच के रूप में स्वागत करते हैं। आईपीएल और दुनिया भर की कई टी-20 टीमों को कोचिंग देने और अपनी टीमों को पीएसएल, आईएलटी20, द हंड्रेड और अबू धाबी टी-10 में चैम्पियन बनाने का एंडी का अनुभव आरसीबी को ट्रॉफी दिलाने में मदद कर सकता है। उनकी जीतने की मानसिकता से आरसीबी को आगे बढ़ने में मदद मिलेगी।

फ्लावर ने 19 साल तक इंटरनेशनल क्रिकेट खेला

फ्लावर ने साल 1992 से साल 2003 तक जिम्बाब्वे क्रिकेट टीम का प्रतिनिधित्व किया है। उन्होंने 63 टेस्ट मैचों में 4,794 रन बनाए हैं। इस दौरान उन्होंने 12 शतक और 27 अर्धशतक लगाए हैं। वनडे क्रिकेट में उन्होंने 213 मैच खेले हैं।

एलएसजी टीम के हेड कोच भी रहे

फ्लावर दुनिया भर में लीग क्रिकेट के दौरान कई फ्रेंचाइजी टीमों के साथ रहे हैं। उन्हें साल 2016 में पेशावर जाल्मी का बल्लेबाजी कोच बनाया गया था। (पीएसएल) 2021 में वह मुल्तान सुल्तान, (सीपीएल) 2020 सेंट लूसिया जॉक्स और आईएलटी20 (2023) में गल्फ जायंट्स के लिए हेड कोच और आईपीएल में पंजाब किंग्स के लिए असिस्टेंट कोच भी थे। फ्लावर आईपीएल 2022 में लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) में शामिल हुए और पिछले 2 सीजन में फ्रेंचाइजी को प्लेऑफ तक पहुंचाया।

फ्लावर की कोचिंग में इंग्लैंड 2010 में टी-20 वर्ल्ड कप जीता

फ्लावर को मई 2007 में इंग्लैंड क्रिकेट टीम का असिस्टेंट कोच बनाया गया था। उन्हें साल 2009 में टीम का हेड कोच बनाया गया। उनकी कोचिंग में इंग्लैंड ने 2009 की घरेलू ऐशेज सीरीज 2-1 से जीती। साल 2010 में इंग्लैंड की टीम ने टी-20 वर्ल्ड कप भी जीता। फ्लावर साल 2021 में टी-20 वर्ल्ड कप के लिए अफगानिस्तान क्रिकेट टीम के कोचिंग सलाहकार बने। फ्लावर को ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम ने वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप के दौरान और हाल ही में खत्म हुई ऐशेज सीरीज के लिए अपने कोचिंग स्टाफ में शामिल किया था।

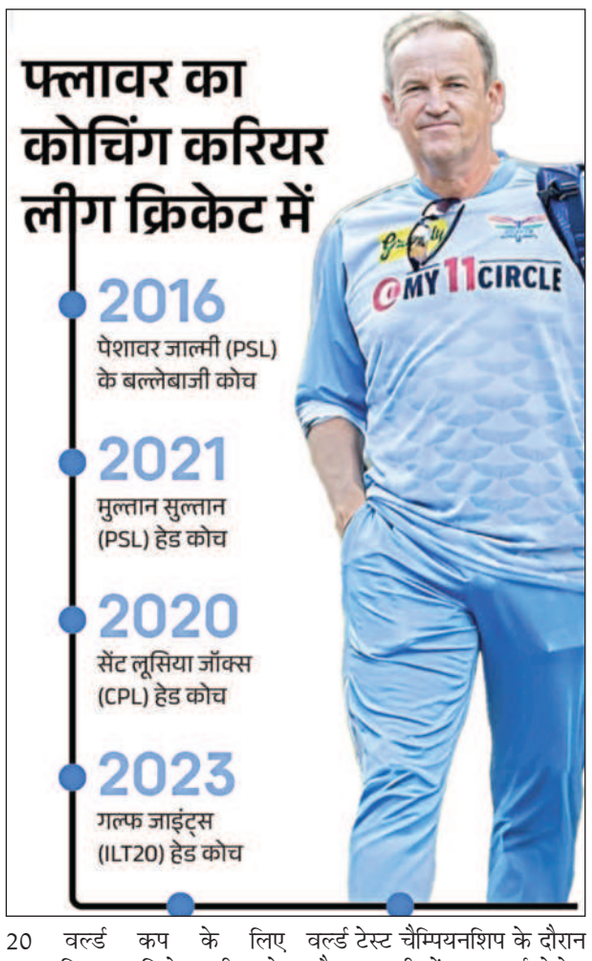

अर्शदीप बोले-हमें प्लेइंग-11 पर पूरा भरोसा था

तिलक ने डेब्यू पर शानदार किया लेकिन उनका विकेट टर्निंग पॉइंट नहीं

त्रिनिनाद, 4 अगस्त (एजेंसियां)। भारतीय टीम के तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह ने टीम के बल्लेबाजी क्रम के बारे में कहा, 'मैच के बाद ही बदलाव करने पर बातें हो होती हैं। लेकिन, हमने जो प्लेइंग 11 उतारी, हमें यकीन था कि हम मैच जीतेंगे। हम हमेशा अपनी प्लेइंग-11 के समर्थन में होते हैं, चाहे इसमें छह गेंदबाज हों या नौ। इससे फर्क नहीं पड़ता।'

वेस्टइंडीज के खिलाफ टीम इंडिया को पांच टी-20 मैचों की सीरीज के पहले मुकाबले में 4 रन से हार का सामना करना पड़ा। अर्शदीप ने इस मैच में 31 रन देकर दो विकेट लिए।

गेम का रिव्यू करेंगे

'यही कह सकते हैं कि मैच के बाद रिव्यू करेंगे गेम को। देखेंगे पहली इनिंग में क्या अच्छ कर सकते थे, कहीं पर और रन रोक सकते थे। एक बल्लेबाज को आखिर तक टिकना चाहिए था, क्योंकि आखिरी दो ओवर में 30 गज के भीतर पांच फील्डर थे। लेकिन शॉट की जरूरत थी जो बल्लेबाजों ने खेला और विकेट भी गए। हम हार की समीक्षा करेंगे। यह देखेंगे कि कहां चूक हुई और उसमें क्या सुधार हो सकता है।'

पहलवान बजरंग पूनिया को दिल्ली कोर्ट ने किया तलब

कोच ने किया मानहानि का केस दर्ज; कहा-धरने के दौरान अपमानजनक टिप्पणी की

पानीपत, 4 अगस्त (एजेंसियां)। हरियाणा के ओलिंपिक मेडलिस्ट पहलवान बजरंग पूनिया पर आए दिन नई मुश्किलें आ रही हैं। जंतर-मंतर पर पहलवानों के धरना प्रदर्शन के दौरान अपमानजनक टिप्पणी करने के मामले में दिल्ली के पटियाला हाउस कोर्ट ने बजरंग पूनिया को तलब किया है।

पहलवान कोच नरेश दहिया ने बजरंग पूनिया के खिलाफ मानहानि का मामला दायर किया है। अदालत ने पूनिया को बतौर आरोपी 6 सितंबर को तलब किया है। शिकायतकर्ता नरेश दहिया ने आपराधिक मानहानि शिकायत में कहा कि 10 मई को जंतर-मंतर पर विरोध प्रदर्शन के दौरान बजरंग पूनिया ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में उनके खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी की थी।

मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट यशदीप चहल बोले- पेश हों

मिली जानकारी के अनुसार मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट यशदीप चहल ने गुरुवार (3 अगस्त) को निर्देश दिया कि पूनिया उस दिन (6 सितंबर) पेश हों, यह मानते हुए कि पहली नजर में उनका विचार है कि मानहानि के सभी तत्व सामने आए हैं। उन्होंने कहा कि समन जारी करने के चरण में काफी हद तक यह तय हो चुका है कि अदालत को आरोपी की और से किए जा सकने वाले संभावित बचाव के तुलनात्मक विश्लेषण में जाने की जरूरत नहीं है।

मामले को लेकर जज ने ये कहा

जज ने कहा, "शिकायत, सहायक दस्तावेज और समन पूर्व साक्ष्य पर विचार करने पर मेरा प्रथम दृष्ट्या विचार है कि मानहानि के सभी तत्व बनते हैं। ऐसा लगता है कि प्रेस कॉन्फ्रेंस में दिया गया बयान दुर्भावनापूर्ण इरादे का परिणाम था और अच्छे इरादे से नहीं दिया गया था। इसे ध्यान में रखते हुए आरोपी यानी बजरंग पूनिया को आईपीसी की धारा 499 के साथ धारा 500 (दोनों आपराधिक मानहानि से संबंधित) के तहत दंडनीय अपराध के लिए बुलाया जाए।

बता दें कि बजरंग पूनिया उन शीर्ष पहलवानों में शामिल थे जो पिछले दिनों दिल्ली के जंतर-मंतर पर भारतीय कुश्ती महासंघ के निवर्तमान अध्यक्ष और बीजेपी सांसद बृजभूषण शरण सिंह की गिरफ्तारी की मांग करते हुए धरना दे रहे थे। पहलवानों ने बृजभूषण शरण सिंह पर यौन शोषण जैसे गंभीर आरोप लगाए हैं।

सोमालियन एथलीट ने 100 मी. रेस में लगाया था 21 सेकंड का समय

वहां के खेल मंत्री ने लिया एक्शन

नई दिल्लीत्रिनिनाद, 4 अगस्त (एजेंसियां)। चीन में वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स का आयोजन किया जा रहा है। इन गेम्स में सोमालिया को तब शर्मिंदगी का सामना करना पड़ा, जब वहां की एक महिला खिलाड़ी ने 100 मीटर स्प्रिंट में 21 सेकंड का समय ले लिया। दरअसल, 100 मीटर स्प्रिंट में कोई एथलीट ज्यादा से ज्यादा नौ, 10 या 11 सेकंड का समय निकालता है, लेकिन सोमालिया की एथलीट के नाम ऐसा रिकॉर्ड दर्ज हुआ कि देश को माफी तक मांगनी पड़ी है। इसके अलावा वहां के लोगों ने अधिकारियों को बर्खास्त करने की मांग की थी। इस पर सोमालिया के खेल मंत्री ने एक्शन लेते हुए देश के एथलेटिक्स महासंघ की अध्यक्ष को निलंबित कर दिया और कानूनी कार्रवाई शुरू करने के लिए भी तैयार हैं।

दरअसल, चीन में 28 अगस्त से आठ सितंबर तक चलने वाले वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स में सोमालिया ने एक नौसिखिया 100 मीटर स्प्रिंटर नसरा अबुबकर अली को मैदान में उतार दिया था। इस नौसिखिये स्प्रिंटर ने स्प्रिंट जीतने वाली एथलीट से लगभग दोगुना समय लिया।

इसके बाद से ही सोमालिया में खेल अधिकारियों को बर्खास्त करने की मांग की जाने लगी। सोमालिया के खेल मंत्री मोहम्मद बर्रे मोहमूद ने नसरा को यूनिवर्सिटी गेम्स में 100 मीटर स्प्रिंट में देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुने जाने के लिए देश से माफी मांगी है। रिपोर्ट के मुताबिक, नसरा को इन खेलों या किसी भी प्रतियोगिता में भाग लेने का अनुभव नहीं था।

अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत पीएम करेंगे दमरे के 50 स्टेशनों के पुनर्विकास का शिलान्यास : अरुण जैन

तेलंगाना के 21 स्टेशन, आंध्र प्रदेश के 15 स्टेशन, महाराष्ट्र के 13 व कर्नाटक का एक स्टेशन शामिल

लगभग 2,07 9.29 करोड़ रुपये की संयुक्त लागत से 50 स्टेशनों का विकास

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। दक्षिण मध्य रेलवे के महाप्रबंधक अरुण कुमार जैन ने कहा कि भारतीय रेलवे आधुनिकीकरण और भारत सरकार के न्यू इंडिया विजन को साकार करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही है। रेलवे स्टेशनों का विश्वस्तरीय प्रतिष्ठानों के रूप में पुनर्विकास का कार्य देश भर में तेजी से किया जा रहा है। इस प्रयास को अगले स्तर तक पहुंचाते हुए, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 6 अगस्त को देश भर में अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत 508 रेलवे स्टेशनों के विकास का शिलान्यास किया जाएगा। दमरे के रेल मुख्यालय रेल निलयम में पत्रकारों

से बातचीत करते हुए श्री जैन ने कहा कि इसमें दक्षिण मध्य रेलवे के 4 राज्यों में फैले 50 रेलवे स्टेशन शामिल हैं। अमृत भारत स्टेशन योजना (एबीएसएस) के इस पहले चरण में लगभग 2,079.29 करोड़ रुपये की संयुक्त लागत से तेलंगाना में 21 स्टेशनों, आंध्र प्रदेश में 15 स्टेशनों, महाराष्ट्र में 13 स्टेशनों और कर्नाटक में एक स्टेशन का शिलान्यास किया जा रहा है। रेल मंत्रालय द्वारा तैयार की गई एबीएसएस नीति का उद्देश्य है रेलवे स्टेशनों का आधुनिकीकरण, जिसमें दीर्घकालिक दृष्टि के साथ निरंतर आधार पर विकास की परिकल्पना की गई है।

यह विचार मास्टर प्लान के अनुसार विभिन्न महत्वपूर्ण तत्वों के कार्यान्वयन पर आधारित है जो रेलवे स्टेशनों की बढ़ती जरूरतों और बढ़ते हुए पेट्रोनेज को पूरा करता है। भारत सरकार द्वारा शुरू की गई अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत देश भर के रेलवे स्टेशनों का अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ पुनर्विकास किया जा रहा है। भारतीय विविधता की भव्यता को प्रदर्शित करते हुए, इन पुनर्विकसित स्टेशनों को नई अत्याधुनिक यात्री सुख-सुविधाओं से लैस करते हुए वर्तमान सुविधाओं में बढ़ोत्तरी और बदलाव भी किया जाएगा। अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत नियोजित सुविधाओं में अवांछित संरचनाओं को हटाते हुए रेलवे स्टेशनों तक सुगम पहुंच, बेहतर प्रकाश व्यवस्था, परिचरण क्षेत्र में सुधार, उन्नत पार्किंग स्थान, दिव्यांगजन अनुकूल अवसंरचना, हरित ऊर्जा के उपयोग द्वारा पर्यावरण हितैषी निर्माण आदि शामिल हैं।

उन्होंने कहा कि स्टेशन डिजाइन के मानक विषय में प्रमुख रूप से स्टेशनों का सिटी सेंटरों के रूप में विकास, सुगठित आधुनिक यात्री सुख-सुविधाओं का प्रावधान आदि कई चीजे शामिल है। महाप्रबंधक ने कहा कि पूरे जोन में शुरू किए जा रहे अमृत भारत स्टेशन रेल उपयोगकर्ताओं को नया अनुभव प्रदान करेंगे.। आधुनिक वास्तुकला और विश्व स्तरीय सुविधाओं के साथ विकसित किए जा रहे है।

एबीएसएस फेज-1 के तहत शिलान्यास किए जाने वाले 50 स्टेशनों की सूची

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना में आदिलाबाद, मधिरा, भद्राचलम रोड, महबूबनगर, हफीजपेट, महबूबाबाद, हाईटेक सिटी मलकपेट, उप्पुगुडा, मलकाजगिरि, हैदराबाद, निजामाबाद, जनगांव रामगुडम, कामारेड्डी, तांडूर, करीमनगर, यादाद्रि , काजीपेट जंक्शन, जहीराबाद, खम्मम, आंध्र प्रदेश अनकापल्लि, ओंगोल, भीमवरम टाउन, पिडुगुराल्ला, दोनकोंडा, रेपल्ले, एलूरु, सिंगरायकोंडा, काकिनाडा टाउन जंक्शन, ताडेपल्लिगूडेम, कर्नूल सिटी, तेनाली, नरसापुर, तुनी, निडदवोलु जंक्शन, महाराष्ट्र के औरंगाबाद, परभणी जंक्शन, गंगाखेर परली वैजनाथ, हिंगोली दक्कन, परतूर, जालना, पूर्णा जंक्शन, किनवट, सेलु, मुदखेड जंक्शन, वाशिम, नागरसोल और कर्नाटक का बीदर स्टेशन शामिल है।

विशेष ट्रेनों को चलाने के सवाल पर जीएम ने दिया यूं जवाब

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। रेल निलयम के सभागार में आयोजित पत्रकार वार्ता के दौरान कई सवालों का दमरे के महाप्रबंधक अरूण कुमार जैन ने बेबाकी से जवाब दिया। अपने पूरे वरिष्ठ अधिकारियों के टीम के साथ पत्रकारों को अमृत भारत स्टेशन योजना की जानकारी दे रहे महाप्रबंधक की टीम में प्रमुख रूप से दक्षिण मध्य रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी सीएच राकेश ने मोर्चा संभाल रखा था। आने वाले त्योहार दीपावली, छठ पूजा, दुर्गा पूजा आदि पर यूपी, बिहार, उड़ीसा, राजस्थान के लिए अधिक संख्या में विशेष ट्रेन चलाने के सवाल पर जीएम ने कहा कि हर साल विशेष ट्रेनों का संचालन होता है। फिर यह पूछे जाने पर ट्रेनों में आखिकार अभी से कई ट्रेनों में स्लीपर में वेटिंग लिस्ट का आंकड़ा 150 से 200 के बीच क्यों पहुंच गया है। आए दिन कई ट्रेनों स्लीपर क्लास में क्षमता से तीन गुना यात्री जानवरों की तरह यात्रा कर रहे है औ सीट न होने पर अधिक वेटिंग टिकट बेचे जाने के सवाल पर श्री जैन ने कहा कि इस मामलों की मानटरिंग की जाती है और आने वाले दिनों में स्लीपर अत्याधिक यात्रियों के होने की जांच भी कराई जाएगी। यात्रियों की सुविधा के लिए दूसरे जोनों को भी विशेष ट्रेनों को चलाने के लिए प्रस्ताव दिया गया है। यह पूछे जाने पर अब यात्री बिल्डिंग नहीं 'मोर रेल और मोर रेल लाइन' चाहते है तो जीएम ने कहा कि नई ट्रेनों का संचालन हमारे अधिकार क्षेत्र में नहीं आता है। यह सब भारतीय रेलवे बोर्ड तय करता है। सफीलगुड़ा रेलवे क्रासिंग को खोले जाने पर महाप्रबंधक ने कहा कि क्रासिंग के पास रोड अंडर ब्रिज है। लोगों का आसानी से आवागमन हो रहा है।

स्वतंत्र वार्ता

Email :
svaarttha2006@gmail.com
svaarttha@rediffmail.com
svaarttha2006@yahoo.com
Epaper :
epaper.swatantravaartha.com
For Advertisement :
swadds1@gmail.com

मंदिर के तालाब में कूदने से महिला की मौत

मेदक, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। मेदक जिले के हवेलीपुर मंडल के कुचनपल्ली में एक मंदिर की पुष्करणी में कथित तौर पर कूदने वाली एक महिला की गुरुवार देर रात मौत हो गई। उसे बचाने का प्रयास करने वाले उसके पति का अस्पताल में इलाज चल रहा है। स्थानीय लोगों ने दोनों को तालाब से बाहर निकाला। महिला मक्कला लावण्या (25) और उसका पति यादगिरी (30) मेडक जिले के रहने वाले थे। वे कुचेनपल्ली में एक रिश्तेदार के घर एक समारोह में शामिल होने आए थे। पुलिस के मुताबिक, लावण्या की एक विधवा छोटी बहन स्वप्ना थी जिसके साथ यदागिरी का कथित तौर पर अफेयर चल रहा था। एक शराब पार्टी के दौरान, यदागिरी ने अपनी पत्नी की उपस्थिति से अनजान अपने दोस्तों को यह बात बताई। लावण्या भागकर मंदिर के तालाब में गई और उसमें कूद गई, जिसके बाद यदागिरि ने भी उसे पुनर्जीवित करने के लिए छलांग लगा दी। मामला दर्ज किया गया।

बेटे ने माँ की चाकू मारकर हत्या कर दी

मेदक, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। हवेली घनपुर मंडल के थोगिटा गांव में गुरुवार देर रात एक महिला की कथित तौर पर उसके बेटे ने चाकू मारकर हत्या कर दी। पुलिस के मुताबिक, कुष्ठी नरसम्मा (45) और उनके बेटे भानु प्रकाश के बीच किसी पारिवारिक मुद्दे पर बहस हो गई। गुस्से में आकर उसने अपनी मां को चाकू मार दिया, जिसके बाद वह घर से बाहर गया और चिल्लाने लगा कि उसने अपनी मां को मार डाला है। उसकी मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने भानुप्रकाश को हिरासत में ले लिया है।

आंध्र प्रदेश में सहकारी बैंकिंग विकास की कहानी चार साल पहले शुरू हुई : सीएम जगन

विजयवाड़ा, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री वाई एस जगन मोहन रेड्डी ने शुक्रवार को कहा कि राज्य में सहकारी बैंकिंग प्रणाली की विकास यात्रा चार साल पहले शुरू हुई थी। उन्होंने यहां एपी सहकारी बैंक (एपीसीओबी) के हीरक जयंती समारोह में कहा कि यह नाबार्ड कंसल्टेंसी सर्विसेज (एनएबीसीओएनएस) की सिफारिशों के कार्यान्वयन से प्रेरित है।

रेड्डी ने बैंक के अधिकारियों और अन्य लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि एपीसीओबी, जिसने अपने 60 साल के इतिहास में कई उतार-चढ़ाव देखे हैं, आज किसानों को उनकी आर्थिक समृद्धि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में योगदान देने के लिए मार्गदर्शन कर रहा है।

सीएम के अनुसार, राज्य सरकार ने सहकारी बैंकिंग क्षेत्र के प्रशासन को मजबूत करने के लिए नियमों में संशोधन किया था और एनएबीसीओएनएस की सिफारिशों के बाद एपीसीओबी और जिला सहकारी केंद्रीय बैंकों (डीसीसीबी) को चलाने के लिए पेशेवरों को नियुक्त किया था। इसके अलावा, उन्होंने कहा कि डीसीसीबी में शेयर पूंजी के रूप में 295 करोड़ रुपये डाले गए हैं। एपीसीओबी के नए लोगो और ब्रांड पहचान दिशानिर्देश (बीआईजी) का अनावरण करने के अलावा, रेड्डी को 56 करोड़ रुपये का लाभांश चेक भी मिला। चेक मिलने पर खुशी जताते हुए सीएम ने कहा कि पहली बार एपीसीओबी ने सरकार को लाभांश दिया है। उन्होंने आगे देखा कि एलुरु को छोड़कर सभी डीसीसीबी लाभ में चल रहे हैं।

नई फसल बीमा योजना पर काम कर रहा है तेलंगाना : कृषि मंत्री

हैदराबाद, 4 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। यह कहते हुए कि मोदी सरकार द्वारा शुरू की गई प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) किसानों के बचाव में बुरी तरह विफल रही है, कृषि मंत्री सिंगिरेड्डी निरंजन रेड्डी ने कहा कि राज्य सरकार किसानों के लिए एक व्यापक फसल बीमा योजना शुरू करने पर काम कर रही है।शुक्रवार को राज्य विधान परिषद में प्रश्नकाल के दौरान कांग्रेस सदस्य टी. जीवन रेड्डी द्वारा उठाए गए एक सवाल का जवाब देते हुए, मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार एक फसल बीमा योजना पर काम कर रही है जो प्राकृतिक आपदाओं के दौरान किसानों को राहत प्रदान कर सकती है। राज्य सरकार विभिन्न राज्यों द्वारा क्रियान्वित की जा रही फसल बीमा योजनाओं का अध्ययन कर रही है।

CNR : MHLC01-001032-2023 **जाहिर नोटीस**

जावक क्र. ७९८/२०२३
कामगार न्यायालय, मुंबई
नवीन प्रशासकीय इमारत, तळ मजला, शासकीय वसाहत, वांदे (पूर्व), मुंबई- ४०००५१.
दिनांक : २३/०७/२०२३

कर्मचारी भरपाई आयुक्त, मुंबई और १० वे कामगार न्यायालय, मुंबई
श्रीम. जे. आर. राठत, इनके सामने,
अर्ज (नुकसान भरपाई अर्ज) क्र. २५२/ए - २९/२०२३

1. Mr. Boni Ramana,
2. Mrs. Boni Laxmi
(Both are same address)
Residing at H.No.5-6
Nagavamsam Veedhi,
Bheemunipatnam,
Tatituru, Tatituru, Visakhapatnam,
Andhra Pradesh - 531162. ..... Applicants

V/S

HCC HDC JV
Mumbai costal road project Pakage II,
Sea Face, Opp Worli Dairy,
Khan Abdul Gaffar Khan Road,
Worli Mumbai - 400083 ..... Opponents

सूचना

इस सूचना के द्वारा अवगत किया जाता है की, उपर दिये गये आवेदकने Late Mr. Boni Santosh Kumar का काम करते समय दिनांक ०३/१२/२०२२ को अपघात होने से निधन हो गया और उनके निधन के पश्चात यह सब आवेदक इनके कानूनी वारिस है और इस न्यायालय मे अर्जी दाखील किये है । इस कंपनीने रक्कम धनादेश के द्वारा कर्मचारी भरपाई आयुक्त, मुंबई मे जमा किया गया है । नुकसान भरपाई रक्कम रु. १६, ४९, ६२५/- (Sixteen lakhs Fourty nine thousand six hundred twenty five Rupees Only) इतनी रक्कम उपरोक्त आवेदक ने कर्मचारी भरपाई आयुक्त कार्यालय, मुंबई मे जमा कि गयी उनको वितरण करने के लिये अर्जी दाखिल कि है । अत: इस सुचना तहत अवगत किया जाता है की इस न्यायालय, मे जमा कि गयी नुकसान भरपाई रक्कम आवेदकने को प्रदान करने पर अगर किसी भी व्यक्ति अथवा व्यक्तियो की आपत्ती है या उसे विरोध है तो उस प्रकार कि सुचना प्रकाशित होने के ३० दिन के भितर न्यायालय मे दाखील करें । ३० दिन की अवधी समाप्त होने के पश्चात प्राप्त विरोध या सुचना पर विचार नही किया जाऐगा । इससे संबंधित लोक स्थान दिनांक : २६/०७/२०२३ तहत हस्ताक्षर शिक्का सहीत हस्ताक्षर कि गयी है ।

आदेशावरुन,
जे.एस.प्रवल्कर
26/07/2023
सचिव
सचिवकामगार न्यायालय, मुंबई

सुबवाई कि तारीख : ०३/०८/२०२३.

jyc26/07/2023

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.